॥ ओ३म् ॥

वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी

नैतिक शिक्षा

लेखक एवं संग्रहकर्ता

आदित्य प्रकाश गुप्त

खेड़ा अफ़गान, सहारनपुर

प्रकाशक

आर्य समाज, खेड़ा अफ़गान, जनपद सहारनपुर

।। ओ३म् ।।

दो शब्द

असतो मा सद् गमय-तमसो मा ज्योतिर्गमय-मृत्योर्मा अमृतं गमय ।।

वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी के छठी बार प्रकाशन पर हमें अपार हर्ष हो रहा है क्योंकि इस पुस्तक का विद्यार्थियों, अन्य संस्थानों एवं आर्य पुरुषों ने प्रशंसा की है। सामान्य जन को इससे जो ज्ञान प्राप्त होता है वह बड़े-बड़े ग्रन्थों के स्वाध्याय से प्राप्त होता है। समस्त जिज्ञासुओं से नम्र निवेदन है कि इस पुस्तक को स्वयं एक बार अवश्य पढ़ें और सभी आर्यजनों को पढ़ने की प्रेरणा करें।

बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ने से विद्यार्थी कतराते हैं। अत: इस पुस्तक को पढ़ने से अपूर्व लाभ मिलेगा। युवकों में जागृति लाने के लिए प्रतिवर्ष विद्यार्थियों की परीक्षा इसलिए लेते हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन में आचार्य सत्यजित् जी अजमेर एवं डॉ. धीरज सिंह जी, नानौता का सहयोग रहा। इस पुस्तक में पराविद्या लेखक आचार्य ज्ञानेश्वर जी आदि से सहयोग लिया गया है। हम सभी सहयोगियों के आभारी हैं। ईश्वर हम सबको सद्बुद्धि प्रदान करे कि हम सब निरन्तर धर्मपथ पर बढ़ते जाएँ।

- राजेश कुमार आर्य

सृष्टि संवत् 1960853113
अब तक प्रकाशन : 16000
विक्रम संवत 2069
2012 ईस्वी सन्
मूल्य : 30/- रुपये

: प्रकाशक :

आर्य समाज, खेड़ा अफ़गान (सहारनपुर)

प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
आदित्य प्रकाश	अमित कुमार आर्य	यशपाल गुप्ता
मो. : 9627187540, फोन : 01331-225330	मो. : 9758125777	9528196749

भारत भूषण

Bharat Bhushan

President
World Yoga Origanisation
Founder Director

पद्म श्री

सम्मान

मात्र भौतिक सुख भोग में आनंद की तलाश में परेशान हाल इंसान ने ईश्वर धर्म और अध्यात्म को भी लौकिक सुख पाने का साधन ही समझ लिया है। ईश्वर, धर्म और संस्कृति के सवरूप के बारे में फैल रही भ्रांतियों की छाया मानव मात्र के कल्याण के लिये सदैव बॉह फैलाये वैदिक धर्म के व्यापक स्वरूप के बारे में पूरी जानकारी के अभाव में ऐसा न होना स्वाभाविक भी है। आपाधापी के युग में वैदिक पुत्रों के पास इतना समय और भाषा ज्ञान भी नहीं कि वह वेदों का अध्ययन मनन कर सकें। प्रयास करें भी तो इस अगाध ज्ञानसागर में वह ऐसे भटक कर रह जाता है जैसे बड़े शहर में पहुँच कर रास्ता खोजना दूभर हो जाता है और वह सोचता है कि काश कोई ऐसा मिल जाये जो रास्ता बता भर दे। मैं अनुभव करता हूँ कि वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी भटकाव से बचाने के लिये ऐसा ही मार्गदर्शक है। सफर में, पन्ने पलटना अध्यात्मिक टार्च साबित हो सकता है। अपने धर्म व स्वरूप के बारे में उठने वाले प्रश्नों व जिज्ञासुओं पर सरल समाधान तत्काल पाकर हम व हमारी नई पीढ़ियाँ स्वयं के भारतीय व वैदिक होने पर गर्व कर सकती हैं। समयाभाव में भी ईश्वर व धर्म विषयक प्रश्नों की यह एक आसान कुँजी है। जिससें प्रश्नों के तत्कालिक समाधान के अलावा पाठ्क को निज धर्म व मूल स्वरूप के बारे में और अधिक जानने का उत्साह होगा तथा धर्मपथ पर बढ़ने का रास्ता मिलेगा। श्री आदित्य प्रकाश गुप्त के द्वारा इस पुस्तक का प्रकाशन समाज, धर्म व ईश्वर की बड़ी सेवा है और सिंह पुत्रों को अपने स्वरूप को पहचानने व अपनी महान परम्परा पर गर्व करने का एक अनोखा अवसर भी। उनके धर्म प्रेम व पीढ़ियों की भटकाव से रक्षा करने के लिये किये गये इस सत्साहसिक प्रयास को मेरे प्रणाम और उनके स्वस्थ दीर्घायुष्य की मंगलकामना।

20–6–2011

भारत भूषण

MOKSHYAYATAN INTERNATIONAL YOGASHRAM

INSTITUTE FOR YOGA & BODY BUILDING RESEARCH AND TRAINING

Mail : 3/1966, Beri Bagh, Saharanpur-247 001 india
Headquarters : Yogpath, Gughal Area, Ambala Road, Saharanpur-247 001 INDIA
Tel. : 0132-2663030, 2663939, 3291269 Fax : 91-132-2612310 Call. : 94125 57900
E-Mail : yogamok@sancharnet.in

प्रकाशन सूची 2011 तक (लगभग पचास हजार)

आर्य समाज, खेड़ा अफ़गान, सहारनपुर

महर्षि दयानन्द जीवन दर्पण	आदित्य प्रकाश गुप्त	2000
ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप	पं. रामचन्द्र देहलवी	4000
देशरक्षा के लिए गौरक्षा	पं. यशपाल जी आर्य	2000
आर्योद्देश्य रत्नमाला-स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	महर्षि दयानन्द सरस्वती	1000
ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना का यथार्थ स्वरूप	स्वामी अमृतानन्द जी	2000
वैदिक यज्ञ पद्धति		2000
वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी	आदित्य प्रकाश गुप्त	16000
आर्याभिविनय	महर्षि दयानन्द सरस्वती	2000
ईश्वर का अस्तित्व	देवी दास आर्य	2000
निराले दयानन्द	आचार्य सत्यव्रत जी राजेश	2000
वैदिक नाम स्मरण विधि	स्वामी अमृतानन्द जी	2000
महर्षि दयानन्द का हरिद्वार, सहारनपुर प्रवास	डॉ. भवानी लाल जी भारतीय आदित्य प्रकाश गुप्त	2000
वैदिक संस्कृति में स्त्री का महत्व	आदित्य प्रकाश गुप्त	2000
स्वर्ग प्राप्ति का साधन गृहस्थ आश्रम	चेतराम आर्य	2000
नित्य कर्म-विधि		2000

वेद भूषण गुप्त (प्रस्तुतकर्ता)

: कर्तव्य पालन :

यदि आपके मन में वैदिक संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार एवं भारत को पुनः विश्व में गौरवमयी स्थान दिलाकर जगद्गुरु बनाना चाहते हैं तो अपनी पवित्र कमाई से इस कार्य में सहयोग करें। आपको पुण्य मिलेगा, जीवन में आनन्द, सुख-सन्तोष प्राप्त होगा। आर्य समाज खेड़ा अफ़गान (सहारनपुर) सहयोगियों का हृदय से कृतज्ञ है। आर्य समाज भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग की आशा रखता है।

धन्यवाद सहित।

केवलाधो भवति केवलादी (अर्थववेद 10/11/6)

जो व्यक्ति अकेला खाता है, वह पाप खाता है।

।। ओ३म् ।।

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) का

संक्षिप्त इतिहास

आर्य समाज खेड़ा अफगान जनपद सहारनपुर की स्थापना ३ सितम्बर सन् १८९७ ई. को लाला गणेशी लाल गुप्त जी ने कराई। साप्ताहिक सत्संग उनकी बैठक में होते रहे। इसके भवन के निर्माण के लिए जिस भी भूमि को क्रय करने का प्रयास किया गया, गांव के प्रभावशाली पठान लोग उसमें रुकावटें डालते रहे। अंत में लाला गणेशीलाल जी ने अपनी पुश्तैनी जमीन को २१–४–१९०९ को आर्य समाज को उपहार में दे दी। भवन बनाना आरम्भ किया। कुछ फितरती पठानों को यह भी अनुचित लगा। ५–४–१९१० को रात्रि में फितरती पठानों ने भवन गिराकर लकड़ी के सामान में आग लगा दी। इस अनुचित कार्यवाही पर उप-जिलाधिकारी महोदय को प्रार्थना पत्र दिया, मामला दीवानी होने के कारण दीवानी दावा किया गया। जिसमें बनवारी लाल शर्मा, सुखदेव राम, मंगतराम, नवल सिंह, महाशय गेंदाराम, बखतावर सिंह, फकीर चंद, अल्लादिया मिस्त्री, हरद्वारी बढ़ई ने गवाही दी।

अल्लादिया (शायद यह देवबन्द का निवासी था) ने कहा यह मकान लाला गणेशीलाल जी ने बनवाया था और इसकी नींव को मैंने ही भरा था। बड़े संकटों से मुकदमा चलने के बाद १९–२–१९१२ को निर्णय आर्यों के पक्ष में हुआ। प्रतिवादी पर बाबू प्यारे लाल के कोर्ट से २००/- रुपये हर्जाना हुआ। आर्य समाज, मिस्त्री अल्लादिया को धन्यवाद देता है। मत भिन्नता के बावजूद भी वह गवाही पर डटा रहा।

इसके पश्चात् भवन बनाने का कार्य आरम्भ किया तो ४–९–१९१४ को ताला तोड़कर जबरन कब्जा कर लिया और वहाँ पर अजान-नमाज होने लगी। दोबारा अदालत की शरण लेनी पड़ी। अन्त में मुंसिफी से १७–६–१९१६ को दावा डिग्री हुआ। प्रतिवादी गणों द्वारा किया गया अपील खारिज हुआ। निर्माण कार्य दोबारा आरम्भ किया, उन्हीं प्रतिवादीगणों में से एक ने असत्य दावा किया कि आर्य समाज मन्दिर की पश्चिम की दीवार एक फीट मेरे मकान के ओर बना ली, स्टे आर्डर ले आये, निर्माण कार्य रोक दिया गया। २९–६–१८ को केस खारिज हुआ।

उस समय लाला गणेशी लाल जी को अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। कपड़े के उधार के कितने ही रुपये पठानों ने मरवा दिये। कितने ही मुकदमों में लम्बे समय तक उलझाया गया परन्तु लालाजी ने सभी संकटों का सामना लोह पुरुष की भांति किया।

खेड़ा अफ़गान के आसपास के ग्रामों में लगातार वेद प्रचार होता रहा। इस गांव के एक भजनोपदेशक महाशय गेंदाराम जी और निकट ग्राम पिलखनी के भजनोपदेशक महाशय रामशरण जी हुए। **महाशय रामशरण जी** मैजिक लालटेन से वेद प्रचार करते रहे। इनका क्षेत्र देहरादून और मंसूरी रहा। महाशय **रामशरण** जी के सुपुत्र धर्मेन्द्र जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के मंत्री पद एवं **श्री** सत्य **प्रकाश** गुप्त रुड़की आर्य समाज, वी.टी. गंज के प्रधान आदि पदों पर रहे, इसी ग्राम के मूल निवासी हैं

सन् १९६० के दशक में आर्य समाज के भवन छत गिर गई। दीवारें भी खराब खस्ता हो गई। अतः सन् १९८० ई. में पूरे भवन को नये सिरे से बनवाया गया। सन् १९८३ ई. में महर्षि निर्वाण शताब्दी का उत्सव जिला स्तर पर यहाँ मनाया गया। जिसमें लाला रामगोपाल जी शाल वाले, पं. शिवकुमार शास्त्री, पन्नालाल पीयूष, पं. जयप्रकाश जी (पूर्व इमाम बेतिया चम्पारन, बिहार), प्रो. उत्तम चन्द शरर, रोशनलाल जी विधायक हरियाणा आदि अनेक विद्वान् नेता यहां पधारे थे। सन् १९९७ में आर्य समाज खेड़ा अफ़गान ने अपनी शताब्दी बड़े हर्ष और उल्लास से मनाई। इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया गया। जिसमें दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री साहब सिंह वर्मा, वीरेन्द्र जी वर्मा (पूर्व राज्यपाल पंजाब), ओम प्रकाश वर्मा यमुनानगर, पं. देवदत्त बाली, डॉ. ओमप्रकाश वर्मा – सहारनपुर आदि विद्वान् बड़ी संख्या में पधारे थे। कार्यक्रम अभूतपूर्व हुआ। हजारों की संख्या में भीड़ थी। कार्यक्रम से पूर्व ७०–८० ग्रामों में घूम-घूम कर प्रचार किया गया था। कई वर्षों से स्वामी अमृतानंद जी महाराज आदि विद्वानों के सानिध्य में महर्षि पातंजलि क्रियात्मक योग शिविर का आयोजन किया जाता है। वार्षिक उत्सव एवं वेद प्रचार श्रद्धा एवं उत्साह से किये जाते हैं। पांच वर्षों से लगातार वैदिक ज्ञानवर्धिनि प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है जिसमें लगभग २०–२५ स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा भाग लिया जाता है। जिसमें श्री धर्मसिंह जी (बेसिक शिक्षा मंत्री उ.प्र. सरकार), श्री महीपाल सिंह माजरा (विधायक), बाबू हुकम सिंह (पूर्व कृषि मंत्री उ.प्र.), जयनारायण अरुण जी (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.) आदि राजनेता तथा विद्वान, संन्यासी, महात्माओं द्वारा विजय प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य तथा नकद इनाम व स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया जाता है।

साहित्य का प्रकाशन लगातार किया जा रहा है। कलेण्डर प्रति वर्ष छपता है।

हे सर्वाधार, सर्वान्तार्यामिन् परमेश्वर ! तुम अनन्त काल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे तुम बिना माँगे ही स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत पिता परमेश्वर ! हम में सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो, हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बने, अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो ! हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा आँचल पकड़ते हैं।

हे परम् पावन प्रभो ! हम में सात्विक प्रवृत्तियाँ जागरित हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकारशून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों, हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

हे प्रभो ! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो। इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

मेरा हो मन स्वदेशी !

मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी।
मर जाऊँ तो भी मेरा, होवे कफन स्वदेशी।।

चट्टान टूट जाये तुफाँ घूमड़ के आये।
गर मौत भी पुकारे, तो भी लक्ष्य हो स्वदेशी।।
मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी......

जो गाँव में बना हो, और गाँव में खपा हो।
जो गाँव को बसाये, वह काम है स्वदेशी।।
मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी......

जो हाथ से बना हो, या गरीब से लिया हो।
जिसमें स्नेह भरा हो, वह चीज़ है स्वदेशी।।
मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी......

मानव का धर्म क्या है, मानव का दर्द जाने।
जो करे मनुष्यता की, रक्षा वही स्वदेशी।।
मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी......

करें शक्ति का विभाजन, मिटे पूँजी का ये शासन।
बने गाँव स्वावलम्बी, वह नीति है स्वदेशी।।
मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी......

तन में बसन स्वदेशी, मन में लगन स्वदेशी।
फिर हो भवन-भवन में, विस्तार हो स्वदेशी।।
मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी.......

सब हों स्वजन स्वदेशी, होवे चलन स्वदेशी।
मरते समय कफन भी, दरकार हो स्वदेशी।।
मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी.......

हे महाराजधिराज परब्रह्मन परमेश्वर! अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तम गुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्ट करे अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।

।। ओ३म् ।।

आर्य समाज के नियम एवं उद्देश्य

- सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
- ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
- वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
- सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
- सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहियें।
- संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
- सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य बर्तना चाहिए।
- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालन करने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

साकार कहते हैं।

प्रश्न ६ ईश्वर को साकार मानने में क्या हानि है ?

उत्तर साकार पदार्थ नष्ट होने वाला होता है इसलिये ईश्वर नाशवान हो जायेगा। साकार पदार्थ एकदेशी होते हैं तब ईश्वर एकदेशी हो जायेगा। निराकार होने से ही ईश्वर सर्वव्यापक और अविनाशी है। यदि साकार हो तो बनाने वाला कोई दूसरा होगा।

प्रश्न १० ईश्वर को प्राप्त करने के क्या लाभ हैं?

उत्तर जैसे शीत से आतुर पुरुष अग्नि के पास पहुँचने से शीत से निवृत्त हो जाता है, वैसे ही परमेश्वर के समीप अर्थात् प्राप्त होने से सब दोष, दु:ख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं और आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा।

प्रश्न ११ ईश्वर और जीव का क्या सम्बन्ध है?

उत्तर व्याप्य और व्यापक का सम्बन्ध है। सेव्य-सेवक, स्वामी-भृत्य, राजा-प्रजा, पिता-पुत्र, उपास्य-उपासक आदि अनेक प्रकार का सम्बन्ध है।

प्रश्न १२ ईश्वर का स्वरूप क्या है ?

उत्तर ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि का कर्ता है।

प्रश्न १३ ओं, खं, ब्रह्म के क्या अर्थ हैं?

उत्तर रक्षा करने से ओं, आकाशवत व्यापक होने से खं और सबसे बड़ा होने से ब्रह्म ईश्वर का नाम है।

प्रश्न १४ ईश्वर का नाम अग्नि क्यों है ?

उत्तर सर्वप्रकाशित होने से ईश्वर का नाम अग्नि है क्योंकि संसार के सब पदार्थों में उसी का दिया हुआ प्रकाश है।

प्रश्न १५ ईश्वर का नाम मनु क्यों है?

उत्तर विज्ञान-स्वरूप होने से ईश्वर का नाम मनु है।

प्रश्न १६ ईश्वर का नाम इन्द्र क्यों है?

उत्तर सबकी रक्षा व पालन करने और परम ऐश्वर्यवान् होने से उस ईश्वर का नाम इन्द्र है।

प्रश्न १७ उस ईश्वर का नाम ब्रह्मा क्यों है?

उत्तर वह सम्पूर्ण जगत् को रच के बढ़ाता है इसलिए परमेश्वर का नाम ब्रह्मा है।

प्रश्न १८ उस ईश्वर का नाम विष्णु क्यों है?

उत्तर सर्वत्र व्यापक होने से उस ईश्वर का नाम विष्णु है।

प्रश्न १९ उस ईश्वर का नाम रुद्र क्यों है?

उत्तर ईश्वर दुष्टों को दण्ड देकर रुलाता है इसलिए ईश्वर का नाम रुद्र है।

प्रश्न २० ईश्वर का नाम शिव क्यों है?

उत्तर ईश्वर सबका कल्याण करता है इसलिए उस ईश्वर का नाम शिव है।

प्रश्न २१ ईश्वर का नाम बृहस्पति क्यों है?

उत्तर वह बड़ों से भी बड़ा और ब्रह्माण्ड का स्वामी है इसलिये उस ईश्वर का नाम बृहस्पति है।

प्रश्न २२ परमात्मा का नाम ईश्वर क्यों है?

उत्तर उसका सम्पूर्ण चराचर जगत् पर शासन है और अनन्त ऐश्वर्य है इससे उस परमात्मा का नाम ईश्वर है।

प्रश्न २३ उस ईश्वर का नाम परमात्मा क्यों है?

उत्तर वह सब जीवों से श्रेष्ठ आत्मा है। उसके गुण धर्म परम (सर्वश्रेष्ठ) हैं, इससे उसका नाम परमात्मा है।

प्रश्न २४ उस ईश्वर का नाम नारायण क्यों है?

उत्तर सब जीवों में व्यापक होने से उस ईश्वर का नाम नारायण है।

प्रश्न २५ उस ईश्वर का नाम गणेश क्यों है?

उत्तर वह प्रकृति आदि जड़ पदार्थों और सब जीवों का स्वामी, पालन करने

हारा है, इससे ईश्वर का नाम गणेश है।

प्रश्न २६ उस ईश्वर को सर्वशक्तिमान् क्यों कहते हैं?

उत्तर उसे अपने कार्य के करने में किसी दूसरे की सहायता लेने की आवश्यकता नहीं है वह अपने ही सामर्थ्य से अपने सब कार्य पूर्ण करता है इसलिए ईश्वर को सर्वशक्तिमान् कहते हैं।

प्रश्न २७ उस ईश्वर को दयालु क्यों कहते हैं?

उत्तर सब जनों की रक्षा करने और दुष्टों को यथायोग्य दण्ड देने से उसे दयालु कहते हैं।

प्रश्न २८ उस ईश्वर का नाम धर्मराज क्यों है?

उत्तर जो धर्म में ही प्रकाशमान है और अधर्म से रहित धर्म ही का प्रकाश करता है इससे उस ईश्वर को धर्मराज कहते हैं।

प्रश्न २९ उस ईश्वर का नाम यम क्यों है?

उत्तर जो सब प्राणियों के कर्मफल देने की व्यवस्था करता, सब अन्यायों से पृथक् रहता इसलिये उस ईश्वर का नाम यम है।

प्रश्न ३० उस ईश्वर का नाम भगवान् क्यों है?

उत्तर वह समग्र ऐश्वर्ययुक्त, भजने के योग्य है। इसी से उस ईश्वर का नाम भगवान् है।

प्रश्न ३१ उस ईश्वर का नाम विश्वम्भर क्यों है?

उत्तर जो सम्पूर्ण जगत् का भरण-पोषण करता है। इसी से उस ईश्वर का नाम विश्वम्भर है।

प्रश्न ३२ उस ईश्वर का नाम शंकर क्यों है?

उत्तर वह कल्याण अर्थात् सुख का करने हारा है इसी से उस ईश्वर का नाम शंकर है।

प्रश्न ३३ ईश्वर किसे कहते हैं?

उत्तर एक ऐसी वस्तु जो सब जगह विद्यमान् है, चेतन है, निराकार है और अनन्तज्ञान, अनन्तबल, अनन्तआनन्द, न्याय, दया आदि गुण से युक्त है

उसका नाम ईश्वर है।

प्रश्न ३४ ईश्वर और आत्मा में क्या भेद है?

उत्तर ईश्वर सर्वज्ञ है, आत्मा अल्पज्ञ है। ईश्वर के पास अपना उत्कृष्ट सुख है आत्मा के पास सुख नहीं है। वह आत्मा सुख लेने के लिए ईश्वर के पास या संसार के पदार्थों में जाता है।

प्रश्न ३५ ईश्वर के मुख्य कार्य कौन-कौन से हैं?

उत्तर ईश्वर के मुख्य रूप से ५ कार्य हैं - (१) सृष्टि की रचना करना, (२) पालन करना, (३) संहार करना (४) जीवों के कर्मों का फल देना (५) और वेदों का ज्ञान देना।

प्रश्न ३६ प्रलय में ईश्वर क्या करता है?

उत्तर प्रलय समय में ईश्वर मुक्तात्माओं को आनन्द भुगाता है।

प्रश्न ३७ ईश्वर का ज्ञान सदा एक सा रहता है या घटता बढ़ता है?

उत्तर ईश्वर का ज्ञान सदा एकरस रहता है अर्थात् घटता-बढ़ता नहीं है तथा वह असत्य भी नहीं होता।

प्रश्न ३८ संसार को किसने धारण किया हुआ है?

उत्तर ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से सब लोक-लोकान्तरों को (संसार को) धारण कर रखा है।

प्रश्न ३९ जन्म एक है अथवा अनेक ?

उत्तर जन्म अनेक हैं।

प्रश्न ४० यदि अनेक हैं तो पूर्व जन्म और मृत्यु की बातें स्मरण क्यों नहीं रहती ?

उत्तर जीव अल्पज्ञ है त्रिकालदर्शी नहीं, इसलिए स्मरण नहीं रहता भला पूर्व जन्म की तो क्या। जब गर्भ में था, पांच वर्ष का था तबकि कुछ भी बातें याद नहीं रहती कोई तुमसे पूछे कि एक वर्ष पूर्व सायंकाल कहां थे, क्या खाया था, तो कुछ भी उत्तर नहीं दे सकोगे।

प्रश्न ४१ मृत्यु होने पर जीव कहां जाता है?

उत्तर जब जीव शरीर छोड़ता है तब वायु में रहता है क्योंकि 'यमेन वायुना' वेद

में लिखा है यम नाम वायु का है। उसके पश्चात् जीव को कर्मानुसार ईश्वर जन्म देता है, वह वायु, अन्न, जल अथवा शरीर के छिद्रों द्वारा दूसरे के शरीर में ईश्वर की प्रेरणा से प्रविष्ट होता है। क्रमश: वीर्य में जा गर्भ स्थिति हो शरीर धारण कर बाहर आता है।

प्रश्न ४२ जीव विभु (व्यापक) या परिच्छिन्न (एक देशी) ?

उत्तर जीव शरीर में परिच्छिन्न है। वह अणु रूप है, एक समय में एक स्थान पर रहने वाला है। ईश्वर उससे भी अति सूक्ष्म है अत: ईश्वर जीव में व्याप्त रहता है।

प्रश्न ४३ ईश्वर के सुख व सांसारिक पदार्थों के सुख में कोई अन्तर है या नहीं?

उत्तर ईश्वर के सुख व सांसारिक पदार्थों के सुख में अन्तर है। ईश्वर का आनन्द स्थायी व पूर्ण तृप्ति देने वाला है जबकि सांसारिक पदार्थों का सुख क्षणिक व दु:खमिश्रित है।

प्रश्न ४४ ईश्वर को जानने के पश्चात् योगी को क्या अनुभूति होती है?

उत्तर ईश्वर को जानने के पश्चात् योगी को यह अनुभूति होती है कि जो जानना था सो जान लिया, जो पाना था सो पा लिया, अब कुछ भी जानना या प्राप्त करना बाकी नहीं रहा।

प्रश्न ४५ मनुष्य जन्म पाकर करने योग्य सबसे महत्वपूर्ण कार्य कौन सा है?

उत्तर ईश्वर को समझना व उसकी अनुभूति करना (प्रत्यक्ष करना) सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रश्न ४६ क्या ईश्वर जीवों में या सांसारिक पदार्थों में राग रखता है?

उत्तर नहीं, राग अपने से भिन्न उत्तम पदार्थ में होता है। ईश्वर से कोई भी जीव या सांसारिक पदार्थ उत्तम नहीं है। अत: ईश्वर किसी से भी राग नहीं रखता है।

प्रश्न ४७ क्या संसार में कभी ईश्वर का अभाव होता है?

उत्तर नहीं, संसार (कार्य जगत = निमित्त प्रकृति) का तो प्रलय में अभाव हो जाता है परन्तु उस समय भी ईश्वर व जीव (कारण जगत = मूल प्रकृति) रहते हैं उनका तीनों कालों में अस्तित्व रहता है।

प्रश्न ४८ मनुष्य संसार की हानि करते हैं तो क्या ऐसे में ईश्वर उन्हें देखकर दु:खी होता है?

उत्तर नहीं। परन्तु जो पापी हैं उन्हें अच्छा नहीं मानता। जो पुण्यात्मा हैं उन्हें अच्छा मानता है व उन्हें उत्साह, प्रेरणा भी देता है।

प्रश्न ४९ ईश्वर का दर्शन कौन करते हैं?

उत्तर वेद आदि शास्त्रों के विद्वान्, धर्मात्मा व योगी मनुष्य ही ईश्वर का साक्षात्कार कर सकते हैं।

प्रश्न ५० ईश्वर जीव को पाप करने की प्रेरणा देता है या नहीं?

उत्तर नहीं वह पवित्र है अत: न स्वयं पाप करता है न ही पाप करने की प्रेरणा देता है।

प्रश्न ५१ ईश्वर कोई वस्तु/द्रव्य/पदार्थ है?

उत्तर हां, ईश्वर एक द्रव्य है, पदार्थ है, वस्तु है क्योंकि उसमें अनेक गुण हैं और वह कर्म भी करता है। वैदिक सिद्धान्त में वस्तु उसको कहा जाता है जिसमें गुण व कर्म रहते हों।

प्रश्न ५२ ईश्वर कर्मों का फल तत्काल क्यों नहीं देता? बाद में देरी से देवे तो मनुष्यों के मन में कर्मफल के विषय में शंका/अनास्था/अश्रद्धा/अविश्वास उत्पन्न होते हैं?

उत्तर ईश्वर अपने नियमानुसार समय पर ही कर्मों का फल देता है, पूर्व नहीं, जैसे कि फल, फूल, अन्न आदि समय पर उत्पन्न होते हैं। कर्म इतने अधिक होते हैं कि सबका फल तत्काल दिया जाना संभव नहीं होता।

प्रश्न ५३ ईश्वर चेतन है तो ईंट, पत्थर, सोना, चांदी आदि जड़ पदार्थों में चेतनता के लक्षण चलना, फिरना, हिलना, डुलना, इच्छा, प्रयत्न आदि क्यों नहीं देखे जाते हैं?

उत्तर ईंट, पत्थर आदि जड़ पदार्थों में चेतन-ईश्वर रहता है किन्तु ईश्वर अपनी चेतनता को अपने अधिकार में रखता है इसलिए जड़ पदार्थों में प्राणियों जैसी चलना-फिरना आदि गति नहीं होती है।

परमात्मा आवश्यकता से पूर्व आविष्कार करता है

प्रश्न ५४ ईश्वर स्वयं न हिलता हुआ अन्यों (संसार के पदार्थों को) कैसे हिलाता है?

उत्तर ईश्वर में चुम्बक सी शक्ति है, इसी शक्ति से वह स्वयं न हिलता हुआ संसार के जड़ पदार्थों को हिला देता है।

प्रश्न ५५ ईश्वर सर्वज्ञ है, आनन्द स्वरूप है तथा सर्वव्यापक है इसलिए वह सभी जीवों के अन्दर भी है, तो फिर सब जीव ईश्वर के सम्पर्क के कारण सर्वज्ञता व आनन्द की अनुभूमि क्यों नहीं करते हैं?

उत्तर ईश्वर का ज्ञान व आनन्द उसके अपने अधिकार में है। वह जिस को योग्य / पात्र समझता है, उसे ही अपना ज्ञान व आनन्द प्रदान करता है। अयोग्य को नहीं प्रदान करता है।

प्रश्न ५६ ईश्वर सर्वव्यापक होने से शौचालय में विद्यमान मलमूत्र में भी उपस्थित है तो, फिर उसे दुर्गन्ध की अनुभूति भी होती होगी?

उत्तर ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, वह मल आदि दुर्गन्ध का ज्ञान करते हुए भी उससे दु:खी या विचलित नहीं होता है। किन्तु अपने बल से उसे रोक देता है। ईश्वर पूर्ण है। दुर्गन्ध का ज्ञान शरीर धारियों में ही दु:ख अप्रीति करता है।

प्रश्न ५७ क्या ईश्वर कर्मफल देने में अन्य जीवों की सहायता लेता है?

उत्तर नहीं, ईश्वर कर्म-फल देने में अन्य जीवों की सहायता नहीं लेता, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है।

प्रश्न ५८ क्या उपासना करने वाले व्यक्तियों को ईश्वर वास्तव में दिखाई देता है?

उत्तर दिखाई देता है अर्थात् उसको ईश्वर की अनुभूति होती है। जैसा ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, आनन्द स्वरूप, न्यायकारी, सर्वव्यापक आदि गुणों वाला है। वैसा ही उसे अनुभव में आता है। साथ ही ईश्वर के आनन्द की अनुभूति भी वह करता है। इसे ही दिखाई देना समझना चाहिए।

प्रश्न ५९ क्या ईश्वर अपने भक्तों उपासकों से बातचीत भी करता है? शंका समाधान करता है? निर्देश भी करता है? प्रेरणा देता है?

उत्तर हाँ, ईश्वर समाधि-अवस्था में अपने उपासकों से बातचीत भी करता है तथा उनकी शंकाओं का समाधान भी करता है।

प्रश्न ६० मनुष्य ईश्वर की ओर कब झुकता है?

उत्तर रोग, वियोग होने पर, सांसारिक भोगों से अतृप्ति होने पर, भयंकर संकट आने पर या धर्म का उपदेश सुनने पर मनुष्य ईश्वर की ओर आकर्षित होता है।

प्रश्न ६१ बालक के शरीर को माता-पिता बनाते हैं, ईश्वर नहीं क्या यह बात ठीक है?

उत्तर नहीं, यदि बालक का शरीर माता-पिता ने बनाया होता तो उन्हें शरीर की रचना का पूरा-पूरा ज्ञान होता, परन्तु ऐसा नहीं होता। वैज्ञानिक भी आज तक मनुष्य शरीर को पूरा-पूरा नहीं जान पाए।

प्रश्न ६२ ईश्वर को प्राप्त करने के रास्ते अलग-अलग हैं, किन्तु मंजिल सबकी एक है, क्या यह मान्यता ठीक है?

उत्तर जी नहीं, यह मान्यता ठीक नहीं है क्योंकि आज अनेक प्रकार की पूजा-पद्धति, कर्मकाण्ड, धार्मिक ग्रंथ प्रचलित हैं अर्थात् ईश्वर को प्राप्त करने के अलग-अलग रास्ते, अलग-अलग उपाय बताये जा रहे हैं तथा इनकी मंजिल भी अलग-अलग है। जैसे किसी की मंजिल सातवां आसमान, किसी की चौथा आसमान, तो किसी की परम धाम तो किसी की अक्षरधाम, तो किसी की गोलोक, बैकुण्ठ लोक या कैलाश है। तो सबकी मंजिल एक कहां हुई?

प्रश्न ६३ कंस आदि अधर्मियों के नाश के लिए क्या ईश्वर जन्म लेते हैं?

उत्तर ईश्वर को जन्म लेने की कोई आवश्यकता नहीं है, वह सब दुष्टों को दण्ड देने में समर्थ है। जो जन्म लेगा वह मरेगा अवश्य। जन्म लेने से ईश्वर, ईश्वर ही नहीं रहेगा। वेदों में ईश्वर को अकाय अर्थात् शरीर रहित कहा गया है। कंस आदि अधर्मियों को मारना ईश्वर के लिए कोई बड़ा कार्य नहीं है। उसके न्याय से कोई नहीं बच सकता, वह सबसे बड़ा न्यायाधीश

है। कंस आदि उसके सामने कीड़ी के समान भी नहीं हैं, सर्वव्यापक होने से ईश्वर सभी के शरीरों में विद्यमान भी है, वह जब चाहे उनका नाश कर सकता है।

प्रश्न ६४ परमेश्वर दयालु और न्यायकारी है। क्या ये परस्पर विरोधी गुण इकट्ठे रह सकते हैं?

उत्तर ये दोनों परस्पर विरोधी नहीं हैं। दोनों इकट्ठे रह सकते हैं। जैसे जिसने जितना पाप कर्म किया उसको उतना दण्ड देना चाहिये इसी का नाम न्याय है। अपराधी को दण्ड न दिया जाये तो दया कहां रही। एक अपराधी को छोड़ने से सहस्रों धर्मात्माओं को दुःख पहुंचता है, दण्ड देकर सुधार करना यही उसकी दया है। जो ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते, ईश्वर उन्हें भी सभी सांसारिक सुखों को देते हैं।

प्रश्न ६५ परमेश्वर क्या चाहता है?

उत्तर परमेश्वर सब की भलाई और सबके लिए सुख चाहता है, परन्तु स्वतन्त्रता के साथ, किसी जीव को बिना पाप किये दुःख नहीं देता।

प्रश्न ६६ परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में युवा स्त्री पुरुष ही क्यों उत्पन्न किये?

उत्तर यदि बच्चे उत्पन्न होते तो उनका पालन-पोषण कौन करता, वृद्ध उत्पन्न होते तो सन्तानोत्पत्ति के योग्य न होते। अतः सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर युवा पुरुष-स्त्री (सब प्राणी) उत्पन्न करता है।

प्रश्न ६७ सृष्टिकर्ता ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है? जैसे पृथ्वी, जल, बीज के संयोग से घास, वृक्ष, अन्न आदि बनते हैं, वैसे ही अन्य पदार्थ भी स्वयं ही बन जायेंगे?

उत्तर यदि ऐसा होता तो नियमित सूर्य का निकलना, चन्द्रमा का उदय होना, पृथ्वी आदि ग्रहों का घूमना, मौसम परिवर्तन आदि अनेकों कार्य जो ईश्वर करता है, ये कभी भी नियमित नहीं होते। परमपिता परमात्मा प्रतिक्षण न्याय व्यवस्था करता है। ईश्वर हर समय, हर स्थान पर, हर देश में कार्यरत हैं। समस्त गतिविधियां ईश्वर से ही आरम्भ होती हैं।

इसलिए सृष्टिकर्ता ईश्वर अवश्य है।

प्रश्न ६८ ईश्वर की कृति और मनुष्य की कृति में क्या अन्तर है?

उत्तर ईश्वर के किसी भी नियम में परिवर्तन, सुधार व विकास नहीं होता। सूर्य, चन्द्र, मनुष्य, भेड़, बकरी, कुत्ता आदि जैसे पहले थे वैसे ही आज भी हैं। ईश्वर पूर्ण है, दोष रहित है। मनुष्य की कृतियों में समयानुसार परिवर्तन, विकास होता रहता है।

प्रश्न ६९ किसी पुस्तक के ईश्वरीय होने का क्या प्रमाण है?

उत्तर (१) जो सृष्टि के आदि में बनी हों

(२) जिसमें विज्ञान विरुद्ध बातें न हों।

(३) जिसमें मनुष्यों का इतिहास न हो।

(४) जिसमें परस्पर विरोध न हो।

(५) जिसमें अन्धविश्वास, पाखण्ड व अज्ञानयुक्त बातें न हों।

(६) जिसमें मनुष्य की उन्नति के सब विषयों का वर्णन हो।

(७) जिस प्रकार के गुण कर्म स्वभाव वाला ईश्वर है, वैसे ही गुणों का वर्णन पुस्तक में किया गया हो।

(८) जिसमें सृष्टि के प्रत्यक्ष नियमों के विरुद्ध, सिद्धान्तों का वर्णन न हो।

(९) पक्षपात रहित होकर सब मनुष्यों के नियम, विधान का वर्णन हो।

(१०) किसी देश विशेष के मनुष्यों, जाति, मत, पन्थ के लिए न होकर सार्वजनिक, सार्वभौमिक हो।

प्रश्न ७० परमेश्वर निराकार है वह ध्यान में नहीं आ सकता इसलिए मूर्ति अवश्य होनी चाहिए। जो कुछ भी नहीं करे तो मूर्ति के सम्मुख हाथ जोड़कर परमेश्वर का ध्यान करते नाम लेते हैं, इसमें क्या हानि है।

उत्तर जब वह परमेश्वर निराकार व सर्वव्यापक है जब उसकी मूर्ति नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शन मात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति आदि अनेक पदार्थ, जिनमें परमेश्वर ने अद्‌भुत रचना की है। पृथ्वी, पहाड़ आदि

परमेश्वर रचित मूर्तियों से मनुष्य कृत मूर्तियां बनती हैं, उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण क्यों नहीं हो सकता।

प्रश्न ७१ परमेश्वर दयालु है ससीम कर्मों का फल अनन्त दे देगा।

उत्तर ऐसा करें तो परमेश्वर का न्याय नष्ट हो जाये और सत्कर्मों की उन्नति कोई न करेगा क्योंकि थोड़े से भी सत्कर्म का अनन्त फल परमेश्वर दे देगा और पश्चाताप और प्रार्थना से पाप चाहे जितने हों छूट जायेंगे ऐसी बातों से धर्म की हानि और पाप कर्मों की वृद्धि होती है।

प्रश्न ७२ क्या वेदों में नाचने का विधान है।

उत्तर वेदों में यह नहीं लिखा। सारे मोक्ष में जाओ। वेदों में सब निहित कर्मों का विधान है, विद्वान बनो, उद्योग धंधे चलाओ, क्षत्रिय बनो, देश भक्त बनो, गीत गाओ, डाँस भी करो, सारे धार्मिक कृत्यों को करो। यदि किसी की नाचने की इच्छा नहीं है तो थोपो नहीं। अपने देश में जो प्राचीन नृत्य होते थे जैसे - शास्त्रीय नृत्य, कुची-पुड़ी, कत्थक कला, भरत नाट्यम आदि। वे अच्छे हैं उनमें सभ्यता भी होती है, शरीर ढका रहता है, कपड़े भी ठीक पहिने होते हैं। इनमें बहुत सारी धार्मिक लोक कथाओं के माध्यम से ईश्वर भक्ति का मंचन होता है। वे पश्चिमी नृत्यों की तरह वासना जागृत नहीं करते।

जीव

प्रश्न ७३ जीवात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर एक ऐसी वस्तु जो अत्यन्त सूक्ष्म है, अत्यन्त छोटी है, एक जगह रहने वाली है, जिसमें ज्ञान अर्थात् अनुभूति का गुण है, जिसमें रूप, रंग, गंध, भार नहीं है, जिसका कभी नाश नहीं होता, जो सदा से है और सदा रहेगी। जो मनुष्य-पशु-पक्षी आदि का शरीर धारण करती है तथा कर्म करने में स्वतंत्र है उसे जीवात्मा कहते हैं।

प्रश्न ७४ जीव का क्या स्वरूप है?

उत्तर जीव अल्पज्ञ, चेतन, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख को अनुभव करने

वाला और ज्ञान आदि गुण वाला नित्य है।

प्रश्न ७५ जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र?

उत्तर जीव अपने कर्म करने में स्वतन्त्र और कर्मों की ईश्वर की न्याय व्यवस्था से फल भोगने में परतन्त्र है।

प्रश्न ७६ क्या जीवात्मा को परमात्मा बनाता है?

उत्तर जीवात्मा को परमात्मा नहीं बनाता। यह हमेशा से है।

प्रश्न ७७ नित्य पदार्थ कितने हैं?

उत्तर ईश्वर, जीव व प्रकृति तीन नित्य पदार्थ हैं।

प्रश्न ७८ जीव और ईश्वर में क्या-क्या समानता है?

उत्तर दोनों चेतन स्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है।

प्रश्न ७६ मनुष्य और पशु आदि के शरीर में जीव एक सा है या भिन्न-भिन्न जाति के हैं?

उत्तर जीव एक से हैं परन्तु पाप और पुण्य कर्मों के फल से भिन्न-भिन्न शरीर वाले हो जाते हैं?

प्रश्न ८० मनुष्य का जीव पशु आदि में और स्त्री का जीव पुरुष में, पुरुष का जीव स्त्री में आते हैं या नहीं?

उत्तर हाँ, आता-जाता है। जब पाप अधिक बढ़ जाते हैं पुण्य न्यून होता है तब मनुष्य का जीव पशु आदि नीच शरीर में जाता है। जब धर्म अधिक और अधर्म न्यून होता है या दोनों समान होते हैं, तब मनुष्य का शरीर मिलता है।

प्रश्न ८१ आत्मा के कर्म करने के साधन कितने हैं और कौन-कौन से हैं?

उत्तर आत्मा के कर्म करने के दो प्रकार के साधन हैं - (१) आंतरिक साधन (२) बाह्य साधन। (१) आंतरिक साधन - मन, बुद्धि आदि। (२) बाह्य साधन- हाथ, पैर, आँख, जीभ, नाक, कान, मुँह आदि।

प्रश्न ८२ जीवात्मा शरीर में कहां रहता है?

उत्तर जीवात्मा मुख्य रूप से शरीर में स्थान-विशेष हृदय के निकट गडढे जैसे स्थान के अन्दर रहता है।

ज्ञान का अर्थ जानना नहीं, वैसा हो जाना है।

प्रश्न ८३ निराकार व अणु स्वरूप वाला जीवात्मा इतने बड़े शरीरों को कैसे चलाता है?

उत्तर निराकार होते हुए भी जीवात्मा अपने प्रयत्न मन आदि अन्त:करण व इन्द्रियों की सहायता से शरीरों को चला देता है।

प्रश्न ८४ एक शरीर में एक ही जीवात्मा रहता है या अनेक भी रहते हैं?

उत्तर एक शरीर में कर्त्ता और भोक्ता एक ही जीवात्मा रहता है अनेक जीवात्माएं नहीं रहते हैं। हाँ, दूसरे शरीर से युक्त दूसरा जीवात्मा तो किसी शरीर में रह सकता है, जैसे माँ के गर्भ में उसका बच्चा।

प्रश्न ८५ किन लक्षणों के आधार पर यह कह सकते हैं कि किस व्यक्ति ने जीवात्मा का साक्षात्कार कर लिया है?

उत्तर मन-इन्द्रियों पर अधिकार करके, सत्यधर्म न्यायाचरण के माध्यम से शुभ कर्मों को ही करना और असत्य-अधर्म के कर्मों को न करना तथा सदा शान्त, सन्तुष्ट और प्रसन्न रहना। इस बात का ज्ञापक होता है कि इस व्यक्ति ने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है।

प्रश्न ८६ क्या योगाभ्यास से जीव 'ब्रह्म' हो सकता है?

उत्तर नहीं! योगीजनों का ब्रह्मज्ञान मुक्ति तक बढ़ता रहता है। जीव समाधिस्थ होकर परमेश्वर (ब्रह्म) में प्रेमबद्ध होकर निमग्न रहता है परमेश्वर (ब्रह्म) के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण कर्म स्वभाव करता है अर्थात् परमेश्वर का प्रत्यक्ष करता है अत: जीव ब्रह्म नहीं बन सकता।

प्रश्न ८७ क्या ईश्वर जीव के कर्मों को पहले से जानता है, त्रिकालदर्शी है?

उत्तर ईश्वर इस विषय में त्रिकालदर्शी नहीं है। जो होकर न रहे भूत, जो नहीं हो के होवे भविष्य कहलाता है, परमेश्वर का ज्ञान सदा एक रस अखण्डित रहता है। भूत, भविष्य जीवों के लिए है। जैसा स्वतन्त्रता से जीव कर्म कर्ता है, ईश्वर सर्वज्ञता से जानता है। भविष्य में न किये जाने वाले कर्मों को ईश्वर भी नहीं जानता।

नारी में माता की ममता, पत्नि की पवित्रता व बेटी का प्यार है।

प्रश्न ८८ क्या जीव परमात्मा का अंश है?

उत्तर नहीं! जीव परमात्मा का अंश नहीं हो सकता, क्योंकि दोनों के अनेक गुण, कर्म, स्वभाव भिन्न है। जबकि अंश में अंशी के गुण होते हैं समुद्र के जल में भी वहीं गुण होते हैं जो उसमें से निकाले गये एक लोटा जल में होते हैं।

प्रश्न ८९ क्या ईश्वर मनुष्यों को अच्छे-बुरे कर्म करने की प्रेरणा देता है?

उत्तर ईश्वर जीव के कर्मों का चाहे अच्छे हों या बुरे हों प्रेरक नहीं है। जीव की अपनी स्वतन्त्र सत्ता है। वह अपने कर्मों को करने में पूर्ण उत्तरदायी है। हाँ इतनी बात अवश्य है कि जब जीवात्मा अपने मन में किसी अच्छे कार्य करने का विचार करता है तो ईश्वर की ओर से अच्छे कार्य के लिए उत्साह, प्रसन्नता, निर्भयता आदि की भावना प्रदान की जाती है। इसके विपरीत जब जीवात्मा बुरे कार्य करने का विचार करता है तब ईश्वर मन में भय, शंका, लज्जा आदि की भावना प्रदान करता हैं।

प्रश्न ९० आत्मा हाड़-मांस के बने शरीर में क्यों रहना पसंद करती है?

उत्तर आत्मा को अविद्या के कारण यह हाड़-मांस का शरीर बहुत अच्छा लगता है। जब उसे समझ में आने लगता है कि उसकी अविद्या दूर होने लगती है, आत्मा इस शरीर में नहीं रहना चाहती और फिर मोक्ष में जाना चाहती है।

प्रश्न ९१ ईश्वर ने मनुष्यों और अन्य प्राणियों को सुख-दुःख भोगने के लिए जन्म दिया है , ऐसा क्यों है?

उत्तर जन्म हमारे सकाम कर्मों का फल है। हम पर भगवान् ने थोपा नहीं है। पुण्य कर्म किए हैं तो सुख भोगो। पाप कर्म किये हैं तो दुःख भोगो। निष्काम कर्म किए हैं तो मोक्ष में जाओ।

प्रश्न ९२ जीवात्मा के दुःखों का कारण क्या है?

उत्तर जीवात्मा के दुःखों का मूल कारण मिथ्या ज्ञान है।

मलिन चित्त योग की शिक्षा के लायक नहीं है। - शिवानन्द गिरी

प्रश्न ६३ जीवात्मा की प्रलय में क्या स्थिति है? क्या उस समय उसमें ज्ञान होता है?

उत्तर प्रलय-अवस्था में बद्ध-जीवात्माएं मूर्छित-अवस्था में रहती हैं। उसमें ज्ञान होता है परन्तु शरीर, मन आदि साधनों के अभाव से प्रकट नहीं होता व उसे अनुभव नहीं कर पाती है।

प्रश्न ६४ मुक्ति में जीवात्मा की क्या स्थिति होती है, वह कहाँ रहता है? बिना शरीर इन्द्रियों के कैसे चलता, खाता, पीता है?

उत्तर मुक्ति में जीवात्मा स्वतन्त्र रूप से समस्त ब्रह्माण्ड में भ्रमण करता है और ईश्वर के आनन्द से आनन्दित रहता है तथा ईश्वर की सहायता पाकर अपनी स्वाभाविक शक्तियों से घूमने फिरने का काम करता है। मुक्त अवस्था में जीवात्मा को शरीरधारी जीव की तरह खाने पीने की आवश्यकता नहीं होती है।

वेद

प्रश्न ६५ वेद कितने हैं उनके क्या नाम हैं?

उत्तर वेद चार हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

प्रश्न ६६ वेदों का प्रकाश किसने किया ?

उत्तर परमपिता परमात्मा ने वेदों का प्रकाश किया।

प्रश्न ६७ वेदों का परमात्मा ने कब किया ?

उत्तर मानव-सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने वेदों का प्रकाश किया।

प्रश्न ६८ वेद का ज्ञान परमात्मा ने किनके द्वारा किया?

उत्तर चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के द्वारा परमात्मा ने चारों वेदों का प्रकाश किया।

प्रश्न ६९ ईश्वर के मुख तो हैं नहीं फिर उसने वेद ज्ञान कैसे दिया?

उत्तर परमात्मा सर्वव्यापक है, सबके अन्दर व्यापक है। जैसे हम अपने मन

में विचार उठाते हैं। जब चिन्तन होता है तब अपने मन ही मन में बिना मुख बोल लेते हैं, निर्णय करते हैं, विचारते हैं। तब किसी बाहरी साधन की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि ये सब क्रिया अपने अन्दर हो रही होती हैं।

इसी प्रकार ईश्वर जब आत्मा में ज्ञान देता है तब उसे किसी मुखादि साधन की आवश्यकता नहीं होती।

परमात्मा के आत्मा में व्यापक होने के कारण, परमात्मा के ज्ञान को आत्मा परमात्मा से ग्रहण कर लेता है। जब आत्मा बुद्धि के द्वारा उस ज्ञान को मन तक पहुँचा देता है मन वाणी को देता है, मन तब वाणी से कानों को मिलता है परमात्मा का ज्ञान आत्मा में प्रेरित होता है उसकी संज्ञा वेद है।

ऋषियों ने जब उस प्राप्त ज्ञान का उच्चारण किया, तब अन्यों द्वारा उसे कानों से सुना गया तब वह श्रुति कहलाया।

अतः वेद ज्ञान को देने के लिए ईश्वर को मुखादि अवयवों की आवश्यकता नहीं। यह ज्ञान तो सीधा ऋषियों की आत्मा में आता है। बाद में ऋषि बोलते हैं तो दूसरे सुन सकते हैं

परमात्मा आत्मा को प्रेरणा देता है, भाषा की अमृतधारा बह निकलती है। इसलिये महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है – अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा इन चारों मनुष्यों को जैसे वादित्र (वाद्य यन्त्र) को कोई बजावे या कठपुतली की चेष्टा करावे इस प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मात्र किया था।

प्रश्न १०० भाषा तो ईश्वर-प्रदत्त मानी जा सकती है पर वेद को ईश्वर प्रदत्त क्यों माना जाये?

उत्तर भाषा के साथ ज्ञान भी साथ आता है। भाषा बिना ज्ञान के होती ही नहीं है, वेद के प्रत्येक शब्द का कोई अर्थ होता है जब आपने भाषा को ईश्वर-प्रदत्त मान लिया तो ज्ञान तो स्वतः ईश्वर प्रदत्त स्वीकार कर लिया गया। वह आदि-भाषा ही वैदिक भाषा और वह आदि ज्ञान वेद है।

सदा चेहरे पर मुस्कान रखें।

प्रश्न १०१ फिर उन मनुष्यों को ज्ञान कैसे हुआ ?

उत्तर ईश्वर ने जो हजारो की संख्या में मनुष्यों को उत्पन्न किया था उनमें जो सर्वाधिक पवित्र आत्माएँ थी उनको चुना और उनकी समाधि लगवा करके ईश्वर ने उनको ज्ञान दिया। वहीं से गुरु परम्परा चली और सब मनुष्यों को ज्ञान हुआ।

प्रश्न १०२ वेदों में क्या लिखा है?

उत्तर वेदों में मनुष्य के कर्तव्यों तथा सब सत्य विद्याओं के विषय में लिखा है।

प्रश्न १०३ वेदों की उत्पत्ति को कितने वर्ष हो गये हैं?

उत्तर एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख तरेपन हजार एक सौ बारह (१९६०८५३११२) (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०६८ तक)

प्रश्न १०४ चर्तुयुगी में कितने वर्ष होते हैं? उनके क्या नाम हैं?

उत्तर
सत्युग - १७२८००० वर्ष
त्रेता - - १२९६००० वर्ष
द्वापर - - ८६४००० वर्ष
कलियुग - ४३२००० वर्ष

योग = ४३२०००० वर्षों की एक चर्तुयुगी।

७१ चर्तुयुगी x ४३२०००० = ३०६७२०००० = ७१ चतुर्युगी का एक मन्वन्तर होता है।

१ मन्वन्तर ३०६७२०००० x १४ = ४२९४०८०००० + सृष्टि रचना काल ६ चतुर्युगी x ४३२०००० = २५९२०००० = ४३२००००००० १००० चर्तुयुगी = एक ब्रह्म दिन अर्थात् इस सृष्टि की कुल आयु

१००० x ४३२०००० = ४३२००००००० = (४ अरब बत्तीस करोड़)

सन् २०११ में वर्तमान कलियुग के ५१११ वर्ष बीत चुके हैं।

प्रश्न १०५ वेद नित्य हैं या अनित्य हैं ?

उत्तर वेद नित्य है। जैसे परमपिता परमात्मा सदा रहता है, उसी प्रकार उसका ज्ञान वेद सर्वदा रहता है। जो नित्य पदार्थ है उनके गुण कर्म स्वभाव नित्य और अनित्य द्रव्य के अनित्य होते हैं।

प्रश्न १०६ चारों वेदों में कितने मन्त्र हैं? कौन से वेद में कितने मन्त्र हैं?

उत्तर

ऋग्वेद	१०५२२
यजुर्वेद	१६७५
अथर्ववेद	५६७७
सामवेद	१८७५
योग	२०३४६

प्रश्न १०७ क्या वेद की पुस्तकें भी नित्य हैं?

उत्तर नहीं ! पुस्तकें तो कागज और स्याही से बनी हैं वे नित्य कैसे हो सकती हैं किन्तु शब्द-अर्थ-सम्बन्ध नित्य हैं।

प्रश्न १०८ क्या वेदों में इतिहास है?

उत्तर नहीं! इतिहास जिसका हो उसके बाद में लिखा जाता है। वेद तो सृष्टि के आरम्भ से हैं अत: वेदों में किसी का इतिहास नहीं है। न ही उसमें किसी राजा ऋषि, महर्षि का नाम है, न ही उसमें किसी नदी का नाम है वेदों में जो – जो शब्द प्रयोग किये हैं उनसे विद्या का बोध होता है।

प्रश्न १०९ ईश्वर ने आदि सृष्टि में वेद-ज्ञान दिव्य-सृष्टि के कितने वर्ष बाद दिया।

उत्तर आदि सृष्टि में वेद-ज्ञान दिव्य सृष्टि के पाँच वर्ष बाद दिया। (महर्षि दयानन्द के 'पूना प्रवचन' के अनुसार)

धर्म

प्रश्न ११० सत्य-धर्म का क्या नाम है और धर्म किसे कहते हैं?

उत्तर सत्य-धर्म का नाम 'सत्य सनातन वैदिक धर्म' है। धर्म शब्द का संसार की किसी भी भाषा में कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है। यदि इसके लिये इंग्लिश में कोई शब्द है तो वह है ड्यूटी (कर्तव्य)। धर्म शब्द संस्कृत की धृ धातु से बनता है जिसका अर्थ है धारण करना अर्थात् सद्गुणों को धारण करना।

प्रश्न १११ **सनातन शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर सनातन शब्द का अर्थ है सदा से विद्यमान सबसे पुराना। परन्तु ऐसा पुराना जो कभी पुराना न हो अर्थात् आधुनिकता की कसौटी पर भी खरा उतरता हो।

प्रश्न ११२ मनुष्य जीवन के चार पुरुषार्थ कौन-कौन से हैं?

उत्तर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

प्रश्न ११३ अर्थ किसे कहते हैं?

उत्तर धर्म के अनुसार जो धन अथवा भौतिक-पदार्थ प्राप्त होते हैं, उसे अर्थ कहते हैं।

प्रश्न ११४ काम किसे कहते हैं?

उत्तर धर्म के अनुसार धन कमाकर जीवन की कामनाओं को पूर्ण करने को काम कहते हैं।

प्रश्न ११५ मोक्ष (मुक्ति) किसे कहते हैं?

उत्तर दुःखों से छूटने को मोक्ष कहते हैं?

प्रश्न ११६ धर्म शब्द का सरल अर्थ क्या है?

उत्तर 'जो व्यवहार हम अपने से चाहते हैं, वह व्यवहार दूसरों के साथ करें।' यह धर्म का सबसे सरल अर्थ है।

प्रश्न ११७ महर्षि मनु के अनुसार धर्म के दस लक्षण कौन से हैं?

उत्तर
(१) धृति - धैर्य धारण करना, घबराना नहीं, समस्या आने पर चुनौती को स्वीकार करना।

(२) क्षमा - दूसरों द्वारा हमारे प्रति किए गये अनुचित व्यवहार को सहन करना क्षमा कहलाता है।

(३) दम - मन को वश में करना दम है।

(४) अस्तेय - चोरी छल आदि अनुचित व्यवहार से किसी की वस्तु को न लेना अस्तेय है।

(५) शौच - जल से शरीर की , सत्य से मन की, विद्या

और तप से आत्मा की, ज्ञान द्वारा बुद्धि की शुद्धि करना शौच कहलाता है।

(६) इन्द्रिय-निग्रह - इन्द्रियों को वश में रखना। रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि, विषयों के मर्यादा विरुद्ध सेवन से बचना इन्द्रिय-निग्रह कहलाता है।

(७) धी - अर्थात् बुद्धि के अनुकूल सोच-समझ कर कार्य करना।

(८) विद्या - सद्शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करना और उनके अनुसार आचरण करना विद्या कहलाता है।

(९) सत्य - मन, वचन की समानता (एक रुपता) का नाम सत्य है।

(१०) अक्रोध - किसी से बैर, विरोध, क्रोध न करना अक्रोध कहलाता है।

यज्ञ

प्रश्न ११८ यज्ञ क्या है, इसके क्या अर्थ हैं?

उत्तर संसार में जितने उपकार के कार्य हैं सब यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ के तीन अर्थ हैं - (१) देव-पूजा (२) संगतिकरण (३) दान।

प्रश्न ११९ देव-पूजा किसे कहते हैं?

उत्तर अग्नि आदि पदार्थों का समुचित उपयोग तथा वृद्धों, देवों अर्थात् विद्वानों का ऐहिक पारमार्थिक सुख सम्पादन के लिए सत्कार करना।

प्रश्न १२० संगतिकरण किसे कहते हैं?

उत्तर
1. अग्नि आदि पदार्थों के साथ यथा योग्य संगति, जिससे अनेक विध शिल्प कार्यों की सिद्धि होती है।
2. विद्वान महात्मा पुरुषों का संग, परमात्मा से आत्मा का संयोग या प्राप्ति करना, संगतीकरण कहलाता है।

प्रश्न १२१ दान किसे कहते हैं?

उत्तर अपने सामर्थ्य के अनुसार निष्काम भाव से सुपात्र को उसकी आवश्यकतानुसार धन, वस्त्र या अन्य पदार्थ अथवा विद्या आदि प्रदान करना दान कहलाता है। संसार में जितने दान हैं उनमें वेद विद्या का दान सबसे उत्तम दान है।

प्रश्न १२२ पंच महायज्ञ कौन से हैं?

उत्तर ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेवयज्ञ ये पाँचों यज्ञ महायज्ञ कहलाते हैं।

प्रश्न १२३ ब्रह्मयज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर वेदादि शास्त्रों का पठन-पाठन प्राणायाम और वैदिक सन्ध्या अर्थात् परमेश्वर की स्तुति आदि को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं।

प्रश्न १२४ देवयज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर अग्नि होत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त सब यज्ञों को देव-यज्ञ कहते हैं।

प्रश्न १२५ पितृयज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर जीवित माता, पिता, दादा, दादी, नाना, नानी, आचार्य तथा अन्य सब वृद्धों के सत्कार और सेवा को पितृयज्ञ कहते हैं।

प्रश्न १२६ अतिथि-यज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर पूर्व सूचना के बिना कोई विद्वान्, धार्मिक, पुरुष व संन्यासी आदि अपने स्थान पर आवे तो उनकी सेवा सत्कार आदि करना तथा उनसे ज्ञान प्राप्त करने को अतिथि-यज्ञ कहते हैं।

प्रश्न १२७ बलिवैश्वदेवयज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर गृहस्थ में रहकर जो अपरिहार्य-अनिवार्य हिंसा होती है उससे उत्पन्न दोष को दूर करने के लिए कौवे, कुत्ते, कृमि आदि को जो भोजन खिलाया जाता है उसे बलिवैश्वदेवयज्ञ कहते हैं।

प्रश्न १२८ इन यज्ञों के करने से क्या लाभ हैं?

उत्तर इनके करने से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष (जीवन के अन्तिम लक्ष्य) तक पहुँचने के योग्य हो जाता है।

प्रश्न १२९ अश्वमेध-यज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर अश्वमेध-यज्ञ का अर्थ है न्यायपूर्वक प्रजा का पालन करना।

प्रश्न १३० गोमेध और नरमेध के क्या अर्थ हैं?

उत्तर गोमेध के अर्थ हैं अन्न का उपार्जन करना, इन्द्रियों को पवित्र बनाना और मृतक का दाह कर्म (नरमेध) करना।

प्रश्न १३१ देवता किसे कहते हैं? देवता कितने हैं?

उत्तर जो दिव्य गुणों से युक्त है तथा किसी प्रतिदान की इच्छा के बिना परोपकार के लिए अन्यों का हितकारी है, उसे देवता कहते हैं। देवता जड़ और चेतन दोनों प्रकार के होते हैं।

प्रश्न १३२ चेतन-देवता कौन से हैं?

उत्तर माता, पिता आचार्य, अतिथि, पति के लिए पत्नी व पत्नी के लिए पति तथा स्वयं ईश्वर आदि चेतन देवता हैं

प्रश्न १३३ जड़-देवता कितने हैं तथा कौन-कौन से हैं?

उत्तर आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, एक इन्द्र और एक प्रजापति ये तैंतीस जड़-देवता हैं।

प्रश्न १३४ आठ वसु कौन-कौन से हैं?

उत्तर अग्नि, पृथ्वी, वायु, आदित्य (सूर्य), अन्तरिक्ष, द्यौः, चन्द्रमा, और नक्षत्र। इनका नाम वसु इसलिये है क्योंकि सब पदार्थ इनमें बसते हैं

प्रश्न १३५ ग्यारह रुद्र कौन-कौन से हैं?

उत्तर शरीर में दस प्राण हैं अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय और ग्यारहवाँ जीवात्मा है। ये जब शरीर से निकलते हैं तब मरण होने से सम्बन्धी रोते हैं। अतः रुद्र कहलाते हैं।

प्रश्न १३६ रुद्र शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर रुद्र शब्द का अर्थ रुलाने वाला है।

प्रश्न १३७ आदित्य किसे कहते हैं?

उत्तर बारह महीनों को आदित्य कहते हैं, ये सबकी आयु को ग्रहण करते जाते हैं, इसी से इनका नाम आदित्य है।

बुढ़ापा आयु नहीं, विचारों का परिणाम है।

प्रश्न १३८ इन्द्र किसे कहते हैं?

उत्तर इन्द्र बिजली (विद्युत्) को कहते हैं।

प्रश्न १३६ प्रजापति किसे कहते हैं?

उत्तर यज्ञ को प्रजापति कहते हैं। इससे वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा प्रजा का पालन होता है।

प्रश्न १४० क्या यज्ञ से वर्षा हो सकती है?

उत्तर जी हाँ, यज्ञ से वर्षा हो सकती है। खेड़ा अफ़गान (सहारनपुर) में 30, 31 जौलाई 2002, 1,2 अगस्त 2002 में वृष्टि यज्ञ दोनों समय किया गया और सफल रहा। 30 जौलाई को दोनों समय यज्ञ किया गया प्रचण्ड गर्मी के साथ पछुआ हवा चल रही थी। 31 जौलाई को प्रातः से पुरवा हवा चलने लगी। 1 अगस्त को दोपहर को आधा घण्टा अच्छी वर्षा हुई बादल पश्चिम से आया, खेड़ा अफ़गान के तीनों ओर 3 कि.मी. तक वर्षा हुई। पश्चिम की ओर वर्षा दूर तक हुई। 3,4 अगस्त को रात्रि में भारी वर्षा हुई। इस यज्ञ में विशेष सामग्री और विशेष समिधाओं का प्रयोग किया गया। श्रद्धा और विश्वास के साथ किये गये यज्ञ से सभी क्षेत्र के निवासियों में यज्ञ के प्रति आस्था में वृद्धि हुई। सभी ने परमपिता परमात्मा को धन्यवाद दिया।

प्रश्न १४१ यज्ञ के विषय में महर्षि दयानन्द जी ने जोधपुर नरेश से क्या कहा था?

उत्तर स्वामी दयानन्द जी ने कहा कि इस देश में वर्षा न्यून होती है इसके लिये मेरे कहे अनुसार एक वर्ष में दस हजार रुपयों के घृतादि का नित्य प्रति और वर्षाकाल में चार महीने तक अधिक होम करावें। यदि ऐसा प्रतिवर्ष होता रहे तो संभव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करेगी।

प्रश्न १४२ यज्ञ में गाय के घी का ही प्रयोग क्यों होता है? भैंस, बकरी, ऊँटनी का या वनस्पति घी या तेल का प्रयोग क्यों नहीं होता?

उत्तर क्योंकि गाय के घी के जलने से विशेष गैसें बनती हैं, जोआकाश में स्थित प्रदुषण को शीघ्र ही अधिक मात्रा में नष्ट कर देती हैं। अन्य किसी घी या तेल में यह शक्ति नहीं होती है।

हमारा जीना व दुनिया से जाना दोनों ही गौरवपूर्ण होने चाहिएं।

प्रश्न १४३ यज्ञ सूर्योदय के पश्चात् तथा सायं सूर्यास्त से पूर्व ही क्यों करते हैं? रात्रि में यज्ञ क्यों नहीं करना चाहिए ?

उत्तर सूर्य की किरणें, यज्ञ द्वारा उत्पन्न विशेष रोग विनाशक गैसों को ऊपर आकाश में ले जाकर फैला देती हैं, यह कार्य रात में नहीं हो सकता है।

प्रश्न १४४ यज्ञ करने से पूर्व जल का आचमन व अंग स्पर्श (जल से) क्यों करते हैं?

उत्तर जल का आचमन व अंगस्पर्श आदि करने से शरीर में पवित्रता होती है तथा पवित्र विचार भी उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न १४५ यज्ञ करते समय घी की आहुति कभी उत्तर भाग में, कभी दक्षिण में, कभी मध्य में देते हैं, ऐसा क्यों किया जाता है?

उत्तर ऐसा इसलिए किया जाता है कि जिससे सभी समिधाओं पर समान रूप से घी पड़े तथा वे ठीक प्रकार से जल जाएं।

प्रश्न १४६ संन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण का ही धर्म है या क्षत्रिय आदि का भी है?

उत्तर संन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण का ही धर्म है, क्योंकि सब वर्णों में पूर्ण विद्वान् धार्मिक, परोपकार प्रिय मनुष्य हा ब्राह्मण होता है बिना पूर्ण विद्या के, बिना धर्म और परमेश्वर की निष्ठा के और वैराग्य के संन्यास ग्रहण करने में संसार का उपकार विशेष नहीं हो सकता। अत: मुख्यत: ब्राह्मण को ही संन्यास लेने का अधिकार है।

प्रश्न १४७ यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म क्यों कहा गया है?

उत्तर यज्ञ के द्वारा थोड़े से धन, थोड़े से साधन तथा थोड़े से समय में हजारों प्राणियों को जीवनदायी, रोगनाशक भेषज (औषधीय) वायु की प्राप्ति होती है। इसलिए यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है।

प्रश्न १४८ छोटे से यज्ञ-कुण्ड में थोड़े से घी व सामग्री से गांवों, नगरों में फैला भयंकर प्रदूषण कैसे दूर हो सकता है?

उत्तर जैसे थोड़े से पोटेशियम साईनाइड से सैंकड़ों, हजारों व्यक्तियों का जीवन नष्ट हो जाता है वैसे ही थोड़े से घी, सामग्री से सैंकड़ों हजारों

व्यक्तियों को जीवन मिलता है, जैसे थोड़े से हींग के दाल में डालने से पूरी दाल में हींग की खुशबु हो जाती है।

प्रश्न १४९ क्या यज्ञ में अग्नि जलाने के लिए लकड़ी के स्थान पर गोबर के कण्डों का प्रयोग किया जा सकता है?

उत्तर अग्नि जलाने के लिए लकड़ी के स्थान पर गोबर के कण्डों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

प्रश्न १५० कौन व्यक्ति यज्ञ-कर्म को छोड़ सकता है?

उत्तर संन्यासी विरक्त व्यक्ति को यज्ञ करना आवश्यक नहीं होता है क्योंकि उसका जीवन ही यज्ञमय होता है।

प्रश्न १५१ क्या स्त्री व शूद्र भी यज्ञ कर सकते हैं?

उत्तर हाँ, स्त्री व शूद्र भी यज्ञ कर सकते हैं।

प्रश्न १५२ क्या यज्ञ में कहीं, कभी, किसी स्थिति में पाप हिंसा होती है?

उत्तर नहीं, शास्त्रोक्त विधि अनुसार करने से यज्ञ में कहीं भी, कभी भी, किसी भी स्थिति में पाप, हिंसा नहीं होती है।

प्रश्न १५३ क्या यज्ञ करने वाले व्यक्ति को यज्ञोपवीत धारण करना अनिवार्य है? इसके बिना यज्ञ नहीं होता?

उत्तर ऋषियों ने अनुशासन बनाये रखने हेतु एक व्यवस्था बनाई है कि यज्ञोपवीत धारण करके यज्ञ करना चाहिए, किन्तु यज्ञोपवीत धारण न करके यज्ञ करने से पाप नहीं होता है।

प्रश्न १५४ क्या मन्त्रों का अशुद्ध उच्चारण करने वाले यज्ञकर्ता को पाप लगता है या लाभ नहीं होता है या कोई हानि होती है?

उत्तर मन्त्र अशुद्ध बोलकर भी यज्ञ करने से भी भौतिक-लाभ तो हो जाता है किन्तु अशुद्ध मन्त्र सीखकर गलत परम्परा चला देते हैं।

प्रश्न १५५ जो व्यक्ति बिना आहुति दिये, बिना ही मंत्रों को बोले यज्ञशाला में बैठे होते हैं उनको भी यज्ञ का लाभ होता है?

उत्तर हाँ होता है। उन्हें भी भेषज वायु मिलती है। मन्त्रों से प्रेरणा मिलती है। मन्त्र याद भी होते हैं।

बिना सेवा के चित्त की शुद्धि नहीं होती।

प्रश्न १५६ यज्ञ करते समय मन को कहाँ पर केन्द्रित करना चाहिए? मंत्र के अर्थ पर, अग्नि पर, ध्वनि पर या अन्य स्थान पर?

उत्तर उत्तम तो यह है कि मन को मन्त्र के अर्थों में लगाना चाहिए या ईश्वर में लगाना चाहिए या फिर अग्नि की लपटों में लगाना चाहिए।

प्रश्न १५७ क्या किसी पण्डित, ब्राह्मण को धन देकर अपने लाभ के लिये यज्ञ कराया जा सकता है।

उत्तर हां, धन देकर यज्ञ कराया जा सकता है। जितने धन से घृत-सामग्री आदि का यज्ञ होगा, उसका तो पुण्य मिलेगा, किन्तु करने का पुण्य यज्ञकर्ता (पण्डित, ब्राह्मण) को मिलेगा।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज

प्रश्न १५८ आर्य समाज किसे कहते है?

उत्तर जो आर्य लोगों को समाज है उसे आर्य समाज कहते हैं।

प्रश्न १५९ आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर वेदों के अनुकूल आचरण करने वाले श्रेष्ठ तथा परोपकारी मनुष्य को आर्य कहते हैं।

प्रश्न १६० आर्य समाज की स्थापना कब और किसने की?

उत्तर आर्य समाज क़ी स्थापना 10 अप्रैल सन् 1875 ईस्वी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने की।

प्रश्न १६१ महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज को क्यों स्थापित किया?

उत्तर वेदों का प्रचार करने के लिए तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की।

प्रश्न १६२ स्वामी दयानन्द जी के गुरु कौन थे ?

उत्तर स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती महाराज।

प्रश्न १६३ स्वामी दयानन्द जी की जन्म भूमि कौन सी है?

उत्तर टंकारा (गुजरात) में स्वामी जी का जन्म हुआ।

प्रश्न १६४ स्वामी विरजानन्द जी की जन्म भूमि कौन सी है?

उत्तर स्वामी विरजानन्द जी की जन्म भूमि करतारपुर (पंजाब) है।

प्रश्न १६५ स्वामी दयानन्द जी ने गुरु विरजानन्द जी से विद्या कहाँ पढ़ी?

उत्तर मथुरा में यमुना नदी के तट पर स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया में स्वामी दयानन्द जी ने विद्या पढ़ी।

प्रश्न १६६ जब स्वामी दयानन्द जी विरजानन्द जी के पास पहुँचे तब उन्होंने उन्हें क्या आदेश किया?

उत्तर गुरु विरजानन्द जी महाराज ने दयानन्द जी से कहा यदि तुम मेरे पास अध्ययन करना चाहते हो तो मनुष्यकृत ग्रन्थों को विस्मृत कर दो (भुला दो) और ऋषिकृत ग्रन्थों, अष्टाध्यायी आदि को पढ़ो। स्वामी जी ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

प्रश्न १६७ एक दिन जब स्वामी दयानन्द जी यमुना के किनारे ध्यान में मग्न थे तो एक स्त्री ने इनके पैरों पर सिर रख दिया, तब स्वामी जी ने क्या किया?

उत्तर तब स्वामी दयानन्द जी वहाँ से गोवर्धन पर्वत की ओर जाकर निर्जन एकान्त वन में स्थित मन्दिर में 3 दिन और 3 रात निराहार रहकर ध्यान और चिन्तन में लीन रहे और चौथे दिन गुरु जी से मिल सारा वृतान्त बताया, गुरु जी भारी प्रसन्न हुए।

प्रश्न १६८ गुरु विरजानन्द जी ने अन्तिम विदाई के समय क्या कहा?

उत्तर गुरु विरजानन्द जी ने कहा 'वत्स! भारत देश के दीन हीन जन अनेक-विध दु:ख पा रहे हैं, जाओ उनका उद्धार करो, मत मतान्तरों के कारण जो कुरीतियां प्रचलित हो गई हैं उनका निवारण करो, आर्य जाति की बिगड़ी दशा को सुधारो। आर्य सन्तान का उपकार करो। ऋषि-शैली प्रचलित करके वैदिक-ग्रन्थों के पठन-पाठन में लोगों को प्रगतिशील बनाओ प्रिय पुत्र! गुरु दक्षिणा में मुझे यही वस्तु दान करो। अन्य किसी सांसारिक पदार्थ की मुझे चाह नहीं है, अपना जीवन इसी कार्य में समर्पित कर दो।'

प्रश्न १६९ ऋषि दयानन्द जी ने गुरु जी को क्या उत्तर दिया?

उत्तर ऋषि दयानन्द जी ने गुरुदेव के एक-एक वचन को स्वीकारा और गद्‌गद् कण्ठ से कहा 'श्री महाराज देखेंगे उनका प्रिय शिष्य इन आज्ञाओं को किस प्रकार प्राणपण से परिपालन करता है।'

प्रश्न १७० विदेशी शासन के विषय में स्वामी दयानन्द जी महाराज की क्या राय थी?

उत्तर स्वामी जी के शब्दों में "मतमतान्तर से आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

प्रश्न १७१ स्वामी दयानन्द जी महाराज को सत्य प्रिय था, इसका कोई उदाहरण दीजिये?

उत्तर बदायूं में स्वामी दयानन्द जी महाराज के व्याख्यान पुराणों की आलोचना पर हो रहे थे, फिर उन्होंने ईसाई मत पर व्याख्यान दिया। ईसाई मत की आलोचना कमिश्नर महाशय को बुरी लगी। कमिश्नर साहब ने स्वामी जी को कहलवाया कि इतना कठोर खंडन न किया करें। अगले दिन सिंह गर्जना करते हुए स्वामी जी ने कहा "**लोग कहते हैं सत्य का प्रकाश मत कीजिये कलैक्टर कुपित हो जायेगा, कमिश्नर अप्रसन्न हो जावेगा। हम तो कहते हैं चाहे चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य को सत्य कहेंगे।** आत्मा अमर है उसको कोई शस्त्र छेदन नहीं कर सकता, शरीर नाशवान् है" अन्त में कहा है कोई शूरवीर मुझे दिखाइयेगा, जो मेरी आत्मा को छिन्न-भिन्न कर दे। **दयानन्द के लिए सत्य पर सन्देह करना स्वप्न में भी असम्भव है।**

प्रश्न १७२ महर्षि दयानन्द की सहनशक्ति के सम्बन्ध में कोई घटना बताओ?

उत्तर एक बार एक अंग्रेज ने स्वामी जी से पूछा, स्वामी जी आपके शरीर पर वस्त्र न के बराबर हैं, सर्दी का मौसम है, ऐसे में हम गर्म कपड़ों से सारे शरीर को ढके रहते हैं फिर भी कांपते हैं, आपको कोई फर्क नहीं पड़ता। स्वामी जी बोले तुमने अपनी नाक नहीं ढकी है, क्या इसे ठण्ड नहीं लगती? अंग्रेज बोला इसे सर्दी में रहने की आदत पड़ गई है।

स्वामी जी बोले जिस प्रकार तुम्हारी नाक जलवायु के अनुकूल ढल गई है उसी प्रकार मेरा शरीर भी जलवायु के अनुकूल ढल चुका है, इसकी सहन शक्ति बढ़ चुकी है।

प्रश्न १७३ स्वामी दयानन्द के प्रसिद्ध ग्रन्थ का क्या नाम है?

उत्तर स्वामी दयानन्द जी के सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश है।

प्रश्न १७४ स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ क्यों बनाया?

उत्तर स्वामी दयानन्द जी के शब्दों में "मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का प्रयोजन सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना है।"

आर्यावर्त्त

प्रश्न १७५ हमारे देश का सबसे पुराना नाम क्या है?

उत्तर हमारे देश का सबसे पुराना नाम आर्यावर्त्त है।

प्रश्न १७६ आर्यावर्त्त के मूल निवासी कौन है?

उत्तर आर्यावर्त्त के मूल निवासी आर्य हैं ऐसा आर्यावर्त्त के अर्थ 'आर्यों का केन्द्र' से स्पष्ट पता चलता हैं

प्रश्न १७७ मानव सृष्टि की उत्पत्ति कहाँ हुई?

उत्तर त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत में हुई।

प्रश्न १७८ आर्यों का राज्य कब था?

उत्तर सृष्टि के आरम्भ से लेकर 5000 वर्ष पूर्व तक आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था।

प्रश्न १७६ महाभारत के युद्ध में कहाँ-कहाँ के राजा लड़ने आये थे?

उत्तर चीन के राजा भगदत्त, अमेरिका के बब्रुवाहन, यूरोप देश का बिड़ालक्ष अर्थात् मार्जा के सदृश आंख वाले यवन जिनको यूनानी कहते हैं, ईरान का राजा शल्य आदि सब राजा महाभारत के युद्ध में आज्ञानुसार आये थे।

यदि हम किसी जीव को पैदा नहीं कर सकते तो उन्हें मारने का अधिकार किसने दिया।

प्रश्न १८० पारसमणि पत्थर क्या है?

उत्तर महर्षि दयानन्द के शब्दों में "जो पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात झूठी है, परन्तु यह आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि पत्थर है जिसको लोहे रूपी विदेशी दरिद्र छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

प्रश्न १८१ भूगोल में विद्या कहाँ से फैली?

उत्तर महर्षि दयानन्द के शब्दों में "जितनी विद्या भूगोल में फैली है सब आर्यावर्त्त देश से मिश्र वालों ने, उनसे यूनान, उनसे रोम, उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है।

योगीराज श्री कृष्ण जी

प्रश्न १८२ योगीराज श्री कृष्ण जी की पत्नि और पुत्र का नाम बताइये?

उत्तर पत्नि का नाम रुक्मणी देवी और पुत्र का नाम प्रद्युम्न कुमार था।

प्रश्न १८३ महाभारत में कितने श्लोक हैं? किस प्रकार बढ़ाये गये हैं?

उत्तर महर्षि दयानन्द जी ने पूरा प्रवचन (उपदेश-मंजरी) में कहा 'ग्वालियर में भिंडनामक नगर में मिश्र लोग रहते हैं उनके यहां संजीवनी नाम की पुस्तक है उसमें लिखा है व्यास जी ने महाभारत में एक हजार श्लोक बनाये, फिर व्यास जी के शिष्यों ने छः हजार कर दिये।' पंडित ओमप्रकाश जी यमुनानगर वाले अपने प्रवचनों में अक्सर बताया करते हैं 'भोज प्रबन्ध' नामक पुस्तक में लिखा है जिसमें राजा भोज ने कहा मेरे बाबा के समय में महाभारत में पांच या छः हजार श्लोक थे, आज मेरे समय में बीस हजार हो गये हैं। आज महाभारत में श्लोकों की संख्या अनुमानतया एक लाख है। वेद के अतिरिक्त हमारे अधिकतर ग्रन्थों का यही हाल है।

प्रश्न १८४ योगीराज श्री कृष्ण विवाह के बाद कितने वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे?

उत्तर श्री कृष्ण जी विवाह के 12 वर्ष बाद तक ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे।

प्रश्न १८५ योगीराज श्री कृष्ण जी ने युद्ध में अर्जुन को मोह हो जाने पर क्या उपदेश दिया और उपदेश की इस पुस्तक का क्या नाम है?

उत्तर श्री कृष्ण जी महाराज ने अर्जुन को उपदेश देकर कहा कि कर्म करना मनुष्य का कर्तव्य है। जो व्यक्ति कर्म करने से पीछे हटते हैं उनकी आत्मा उनको धिक्कारती है तथा उसे अपनों में अपमानित बनकर रहना पड़ता है, इसलिये तुम कर्म करते रहो। फल की इच्छा मत करो। परिवार का मोह मत करो। आत्मा अमर है, शरीर सम्बन्ध बदलते रहते हैं। उनका यह उपदेश गीता नामक पुस्तक में है।

प्रश्न १८६ योगीराज श्री कृष्ण ने अपने जीवन में क्या मुख्य कार्य किया?

उत्तर श्री कृष्ण जी महाराज अपने सारे जीवन में अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। अन्याय को उन्होंने कभी सहन नहीं किया।

प्रश्न १८७ श्री कृष्ण जी महाराज के विषय में महर्षि दयानन्द जी महाराज के क्या विचार थे?

उत्तर महर्षि दयानन्द के शब्दों में "देखो श्री कृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।" श्री कृष्ण जी के विषय में स्वामी दयानन्द जी के ऐसे उत्तम विचार थे।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी

प्रश्न १८८ क्या महाराजा दशरथ ने सन्तान प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि-यज्ञ एवं अश्वमेध-यज्ञ किया था?

उत्तर यह बात बिलकुल सत्य है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म पुत्रेष्टि

यज्ञ एवं अश्वमेध-यज्ञ के बाद हुआ था। पुत्रेष्टी-यज्ञ के ब्रह्मा शृंगि ऋषि थे और अथर्व वेद के मन्त्रों से यज्ञ वशिष्ठ मुनि जी ने किया (आर्य जगत् से साभार)

प्रश्न १८६ क्या श्री राम के समय में अयोध्यावासी दैनिक-यज्ञ करते थे और सब अयोध्यावासी सत्य बोलते थे?

उत्तर वाल्मीकि रामायण के अनुसार इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि प्रत्येक अयोध्यावासी दैनिक-यज्ञ करते थे और सब सर्वदा सत्य ही बोलते थे। कोई भी पुरुष झूठ बोलने वाला नहीं था।

प्रश्न १६० क्या श्राद्ध के द्वारा जिसके लिये श्राद्ध किया जाता है उसको अन्न-भोजन पहुँचाता है?

उत्तर अन्य का किया भोजन अन्य को प्राप्त हो तो विदेश जाने वाले को श्राद्ध के द्वारा अन्न व भोजन पहुँच जाना चाहिये। उन्हें वहाँ पकाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिऐ श्राद्ध द्वारा भोजन दूसरों को नहीं पहुँचता।

प्रश्न १६१ भरत जी ने श्री राम को अयोध्या वापिस चलने के लिये विनय की तो श्री राम ने क्या उत्तर दिया ?

उत्तर श्री राम ने कहा चन्द्र शोभा को, हिमालय हिम को, समुद्र मर्यादा को छोड़ दे परन्तु मैं पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता।

प्रश्न १६२ जब सीता को रावण चुरा कर ले गया तब श्रीराम ने लक्ष्मण से क्या कहा?

उत्तर श्री राम ने लक्ष्मण से कहा कि पृथ्वी पर मेरे समान अशुभ कर्म करने वाला कोई दूसरा नहीं है। हृदय और मन को बींधता हुआ एक शोक से दूसरा शोक परम्परा से मुझे प्राप्त हुआ है। निश्चय ही मैंने अनेक पाप किये हैं, उन्हीं का फल यह आज मुझे प्राप्त हुआ है।

प्रश्न १६३ श्री राम को राज्याभिषेक और 14 वर्ष का बनवास मिलने से क्या उनके चेहरे में कोई अन्तर आया?

उत्तर सत्यवादी श्री राम के चेहरे में कोई अन्तर अर्थात् विकार नहीं आया

और उनका चेहरा एक सा दिखता था।

प्रश्न १६४ क्या हनुमान जी वानर थे और उनके पूँछ थी?

उत्तर वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् जी वानर जाति से थे। यह उस समय एक जाति थी, उनके पूँछ नहीं थी। उनकी सन्तति आज भी किष्किन्धा प्रदेश में विद्यमान है। प्राचीन काल में वानर, ऋक्ष, नाग, गृद्ध आदि नामों का धारण करने वाले मनुष्यों के कई समुदाय थे।

योग

प्रश्न १६५ योग किसे कहते हैं? इसके क्या लाभ हैं?

उत्तर चित्त की वृत्तियों के रोकने का नाम योग है। चित्त की वृत्तियों का निरोध करने से और अविद्या की निवृत्ति से ज्ञान बढ़ता है।

प्रश्न १६६ योग के अंग कितने हैं?

उत्तर यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

प्रश्न १६७ यम किसे कहते हैं और कितने हैं?

उत्तर इन्द्रियों को दुरुपयोग से रोकने का नाम यम है।

(1) **अहिंसा** (किसी को अन्याय पूर्वक दु:ख न पहुँचाना)

(2) **सत्य** (जो वस्तु जैसी है उसको वैसा ही मानना और बोलना)

(3) **अस्तेय** (बिना आज्ञा किसी दूसरे की वस्तु न लेना और न चोरी करना)

(4) **ब्रह्मचर्य** (इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखना, ईश्वर में मन को लगाना)

(5) **अपरिग्रह** (अधिक संग्रह न करना, आवश्यकताओं को घटाना)

प्रश्न १६८ नियम किसे कहते हैं और कितने हैं?

उत्तर श्रद्धा पूर्वक निरन्तर पालनीय होने होने से नियम कहलाते हैं। नियम पाँच हैं :-

(1) **शौच** - जल से शरीर को साफ रखना और अन्तःकरण को सत्य से पवित्र करना।

(2) **सन्तोष** - पूर्ण पुरुषार्थ करने के उपरान्त जो प्राप्त हो उस पर निर्भर रहना और शेष ईश्वर पर छोड़ देना।

(3) **तप** - अपने लक्ष्य की प्राप्ति में प्राण, इन्द्रियों और शरीर को वश में करके द्वन्द्वों (सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास) को सहन करना।

(4) **स्वाध्याय** - आर्ष ग्रन्थों को पठन-पाठन एवं सन्ध्या में प्रातः सायं अपनी जीवनचर्या पर विचार करना।

(5) **ईश्वर प्रणिधान** - ईश्वर भक्ति में आत्मा को समर्पित करना।

प्रश्न १९९ आसन किसे कहते हैं?

उत्तर जिसमें सुख पूर्वक शरीर और आत्मा स्थिर हो उसको आसन कहते हैं।

प्रश्न २०० प्राणायाम किसे कहते हैं? उसका लाभ क्या है?

उत्तर आसन सिद्ध होने के बाद श्वास और प्रश्वास की गति को यथाशक्ति रोक देने को प्राणायाम कहते हैं। बहुत समय प्राणायाम करने से चित्त एकाग्र हो जाता है। अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। जब तक मुक्ति न हो, उसके आत्मा का ज्ञान बराबर बढ़ता रहता है।

प्रश्न २०१ प्रत्याहार किसे कहते हैं?

उत्तर जब साधक इन्द्रियों के विषयों को त्यागकर अपने मन को ध्येय में लगाता है इस स्थिति को अर्थात् ईश्वर में लौ लगाने को प्रत्याहार कहते हैं।

प्रश्न २०२ धारणा किसे कहते हैं?

उत्तर चित्त (मन) को किसी एक देश (स्थान विशेष) में स्थिर करना धारणा कहलाता है। धारणा से ध्यान में परिपक्वता आती है।

प्रश्न २०३ ध्यान किसे कहते हैं?

उत्तर जहाँ चित्त को लगाया जाता हे उसी धारणा वाले स्थान में एक ध्येय वस्तु की वृत्ति अर्थात् ज्ञान को निरन्तरता ध्यान कहलाता है अर्थात् आत्मा मन और इन्द्रिय को किसी वस्तु में लगाकर मनन करने का नाम ध्यान है।

प्रश्न २०४ समाधि किसे कहते हैं?

उत्तर जिस प्रकार अग्नि के बीच लोहा भी अग्नि रूप हो जाता है इस प्रकार परमेश्वर के ज्ञान में प्रकाशित होकर निज शरीर को भूले हुए के समान जानकर आत्मा को परमेश्वर के आनन्द और ज्ञान से परिपूर्ण करना समाधि कहलाता है। ईश्वर में लय होने का नाम समाधि है।

प्रश्न २०५ संयम किसे कहते हैं?

उत्तर जब धारणा, ध्यान, समाधि तीनों एकत्र हो जायें तो उसे संयम कहते हैं?

प्रश्न २०६ क्या स्त्रियाँ योगिनी बन सकती हैं?

उत्तर हाँ, योगी बनने का सामर्थ्य स्त्री और पुरुष दोनों में है।

प्रश्न २०७ क्या योगी दूसरे के शरीर में प्रवेश कर सकता है तथा अपने शरीर में वापिस लौटकर पुनः जीवित हो सकता है?

उत्तर नहीं! दूसरे के शरीर में प्रविष्ट होकर पुनः लौटना असम्भव है।

प्रश्न २०८ वैदिक रीति को छोड़ ध्यान की जो सैंकड़ों कल्पनायें की जाती हैं, क्या उनसे ईश्वर-प्राप्ति सम्भव हो सकती है?

उत्तर नहीं! ईश्वर की आज्ञानुसार विशुद्ध वैदिक-ज्ञान और उसके अनुसार निष्काम-कर्म व ईश्वर-उपासना करने से ही ईश्वर-प्राप्ति हो सकती है।

प्रश्न २०६ ध्यान करने के लिए मन/चित्त की स्थिति कैसी होनी चाहिये?

उत्तर ध्यान करने के लिए मन प्रसन्न होना चाहिये तथा खिन्नता, क्षोभ, राग-द्वेष आदि से रहित होना चाहिये।

प्रश्न २१० ध्यान कैसे स्थान पर करना चाहिये?

उत्तर शान्त-एकान्त स्थान पर, स्वच्छ स्थान पर ध्यान करना चाहिये।

लोकतन्त्र में वोट मांगते हैं हिन्दी में, राज करते हैं अंग्रेजी में।

प्रश्न २११ ध्यान में सफलता कैसे मिलती है?

उत्तर निम्न उपायों का अनुष्ठान करने से ध्यान में सफलता मिलती है – (1) ईश्वर सम्बन्धित शुद्ध ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करने से। (2) सद्गुरु के मार्गदर्शन से। (3) व्यवहार में यम-नियम के पालन से। (4) शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ होने से। (5) नित्य दोनों समय ध्यान के अभ्यास से। (6) संसार के प्रति वैराग्य होने से।

प्रश्न २१२ क्या निराकार वस्तु का ध्यान हो सकता है?

उत्तर हां, निराकार वस्तु का ध्यान हो सकता है।

प्रश्न २१३ क्या ध्यान में मन विचारों से रहित हो जाता है?

उत्तर नहीं, ध्यान में मन विचारों से सर्वथा रहित नहीं हो जाता, ईश्वर विषयक विचार मन में रहते हैं।

प्रश्न २१४ साकार का ध्यान करना सरल होता है निराकार का कठिन। क्या ईश्वर को साकार मानकर ध्यान कर सकते हैं?

उत्तर नहीं! क्योंकि ईश्वर साकार नहीं है। जो वस्तु गुण, कर्म, स्वभाव से जैसी होती है उसका उसी रूप में ध्यान किया जाता है। जैसे कि पानी को दूध मानकर नहीं पिया जा सकता है इसी प्रकार से निराकार ईश्वर का भी साकार रूप में ध्यान नहीं किया जा सकता और न हीं उस साकार रूप का ध्यान हमें सच्ची सुख-शान्ति दे सकता, जो निराकार ईश्वर का ध्यान हमें सच्ची सुख-शान्ति दे सकता, जो निराकार ईश्वर का ध्यान करने से मिलती है। जैसे पत्थर को मिठाई समझकर खाना अज्ञान है ऐसे ही निराकार ईश्वर को साकार समझकर ध्यान करना अज्ञान है।

प्रश्न २१५ ध्यान करने से होने वाले कोई पांच लाभ बताइये।

उत्तर ध्यान करने से – (१) ईश्वरीय गुण जैसे – ज्ञान, बल, उत्साह, आनन्द, दया, प्रेम, धैर्य, सहनशीलता, निर्भयता, ओज, तेज आदि की प्राप्ति होती है। (२) कुसंस्कार नष्ट होकर अच्छे संस्कार बनते व

उत्पन्न होते हैं। (३) मन, इन्द्रियों पर नियन्त्रण होता है। एकाग्रता, स्मृति, बुद्धि बढ़ती है। (४) ईश्वर का साक्षात्कार होता है। (५) लौकिक, सांसारिक कार्यों में सफलता मिलती है।

वर्ण

प्रश्न २१६ वर्ण किसे कहते हैं?

उत्तर जैसा गुण कर्म हो वैसा ही अधिकार देना वर्ण कहलाता है। प्राचीन काल में गुरुकुल में विद्यार्थी को विद्या पूरी करने पर आचार्य ही उसका वर्ण-निश्चय करते थे।

प्रश्न २१७ गुरुकुल में शिक्षा देने का ढंग किस प्रकार का होना चाहिये?

उत्तर सब विद्यार्थियों को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जायें चाहे वह राजकुमार, राजकुमारी हो या निर्धन हो। सबको तपस्वी होना चाहिये। इसमें राजनियम होना चाहिये कि पांचवे या छठे वर्ष के बाद लड़के और लड़कियों को कोई घर में न रक्खे। जो घर में रक्खे वह दण्डनीय होवे। लड़के और लड़कियों की पाठशाला पृथक्-पृथक् और ग्राम से काफी दूर होनी चाहिये।

प्रश्न २१८ अध्यापक कैसे होने चाहियें?

उत्तर जो पूर्ण विद्या युक्त धार्मिक हों वही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं।

प्रश्न २१९ वर्ण कितने हैं तथा कौन-कौन से हैं?

उत्तर वर्ण चार होते हैं - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र (सेवक)

प्रश्न २२० ब्राह्मण के क्या कर्तव्य हैं?

उत्तर ब्राह्मण के पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना-लेना, मन से भी कभी बुरे कार्य की इच्छा न करना, सदा धर्म और न्याय के मार्ग पर चलना ये मुख्य कर्तव्य है।

प्रश्न २२१ क्षत्रिय के कर्म क्या है? क्षत्रिय कैसे होने चाहियें?

उत्तर न्याय से प्रजा की रक्षा करना अर्थात् पक्षपात छोड़कर दुष्टों को दण्ड

देना, शास्त्रों का पढ़ना, अपने समक्ष कभी अत्याचार सहन नहीं करना ही क्षत्रिय का कर्म है।

प्रश्न २२२ **वैश्य के क्या कर्म हैं?**

उत्तर गाय आदि पशुओं का पालन, विद्या और धर्म की वृद्धि के लिये धन का व्यय करना, शास्त्रों का पढ़ना, यज्ञ करना, व्यापार करना, खेती करना और भामाशाह की तरह देश और धर्म के लिये दान देना वैश्य का मुख्य कर्तव्य है।

प्रश्न २२३ **शूद्र (सेवक) का क्या कर्म है?**

उत्तर शूद्र अर्थात् सेवक जिसको पढ़ने-पढ़ाने, लिखने-लिखाने से कुछ न आवे। पूरे समाज की सेवा करना ही शूद्र का मुख्य कर्तव्य है।

प्रश्न २२४ **राजा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के लिये मनुस्मृति में कैसे दण्ड व्यवस्था है?**

उत्तर राजा को शूद्र (सेवक) से हजार गुना अधिक दण्ड देना चाहिये। उसी जुर्म में शूद्र से दुगना दण्ड वैश्य को, उसी जुर्म में वैश्य से दुगना क्षत्रिय को, उसी जुर्म में क्षत्रिय से दुगना दण्ड ब्राह्मण को मिलना चाहिए।

आश्रम

प्रश्न २२५ **आश्रम कौन-कौन से हैं?**

उत्तर ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

ब्रह्मचर्य :- मन की वृत्तियों को सब दोषों से हटाकर तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुये, वीर्य की रक्षा करते हुये, वेदादि शास्त्रों को कम से कम 25 वर्षों तक गुरुकुल में पढ़ना। हमारे आदर्श पुरुष श्री रामचन्द्र जी और श्री कृष्ण जी ने भी गुरुकुलों में शिक्षा पाई थी। गुरुकुलीय शिक्षा अपनाने से ही देश में राम राज्य स्थापित हो सकता है।

गृहस्थ :- जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहस्थ है, इसी के आश्रय से सब आश्रम स्थिर हैं। स्त्री पुरुष दोनों को परस्पर,

विद्वान्, पुरुषार्थी और सब व्यवहारों का ज्ञाता होना चाहिये।

वानप्रस्थ :- गृहस्थ आश्रम के पश्चात् वानप्रस्थ अर्थात् वन में जाकर तपश्चर्या, सत्संग, योगाभ्यास, प्राणायाम से ज्ञान प्राप्त करके संन्यास की तैयारी करने को कहते हैं।

संन्यास :- यह आश्रम विद्वानों के लिये है। लोकेषणा, पुत्रेषणा, वित्तेषणा को त्यागकर पूर्ण वैराग्य को प्राप्त कर आयु के चौथे भाग में वेदादि शास्त्रों का प्रचार सत्योपदेश, सबकी शंकाओं की निवृत्ति, निर्भीकता पूर्वक प्रचार करना संन्यासी के कर्तव्य हैं।

प्रश्न २२६ तीर्थ किसे कहते हैं?

उत्तर जिससे दुःखों से पार उतरे। सत्य-भाषण, विद्या, सत्संग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादान आदि जितने शुभ कर्म हैं इसी को तीर्थ कहते हैं इतर जल-स्थल नदी-सरोवर के तट आदि तीर्थ नहीं हैं।

प्रश्न २२७ स्वर्ग व नरक किसे कहते हैं?

उत्तर स्वर्ग नाम सुख विशेष का है। नरक दुःख विशेष को कहते हैं।

प्रश्न २२८ स्तुति किसे कहते हैं? इसका क्या फल है?

उत्तर गुणों का कीर्तन, श्रवण और ज्ञान प्राप्त करना स्तुति कहलाते हैं। इसका फल प्रीति आदि होते हैं।

प्रश्न २२९ प्रार्थना किसे कहते हैं? इसका क्या फल है?

उत्तर किसी भी कार्य को करने के लिए अपना पुरुषार्थ करने पर ईश्वर से सहयोग मांगना प्रार्थना कहलाता है। प्रार्थना करने से मैं की भावना खत्म होती है, अभिमान नहीं रहता।

प्रश्न २३० उपासना किसे कहते हैं? इसका क्या फल है?

उत्तर ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हैं। अपने में ईश्वर को व्यापक जानकर प्राणायाम और योगाभ्यास से साक्षात्कार करके उसके गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल अपने को करना उपासना कहलाती है। ईश्वर की उपासना से हमारे ज्ञान में निरन्तर वृद्धि होती जायेगी और यह अन्त

में मनुष्य को मोक्ष तक पहुँचायेगी। ईश्वर की उपासना द्वारा परब्रह्म से मेल और ईश्वर का साक्षात्कार होगा।

प्रश्न २३१ गुरु किसे कहते हैं?

उत्तर माता-पिता और जो सत्य विद्या का ग्रहण कराये और असत्य को छुड़ावे उसे गुरु कहते हैं।

प्रश्न २३२ आप्त किसे कहते हैं?

उत्तर जो छल-कपट आदि दोष रहित, धर्मात्मा, विद्वान्, सत्योपदेष्टा, सब पर कृपा दृष्टि से वर्तमान होकर, अविद्या अंधकार का नाश करके अज्ञानी लोगों की आत्माओं में विद्यारूपी सूर्य का प्रकाश करते हैं, उनको आप्त पुरुष कहते हैं।

प्रश्न २३३ पंडित किसे कहते हैं?

उत्तर जो सत्य असत्य को विवेक से जाननेहारा, धर्मात्मा, सत्यवादी, सत्यप्रिय, विद्वान् और सबका हितकारी होता है। उसको पंडित कहते हैं।

प्रश्न २३४ आचार्य किसे कहते हैं?

उत्तर जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराये, सब विद्याओं को पढ़ावे उसको आचार्य कहते हैं।

प्रश्न २३५ परोपकार किसे कहते है?

उत्तर अपने सामर्थ्य से दूसरे प्राणियों को सुख देने के लिये तन-मन-धन से प्रयत्न करना परोपकार है।

प्रश्न २३६ पूजा किसे कहते हैं?

उत्तर जो यथायोग्य आदर सत्कार करे उसको पूजा कहते हैं।

प्रश्न २३७ भूत-प्रेत किसे कहते हैं?

उत्तर भूत उसे कहते हैं जो बीत चुका है, जैसे भूतपूर्व प्रधानमंत्री और प्रेत लाश को अर्थात् मुर्दा शरीर को कहते हैं।

प्रश्न २३८ ईश्वर ने किसी को अमीर और किसी को गरीब के यहाँ जन्म क्यों दिया?

उत्तर मनुष्य कृत पूर्व कर्मों के कारण ईश्वर ने अमीर और गरीब के यहाँ जन्म दिया।

प्रश्न २३६ श्राद्ध किसे कहते हैं तथा तर्पण किसे कहते हैं?

उत्तर श्रद्धापूर्वक जीवित माता-पिता को भोजन कराने आदि को श्राद्ध कहते हैं। जल, दूध, भोजन, वस्त्र आदि से तृप्त कराने को तर्पण कहते हैं।

आर्ष ग्रन्थ

प्रश्न २४० ब्राह्मण ग्रन्थ कितने हैं और कौन-कौन से हैं?

उत्तर चार हैं :- ऐतरेय (ऋग्वेदका), शतपथ (यजुर्वेदका), साम (सामवेदका), गोपथ (अथर्ववेदका) ब्राह्मण है।

प्रश्न २४१ महर्षि दयानन्द जी की मान्यता के अनुसार उपनिषद कितनी हैं?

उत्तर मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, छान्दोग्य, प्रश्न, बृहदारण्यक, ईश, केन, कठ-तैतिरीय मुख्य दस उपनिषद हैं।

प्रश्न २४२ दर्शन ग्रन्थ कितने हैं? इनके लेखक कौन-कौन हैं और उनके क्या-क्या विषय हैं?

उत्तर

वैशैषिक दर्शन	महर्षि कणाद	काल
न्याय दर्शन	महर्षि गौतम	परमाणु
सांख्य दर्शन	महर्षि कपिल	प्रकृति
योग दर्शन	महर्षि पतञ्जलि	पुरुषार्थ
वेदान्त दर्शन	महर्षि व्यास	ब्रह्म
मीमांसा दर्शन	महर्षि जैमिनि	कर्म

प्रश्न २४३ वेदों के अंग कितने हैं?

उत्तर शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष।

प्रश्न २४४ क्या सभी दर्शनों में मत भिन्नता है?

उत्तर नहीं! सभी दर्शन एक मत हैं। कणाद मुनि ने वैशेषिक-दर्शन में कहा कि तत्व-ज्ञान से मुक्ति होती है। तत्वज्ञानान्निः श्रेयसम् (१/१/२)। न्याय-दर्शन के रचयिता गौतम ने अत्यन्त दुःख निवृत्ति को मुक्ति माना है तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।। (१–१–२२। मिथ्या-ज्ञान के दूर होने से बुद्धि, वाक् और शरीर शुद्ध होते हैं इनकी शुद्धि से यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता है वही मुक्ति की अवस्था है।

योग-शास्त्र के कर्ता पतञ्जलि मानते हैं कि चित्त-वृत्तियों का निरोध करने से शान्ति और ज्ञान प्राप्त होते हैं, इससे मोक्ष-प्राप्ति होती है। सांख्य शास्त्र के प्रणेता महामुनि कपिल कहते हैं कि तीन प्रकार के दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति होना ही परम पुरुषार्थ (मुक्ति) है। अथ त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः। उत्तर मीमांसा अर्थात् वेदान्त दर्शन के रचयिता वादरायण **(व्यास जी)** क्या कहते हैं - अवि- भागेन दृष्टत्वात्।। चितितन्मात्रेण तदात्मकत्वादित्यौडुलोमिः।। अथावं वादरिशह ह्यवेम्।। भावं जैमिनिर्निर्विकल्पामननात् ।वेदान्त ४–४–११।। द्वादशाहवदुभयविधं बादरायणोऽत: ।। वेदान्त ४–४–१२।। व्यास के मत से मुक्ति की दशा में अभाव और भाव दोनों रहते हैं। मुक्त आत्मा का परमेश्वर के साथ व्याप्य और व्यापक सम्बन्ध रहता है। दोनों एक अर्थात् जीवात्मा का अभाव कभी नहीं होता। भोगमात्र साम्य लिंगाच्च।। वेदान्त ४–४–२१ ।।

परमेश्वर के ज्ञान, सामर्थ्य और आनन्द कुछ जीवात्मा को प्राप्त होते हैं। ईश्वर का आनन्द असीम है सारा आनन्द मुक्त जीवात्मा को हो ही नहीं सकता। जीव ब्रह्म में अभेद मानने से धर्मानुष्ठान के साथ योग, तप और उपासना आदि सब निष्फल हो जायेंगे। इसलिये परमात्मा और जीवात्मा को एक मानना ठीक नहीं है। व्यापक और व्याप्य, सेव्य और सेवक आदि सम्बन्ध ईश्वर और जीव में वर्तमान रहता है और यही सम्बन्ध जीवात्मा के जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारे का कारण होता है।

प्रश्न २४५ प्राचीनकाल में विद्यार्थियों को कौन-कौन सी पुस्तकें पढ़ाने की रीति थी?

उत्तर ४ वेद, ४ उपवेद और छः वेदांग छः उपांग इन बीस विद्याओं को पढ़ाने की रीति थी।

प्रश्न २४६ उपवेद कितने हैं? कौन-कौन से हैं?

उत्तर चार हैं :- आयुर्वेद (वैद्यक शास्त्र), धनुर्वेद (शस्त्र विद्या), गन्धर्व वेद (गायन विद्या), अर्थवेद (शिल्प विद्या)

प्रश्न २४७ हमारे अन्य आदर्श ग्रन्थ कौन-कौन से हैं?

उत्तर मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण, महर्षि वेद व्यास कृत महाभारत।

प्रश्न २४८ मनुष्य किसे कहते हैं?

उत्तर मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर अन्यों के सुख-दुःख, लाभ-हानि को समझें। महर्षि दयानन्द सरस्वती।

प्रश्न २४९ परिवार कैसे होने चाहियें?

उत्तर पुत्र, माता-पिता के अनुकूल चले। परिवार की परम्पराओं की रक्षा करे। यदि पुत्र पिता के विपरीत चला तो पिता इस लोक के चलने के समय यह न कह सकेगा, इस विश्वास के साथ शरीर नहीं छोड़ेगा कि पुत्र मेरे अवशिष्ट कर्म को पूरा करेगा। पुत्र माता के मन के साथ हो, माता की इच्छाओं को पूर्ण करे। पत्नि अपने पति से मीठी व शान्तिदायिनी वाणी बोले। पति पत्नि की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें। भाई-भाई और बहन-बहन से द्वेष न करे। सब मिलकर चलें। समान व्रत वाले बनें, सबका पारस्परिक व्यवहार प्रेम से भरा हुआ हो, परस्पर कल्याण करें। शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि इनके सेवन से मनुष्य की बुद्धि और स्वास्थ्य दोनों नष्ट होते हैं। मांस और अण्डा भी नहीं सेवन करना चाहिये क्योंकि मांस खाने से प्रवृत्ति तामसिक हो जाती है, जीवों पर दया नहीं रहती। **प्राण लेने का अधिकार उसको है जो उसमें प्राण डाल सकता हो।**

राज व्यवस्था

प्रश्न २५० राजा और प्रजा को मिलकर उत्तम शासन व्यवस्था के लिये किस प्रकार व्यवस्था करनी चाहिये ?

उत्तर राजा और प्रजा को मिलकर तीन सभा अर्थात् विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा, राजार्य सभा नियत करके सब मनुष्यादि प्राणियों के विद्या, सुशिक्षा आदि की व्यवस्था करनी चाहिये।

प्रश्न २५१ राज्य के सभासद कैसे होने चाहियें ?

उत्तर सब सभासद पक्षपात रहित, न्यायपूर्वक धर्मयुक्त जितेन्द्रिय होकर व्यवस्था का पालन करने वाले होने चाहियें।

प्रश्न २५२ राजा को किस प्रकार चुनना चाहिये ?

उत्तर किसी एक को राजा का अधिकार नहीं देना चाहिये। राजा को सभापति के आधीन होना, सभापति को सभा के आधीन होना चाहिये एवं सभा के सभासद प्रजा के द्वारा चुने जाने चाहिएं।

प्रश्न २५३ राजा में क्या गुण होना चाहिये ?

उत्तर जो सभासदों में सर्वोत्तम गुण-कर्म-स्वभाव युक्त हो अर्थात् सूर्यवत् प्रतापी, अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करने हारा जिसको पृथ्वी में कड़ी निगाह से देखने वाला कोई न हो, ऐसे महाविद्वान् धर्माधिकारी को राजा चुनना चाहिये।

प्रश्न २५४ क्या द्रोपदी के पाँच पति थे ?

उत्तर नहीं ! द्रोपदी का पति युधिष्ठिर था। लीजिये महाभारत का प्रमाण।

कौरव्यः कुशली राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
अहंच भ्राताश्चास्य यांश्चान्यान् परिपृच्छसि।

महाभारत १२–२६७–१६६४

एतं कुरुश्रेष्ठतम वदन्ति युधिष्ठिरं धर्मसुतं पतिं मे।

महाभारत २७०–७–१७०१

पाण्डव वनवास में थे, दुर्योधन की बहन का पति सिन्धुराज जयद्रथ उस वन में आ गया। उसने द्रोपदी को देखकर पूछा - तुम कुशल तो हो ? द्रोपदी बोली सकुशल हूँ। मेरे पति कुरु कुल-रत्न कुन्ती कुमार राजा युधिष्ठिर भी सकुशल हैं। मैं और उनके चारों भाई तथा अन्य जिन लोगों के विषय में आप पूछना चाह रहे हैं, वे सब भी कुशल से हैं। राजकुमार ! यह पग धोने को जल है, इसे ग्रहण करो। यह आसन है, यहाँ विराजिये।

द्रोपदी भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव को अपना पति नहीं बताती, उन्हें पति का भाई बताती है और आगे चलकर तो यह एकदम स्पष्ट ही कर देती है जब युधिष्ठिर की तरफ इशारा करके वह जयद्रथ को बताती है - "कुरुकुल के इन श्रेष्ठतम पुरुष को ही, धर्मनन्दन युधिष्ठिर कहते हैं। ये मेरे पति हैं।

प्रश्न २५५ आर्यावर्त्त का प्रथम राजा कौन हुआ उसका विवरण किस प्रकार है?

उत्तर इक्ष्वाकु आर्यावर्त्त का प्रथम राजा हुआ। इक्ष्वाकु की ब्रह्मा से छठी पीढ़ी है। पीढ़ी का अर्थ बाप का बेटा नहीं, एक अधिकारी से दूसरा अधिकारी जानें। ब्रह्मा की उत्पत्ति तक दिव्य सृष्टि थी।

प्रश्न २५६ प्राचीन काल में धनुर्वेद से कौन-कौन व्यूह रचना आदि सिखाते थे?

उत्तर मकर व्यूह, चक्र व्यूह, बलाका व्यूह, सूचि व्यूह, शूकर व्यूह, शकट व्यूह, चक्रव्यूह इत्यादि कावयद के नाना प्रकार प्राचीनकाल में विदित थे शक्ति, असि, शतध्नी, भुशुण्डी आदि अनेक हथियार होते थे।

प्रश्न २५७ क्या प्राचीन काल में विमान थे?

उत्तर प्राचीन काल के लोगों को विमान बनाने की कला भली भांति मालूम थी, पहिले लोग विमान से लड़ाईयां भी लड़ते थे। प्राचीन काल में गरीबों के यहाँ भी विमान होते थे। कला-कौशल की व्यवस्था करने वाला एक विश्वकर्मा नामक पुरुष हुआ, वह एक शिल्पकार था, अस्तु, विश्वकर्मा ने विमान की युक्ति निकाली थी। (उपदेश मंजरी)

प्रश्न २५८ महाभारत से किस प्रकार आर्यों की दुर्दशा हुई ?

उत्तर महाभारत से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व आर्यों में फूट का रोग लग गया था। प्राचीन सामाजिक प्रबन्ध बिगड़ने से हमारे आर्यावर्त्त की दुर्दशा हुई। राजा धृतराष्ट्र स्वभाव से कपटी और पाण्डु धर्मात्मा व्यक्ति थे। पाण्डु की रानी माद्री वेद आज्ञा के विरुद्ध सती हो गई थी। यह कुरीति यहीं से आरम्भ हुई। उस समय ब्राह्मण लोग युद्ध विद्या के भी आचार्य होते थे। अर्जुन ने धनुर्वेद का सबसे अच्छा अभ्याम किया। इसके मुकाबले का कौरवों में कर्ण ही था। इसलिए अर्जुन ने कर्ण की अवज्ञा की, परन्तु इस अवज्ञा से लाभ उठाने के लिए दुर्योधन ने कर्ण को बंगाल का राज्य दे दिया और उसे क्षत्रिय वर्ण का अधिकार दे दिया। कर्ण सूतपुत्र अर्थात् सारथी का बेटा था। इस प्रकार के अनुचित अभिमान से राजकुल में द्वेष की आग भड़की। इसी द्वेष से आर्यावर्त्त की दुर्दशा हुई। उस समय धृतराष्ट्र के पास एक नीच, छछोरा, कामुक कनक नामक शास्त्री रहता था। इसी दुष्ट शास्त्री की सलाह से पाण्डवों को भस्म करने के लिए एक 'लाख' का घर बनाया गया। शकुनि, दुर्योधन, दु:शासन, कनक शास्त्री की करतूतों से राज्य की दुर्दशा हुई। इसका भयंकर परिणाम हुआ। विदुर को इस चाण्डाल चौकड़ी के मनसूबे मालूम थे। विदुर जी ने युधिष्ठिर को 'लाख' के घर का भेद बतला दिया था इस कारण पाण्डव जलने से बच गये।

अर्जुन की मत्स्य वेध विद्या में बड़ी प्रशंसा की जाती थी। कर्ण का पाण्डवों ने अपमान किया, इसलिए वह द्रोपदी से छल करने को उद्यत हुआ। राजसभा ने निर्णय लिया राजा युधिष्ठिर को होना चाहिये। धृतराष्ट्र ने यह अधिकार छीन लिया। इससे पाण्डवों को बड़े कष्ट झेलने पड़े। जब पाण्डवों का भाग्योदय हुआ राजसूय यज्ञ रचा। राजसूय यज्ञ में सैंकड़ों मनुष्य आये थे। मय ने ऐसी चतुरता की कि स्थल में जल का सन्देह होता था। दुर्योधन ने सचमुच जल समझ अपने कपड़े समेट लिए। यह देख भीमसैन मुस्कराया और कह दिया अन्धे

का अन्धा ही पैदा हुआ। कनक शास्त्री ने उसे भड़का दिया। अर्जुन और कृष्ण जी ने दुर्योधन को समझा बुझा दिया। इसके बाद द्यूत क्रीड़ा में युधिष्ठिर को फंसा वनवास और अज्ञातवास दिया। कुरु वंश में फूट पैदा हो गई।

स्वार्थ और विद्रोह की बुद्धि ने लोगों को अन्धा बना दिया। भीष्म जैसे विद्वान् भी पक्षपात के रोग से ग्रस्त हो गये, उनको उचित था मध्यस्थ होकर न्याय करना। इस प्रकार बुद्धि भ्रष्ट होने से भीष्म, द्रोण, दुर्योधन आदि कौरव एक ओर हो गये। पाण्डव दूसरी ओर। बड़ा भारी युद्ध हुआ। इस युद्ध में कौरवों की ओर से 2 महारथी (1) कृपाचार्य (2) अश्वत्थामा और छः पाण्डवों की ओर से अर्थात् 5 पाण्डव छठे कृष्ण जी जीवित रहे थे शेष सबका नाश हो गया। इस युद्ध से आर्यों का प्राचीन वैभव सदा के लिए अस्त हो गया। तत्पश्चात् कनक शास्त्री जैसे शुद्र बुद्धि लोग धर्माधर्म का निर्णय करने लगे और आपसी फूट स्वार्थ से कुरु-कुल का नाश हो गया। कृष्ण जी द्वारिका में राज्य करने लगे। प्रमाद और विषयासक्ति के कारण आपसी फूट से आपस में लड़ मरकर थोड़े ही समय में यादव कुल का भी नाश हो गया। प्रमादवश बलदेव मद्य पीने लगा और डूबकर मर गया। ऐसे महामूर्ख जहां रह गये हों वहां श्रीकृष्ण जी जैसे सत्पुरुषों की कौन सुने। इस प्राचीन आर्यों के युद्ध के पश्चात् केवल स्त्रियां शेष रह गईं। राजसभा, धर्मसभा, विद्यासभा तीनों डूब गईं। केवल राजा की इच्छा के अनुसार सब राज्य व्यवस्था होने लगी। व्यास, जैमिनि, वैशम्पायन आदि महर्षि नहीं रहे। चक्रवर्ती राज्य नष्ट होकर यत्र तत्र माण्डलिक राज्य स्थापित हो गये। ब्राह्मण लोगों में विद्या की कमी आ गई, अभिमान बढ़ता चला गया।

शरीर - इन्द्रियाँ

प्रश्न २५६ शरीर में कुल कितनी इन्द्रियां हैं? उनके नाम बतायें।

उत्तर शरीर में कुल ग्यारह इन्द्रियां हैं (१) पांच कर्मेन्द्रियां (२) पांच ज्ञानेन्द्रियां (३) मन।

प्रश्न २६० मन का मुख्य कार्य क्या है?

उत्तर संकल्प और विकल्प करना मन का मुख्य कार्य है।

प्रश्न २६१ पांच ज्ञानेन्द्रियों के नाम एवं उनके कार्य बतायें

उत्तर

इन्द्रिय	कार्य
घ्राण	गंध लेना
रसना	स्वाद लेना
चक्षु	देखना
श्रोत्र	सुनना
त्वचा	स्पर्श करना

प्रश्न २६२ पांच कर्मेन्द्रियों के नाम एवं उनके कार्य लिखो।

उत्तर

इन्द्रिय	कार्य
हस्त	आदान-प्रदान (लेना-देना)
पाद	चलना
जिह्वा	बोलना, भोजन करना
उपस्थ	मूत्रत्याग करना
गुदा	मलत्याग

प्रश्न २६३ मन की उत्पत्ति किससे होती है?

उत्तर मन की उत्पत्ति अहंकार नामक तत्व से होती है।

प्रश्न २६४ मन की कितनी अवस्थाएं होती हैं?

उत्तर पांच (१) क्षिप्त (२) मूढ़ (३) विक्षिप्त (४) एकाग्र (५) निरुद्ध।

प्रश्न २६५ मन में उठने वाले विचार अर्थात् वृत्तियां कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तर पांच (१) प्रमाण वृत्ति (२) विपर्यय वृत्ति (३) विकल्प वृत्ति (४) निद्रा वृत्ति (५) स्मृति वृत्ति

प्रश्न २६६ मन के दोष कितने हैं?

उत्तर तीन (१) राग (२) द्वेष (३) मोह

प्रश्न २६७ मन को शुद्ध करने के क्या-क्या उपाय हैं?

उत्तर (१) शुद्ध ज्ञान प्राप्त करना (२) धर्म कार्य करना (३) ईश्वर की उपासना करना।

प्रश्न २६८ मन को एकाग्र करने के उपाय कौन से हैं?

उत्तर ईश्वर का चिन्तन करना व उसकी आज्ञाओं का पालन करना अर्थात् योगाभ्यास करना तथा गायत्री आदि मंत्रों का जाप करना।

प्रश्न २६६ मन अशुद्ध कैसे होता है?

उत्तर मांसाहार, नशा करने तथा अश्लील साहित्य आदि के पढ़ने से मन अशुद्ध हो जाता है एवं वैर-विरोध, झूठ बोलने आदि से भी मन अशुद्ध होता है।

प्रश्न २७० मानसिक तनाव को कैसे दूर कर सकते हैं?

उत्तर अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करके, बहुत से काम एक साथ आरम्भ न करके, अपनी क्षमता से अधिक कार्य स्वीकार न करके, अपनी इच्छाओं को कम करके तथा ईश्वर का ध्यान करके मानसिक तनाव को दूर कर सकते हैं।

प्रश्न २७१ ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां किससे जुड़कर कार्य करती हैं?

उत्तर ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां मन से जुड़कर कार्य करती हैं।

प्रश्न २७२ क्या इन्द्रियों के सुखों को भोगकर उनसे तृप्त होना अच्छा है दमन करना अच्छा नहीं?

उत्तर सारी दुनियां इन्द्रियों के सुखों को भोगकर तृप्त करने की कोशिश कर रही है। क्षणिक सुखों को भोगकर क्या किसी की तृप्ति हो गयी। पिछले सैंकड़ों हजारों जन्मों से आज तक तो तृप्ति हुई नहीं। भोगों को

भोगने से इच्छायें शान्त नहीं होती बल्कि भड़कती हैं। इसलिए इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना अच्छा है।

प्रश्न २७३ आत्मा और शरीर एक दूसरे से घुले-मिले हैं इनको अलग कैसे मानें।

उत्तर प्रश्न उठता है क्या आत्मा उत्पन्न होती है जवाब है नहीं। क्या शरीर उत्पन्न होता जवाब है हाँ। आत्मा न उत्पन्न होती है न मरती है। इसी प्रकार आत्मा बूढ़ी नहीं होती, शरीर बूढ़ा हो जाता है। आत्मा आँख से नहीं दिखती शरीर आँख से दिखता है। अतः दोनों अलग-अलग हैं।

विद्या - अविद्या -मुक्ति

प्रश्न २७४ मुख्य रूप से शरीरधारी कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर चार प्रकार के शरीरधारी होते हैं - (1) अण्डज जैसे पक्षी सरी सृप (2) जरायुज जैसे मनुष्य, पशु (3) स्वेदज जैसे जूं, लाख (4) उद्भिज्ज जैसे पेड़, पौधे।

प्रश्न २७५ अविद्या और विद्या किसे कहते हैं?

उत्तर जो अनित्य संसार देह आदि में नित्य, अशुचि अर्थात् मलमूत्रमय शरीर, चोरी मिथ्या-भाषण आदि अपवित्र में शुचि (पवित्र), अत्यन्त विषय सेवन रूप दुःख में सुख तथा अनात्म जड़ पदार्थों, मूर्तियों आदि में आत्म भाव रखना **अविद्या** कहाती है और अनित्य में अनित्य, नित्य में नित्य, अशुचि में अशुचि, शुचि में शुचि, दुःख में दुःख, सुख में सुख की तथा अनात्मा में अनात्मा, आत्मा में आत्मा मानना समझना तथा व्यवहार में लाना **विद्या** कहलाती है।

प्रश्न २७६ मुक्ति किसे प्राप्त नहीं होती?

उत्तर जो बद्ध है अर्थात् अधर्म अज्ञान में फंसा हुआ है।

प्रश्न २७७ मुक्ति के क्या साधन हैं?

उत्तर जो मुक्ति चाहे उसे मिथ्या-भाषण आदि पाप कर्मों को छोड़ना चाहिए

क्योंकि इसका फल दु:ख है और जो सुख को प्राप्त करना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे क्योंकि दु:ख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल है। सत्य पुरुषों के संग से ही विवेक, सत्यासत्य, धर्माधर्म का निश्चय होता है।

प्रश्न २७८ क्या मुक्ति के लिए मनुष्य योनि अनिवार्य है?

उत्तर मुक्ति केवल मनुष्य योनि में ही होती हैं मनुष्य शरीर में भी केवल संन्यासी को मोक्ष होता है। शेष योनि तो केवल भोग योनी है।

प्रश्न २७६ आज पचहत्तर प्रतिशत व्यक्ति खराब कार्य करते हैं फिर भी मनुष्यों की संख्या क्यों बढ़ रही है?

उत्तर मुक्ति से लौटना एक कारण, मनुष्य से मनुष्य बनना दूसरा कारण, मनुष्यों से ज्यादा अच्छे कर्म करके फिर अच्छे परिवार में जन्म लेना, तीसरा कारण, कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी से लौटकर बनना चौथा कारण और किसी अन्य लोक लोकान्तर यहां परिवर्तित होकर मनुष्य जन्म लेना, यह मनुष्य की संख्या बढ़ने का पाँचवा कारण है। ऐसे अन्य भी कई कारण हैं जिनसे जनसंख्या बढ़ती हैं चौथा कारण ज्यादा ठीक लग रहा है। पूरा हिसाब बताना मनुष्य के बस की बात नहीं है। ईश्वर ही सब जानता है।

प्रश्न २८० शरीर कितने हैं?

उत्तर (1) स्थूल शरीर जो प्रत्यक्ष दीखता है। (2) पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच सूक्ष्म-भूत, मन, बुद्धि सतरह तत्त्वों का समुदाय है। सूक्ष्म शरीर कहाता है। सूक्ष्म शरीर जो जन्म मरण आदि में भी जीव के साथ रहता है इसके 2 भेद हैं। एक भौतिक जो सूक्ष्म-भूतों के अंशों से **बना दूसरा स्वाभाविक** जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है। यह दोनों शरीर मुक्ति में भी जीव के साथ रहते हैं इसी से जीव मुक्ति को सुख भोगता है। **तीसरा कारण** जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है। वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु (व्यापक) और सभी जीवों के लिए है। चौथा तुरीय शरीर वह कहलाता है जिसमें समाधि में परमात्मा के आनन्द स्वरूप में मग्न जीव होते हैं।

माता-पिता के गुण-कर्म-स्वभाव में समानता होने से श्रेष्ठ गुण सम्पन्न सन्तान उत्पन्न होती है।

प्रश्न २८१ शरीर अर्थात् जीव के पंचकोषों का विवेचन करो।

उत्तर एक 'अन्नमय' जो त्वचा से लेकर अस्थि पर्यन्त का समुदाय है पृथ्वीमय है। दूसरा 'प्राणमय' जिसमें प्राण अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता है,'अपान' जो बाहर से भीतर आता,'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुंचाता,'उदान' जिसे कंठस्थ अन्न-पान खेंचा जाता है और बल पराक्रम होता है 'व्यान' जिससे सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा 'मनोमय' जिसमें मन के साथ अहंकार, वाक, पाद, पायु, पाणि, उपस्थ पांच कर्मेन्द्रियां हैं। चौथा 'विज्ञानमय' जिसमें बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ये पांच ज्ञानेन्द्रियं जिनसे जीव ज्ञान आदि व्यवहार करता है। पांचवा 'आनन्दमय' कोष जिसमें प्रीति, प्रसन्नता, न्यूनआनन्द, अधिकानन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है। ये पांच कोष कहलाते हैं। इन ही से जीव सभी प्रकार के कर्म, उपासना, ज्ञानादि व्यवहारों को करता है। तीन अवस्था, जागरित, स्वप्न, सुषप्ति कहलाती है। जागरित अवस्था में जीव का सम्बन्ध मन बुद्धि इन्द्रियों से बना रहता है। दूसरा स्वप्न जिसमें मन बुद्धि इन्द्रियों के मध्य सम्बन्ध नहीं रहता किन्तु मन का व्यापार चलता है स्वप्न दिखलाई देते हैं। तीसरा सुषुप्ति जिसमें मन का सम्बन्ध जीव के साथ नहीं रहता। अत: स्वप्न नहीं दीखते।

प्रश्न २८२ अधार्मिक कार्य करने से मन में भय शंका उत्पन्न होती है धार्मिक कार्य करने में आनन्द उत्साह क्यों प्राप्त होता है?

उत्तर आत्मा जब इन्द्रियों और मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे या बुरे कर्मों में लगता है तभी वह बर्हिमुख हो जाता है। उसी समय भीतर से धार्मिक कार्य में आनन्द, उत्साह, निर्भयता और अधार्मिक कार्यों में भय, लज्जा, शंका उत्पन्न होती है। यह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल बर्तता है, वही मुक्तिजन्य सुखों को प्राप्त होता है जो इसके विपरीत बर्तता है, वह दु:खों को भोक्ता है।

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है।

प्रश्न २८३ विवेक किसे कहते हैं?

उत्तर विवेक से सत्यासत्य को जानना होता है उसमें से सत्याचरण का ग्रहण और असत्य आचरण का त्याग करना विवेक है। पृथ्वी से परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव को जानकर इसकी आज्ञा का पालन और उपासना में लगे रहना। उसके विरुद्ध न चलना, सृष्टि से उपकार लेना विवेक कहलाता है।

प्रश्न २८४ अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले को कौन सी छः सम्पत्तियां अवश्य प्राप्त करनी चाहिएं।

उत्तर (१) **शम** - अपने आत्मा और अन्त:करण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में सदा प्रवृत्त रखना।

(२) **दम** - इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचार आदि बुरे कार्यों से हटाकर शुभ कर्मों में प्रवृत्त करना, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना।

(३) **उपराति** - दुष्ट जनों से सदैव दूर रहना।

(४) **तितिक्षा** - निन्दा, स्तुति, आर्थिक-हानि, लाभ कितना ही क्यों न हो, कितना ही मान-अपमान हो तो भी हर्ष, शोक छोड़ मुक्ति के साधनों में लगे रहना।

(५) **श्रद्धा** - जो वेदादि सत्य शास्त्र और पूर्ण वेदज्ञ विद्वान्, आप्त पुरुष सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना।

(६) **समाधान** - चित्त की एकाग्रता से ईश्वर का साक्षात्कार करना उपरोक्त उपलब्धियां प्राप्त होने पर मनुष्य मुक्ति की ओर बढ़ता चला जाता है।

प्रश्न २८५ मुमुक्षत्व क्या है?

उत्तर जैसे भूख-प्यास लगने पर अन्न, जल के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे मुक्ति के साधन अर्थात् ईश्वर प्राप्ति के लिए मन में तड़फन होना और कुछ भी अच्छा न लगना मुमुक्षत्व कहलाता है।

प्रश्न २८६ वैराग्य किसे कहते हैं?

उत्तर ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को ठीक प्रकार समझकर, उसकी आज्ञा का पालन करते हुए उसको प्राप्त करने की मन में तीव्र इच्छा होने पर संसार को बाधक वस्तुएं, धन, सम्पत्ति तथा मान अहंकार आदि से अपने को पृथक् रखना वैराग्य कहलाता है अर्थात् भौतिक पदार्थों में मन को न लगाना।

प्रश्न २८७ मुक्ति किसे कहते हैं?

उत्तर दु:खों से छूटने की इच्छा को मुक्ति कहते हैं।

प्रश्न २८८ मुक्ति में जीव दु:ख से छूटकर किसको प्राप्त होते हैं और कहाँ रहते हैं?

उत्तर मुक्त जीव सुख को प्राप्त होकर ब्रह्म में रहते हैं

प्रश्न २८६ ब्रह्म कहां है और वह मुक्त जीव एक ठिकाने रहता है व स्वेच्छाचारी होकर सर्वत्र विचरता है।

उत्तर जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है उसी में मुक्त जीव को कही आने जाने की रुकावट नहीं। आनन्द पूर्वक सर्वत्र विचरता है।

प्रश्न २६० मुक्त जीव का स्थूल शरीर होता है या नहीं ?

उत्तर स्थूल शरीर नहीं रहता।

प्रश्न २६१ मुक्त जीव सुख और आनन्द का भोग कैसे करता है?

उत्तर मुक्त जीव उसके सत्य संकल्पादि स्वाभाविक गुण सामर्थ्य सब रहते हैं। मोक्ष में भौतिक शरीर और इन्द्रिय के गोलक साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक गुण रहते हैं। जब सुनना चाहता है कान, स्पर्श करना चाहता है त्वचा, देखने के संकल्प से आँख, स्वाद के अर्थ जीभ, गंध के लिए नाक, संकल्प विकल्प करते समय मन, निश्चय करने के लिए बुद्धि, स्मरण करने के लिए चित्त और अहंकार के अर्थ अहंकार एवं अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में जाता है और संकल्प मात्र शरीर होता है। जैसे शरीर के आधार रहकर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है और वैसे अपनी शक्ति से मुक्ति में सब आनन्द

सन्तान को प्रजा तथा सन्तान का पालन करने वाले पिता को प्रजापति कहा जाता है।

भोग लेता है। मुक्त जीव शुद्ध दिव्य नेत्र और शुद्ध मन से कामों को देखता, प्राप्त होता हुआ स्मरण करता है। मुक्त जीव जो संकल्प करते हैं वह लोक और वह काम प्राप्त होता है और वे मुक्त जीव स्थूल शरीर छोड़कर संकल्पमय शरीर से आकाश में परमेश्वर में विचरते हैं, क्योंकि जो शरीर वाले हैं वे सांसारिक दु:खों से रहित नहीं हो सकते।

प्रश्न २६२ जन्म एक है या अनेक?

उत्तर अनेक।

प्रश्न २६३ जो अनेक हो तो पूर्व जन्म और मुत्यु की बातें याद क्यों नहीं रहती?

उत्तर जीव अल्पज्ञ है, विकालदर्शी नहीं इसलिए स्मरण नहीं रहता और जिस मन से ज्ञान करता है वह भी एक समय में दो ज्ञान नहीं कर सकता। भला पूर्व जन्म की बातें तो क्या याद रहेंगी। पांचवे वर्ष से पूर्व की बातें है उनका याद क्यों नहीं रहता।

प्रश्न २६४ मुक्ति एक जन्म में होती है या अनेक जन्मों में?

उत्तर अनेक जन्मों में मुक्ति होती है।

प्रश्न २६५ मुक्ति में जीव परमेश्वर में मिल जाता है या पृथक रहता है?

उत्तर प्रथक् रहता है यदि जीव मुक्ति में परमेश्वर में मिल जाये तो सुख कौन भोगेगा।

प्रकृति

प्रश्न २६६ क्या मूल-प्रकृति की उत्पत्ति और विनाश कभी होता है?

उत्तर मूल-प्रकृति की उत्पत्ति और विनाश कभी नहीं होता है।

प्रश्न २६७ सत्त्वगुण, रजोगुण तथा तमोगुण के स्वरूप को बतलाएं।

उत्तर सत्त्वगुण आकर्षण तथा प्रकाश को रजोगुण चंचलता तथा दु:ख को उत्पन्न करता है तथा तमोगुण मूढ़ता (मोह) तथा आलस्य को उत्पन्न करता है।

प्रश्न २९८ क्या प्रकृति में जीवात्माओं को उत्पन्न करने का सामर्थ्य है?

उत्तर प्रकृति में जीवात्माओं को उत्पन्न करने का सामर्थ्य नहीं है।

प्रश्न २९९ क्या प्रकृति से जीवों के समस्त दु:ख दूर हो सकते हैं?

उत्तर प्रकृति से जीवों के समस्त दु:ख दूर नहीं हो सकते हैं।

प्रश्न ३०० संसार में दु:ख कितने प्रकार का है?

उत्तर संसार में दु:ख तीन प्रकार का है (1) आध्यात्मिक (2) आधिदैविक (3) आधिभौतिक।

प्रश्न ३०१ आध्यात्मिक दु:ख किसे क़हते हैं?

उत्तर स्वयं की त्रुटि (मूर्खता) से प्राप्त होने वाले दु:ख को आध्यात्मिक दु:ख कहते हैं।

प्रश्न ३०२ आधिदैविक दु:ख किसे कहते हैं?

उत्तर बाढ़, भूकम्प, अकाल आदि प्राकृतिक विपदाओं से प्राप्त होने वाले दु:ख को आधि दैविक दु:ख कहते हैं।

प्रश्न ३०३ आधि भौतिक दु:ख किसे कहते हैं?

उत्तर अन्य पशु-पक्षी मनुष्य आदि जीवों से प्राप्त होने वाले दु:ख को आधिभौतिक दु:ख कहते हैं।

प्रश्न ३०४ सत्त्व, रज, तम वास्तव में गुण हैं या द्रव्य हैं?

उत्तर सत्त्व, रज, तम वास्तव में द्रव्य हैं किन्तु सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण नाम से जाने जाते हैं।

प्रश्न ३०५ क्या प्रकृति के तीनों (सत्व, रज, तम) परमाणु एक ही स्वरूप वाले हैं?

उत्तर नहीं, प्रकृति के तीनों परमाणु (सत्व, रज, तम) अलग-अलग स्वरूप = अलग-अलग गुण, कर्म, स्वभाव, रंग, रूप, आकार, भार वाले हैं। हाँ सत्व नामक परमाणु एक ही स्वरूप वाले होते हैं रज नामक परमाणु सब एक ही स्वरूप वाले होते हैं। तम नामक परमाणु सब एक ही रूप वाले होते हैं।

प्रश्न ३०६ क्या ईश्वर की सहायता के बिना पांच महाभूतों से बने रज-वीर्य मिलने से स्वत: शरीर का निर्माण हो सकता है?

उत्तर नहीं, बिना ईश्वर की सहायता से पांच महाभूतों से बने रज-वीर्य के मिलने से स्वत: शरीर का निर्माण नहीं हो सकता है।

प्रश्न ३०७ प्रकृति के साथ जीव क्यों जुड़ता है और कब जुड़ता है?

उत्तर प्रकृति के साथ जीव अपनी अविद्या के कारण जुड़ता है तथा सृष्टि के आरम्भ में जुड़ता है और मुक्ति से लौटने वाला जीव सृष्टि के मध्य में भी प्रकृति से जुड़ता है।

प्रश्न ३०८ जीवात्मा प्रकृति के बंधन से कब छूटता है?

उत्तर जीवात्मा जब प्रकृति और प्राकृतिक पदार्थों के प्रति आसक्ति को समाप्त कर पूर्ण वैराग्य को प्राप्त कर लेता है अर्थात् राग-द्वेष आदि समस्त क्लेशों को समाधि लगाकर नष्ट कर देता है तब प्रकृति के बन्धन से छूट जाता है।

प्रश्न ३०९ अन्न (भोजन) कितने प्रकार का होता है?

उत्तर अन्न तीन प्रकार का होता है - (१) सात्विक (२) राजसिक (३) तामसिक।

प्रश्न ३१० क्या अन्न का प्रभाव मन पर पड़ता है?

उत्तर हां, सात्विक अन्न खाने से मन शुद्ध होता हे, राजसिक अन्न से मन में चंचलता आती है और तामसिक अन्न मोह, आलस्य आदि उत्पन्न करता है।

प्रश्न ३११ विषय-सुख कैसा है?

उत्तर विषय-सुख दु:ख-मिश्रित है उससे तृप्ति नहीं होती।

प्रश्न ३१२ रचना कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर रचना दो प्रकार की होती है। एक जड़, दूसरी चेतन।

प्रश्न ३१३ सृष्टि रचना का क्या उद्देश्य है?

उत्तर जीवों के कर्मों का भोग व मुक्ति सिद्धि ही इसका प्रयोजन है।

प्रश्न ३१४ प्रकृति जड़ है या चेतन?

उत्तर प्रकृति स्वभाव से जड़ है।

प्रश्न ३१५ प्रकृति किससे बनी है?

उत्तर प्रकृति सत्त्व , रज व तम तीन की साम्यावस्था को कहते हैं। प्रकृति से महत्तत्व (बुद्धि), उससे अहंकार, उससे सूक्ष्म-भूत, दस इन्द्रिय और मन का निर्माण होता है।

प्रश्न ३१६ प्रकृति को कारण-कार्य रूप में कौन लाता है?

उत्तर परमात्मा ही अपनी सर्वज्ञता से कार्य-कारण रूप में लाता है।

प्रश्न ३१७ प्रकृति का अन्तिम कार्य क्या है?

उत्तर पंच महाभूत उसका अंतिम कार्य है।

प्रश्न ३१८ क्या अभाव से भाव उत्पन्न होता है?

उत्तर जिसका अस्तित्व कभी न हो उससे कार्य कुछ भी नहीं बनता अर्थात कारण के अभाव में कार्य नहीं बनता।

प्रश्न ३१६ क्या कार्य में कारण के गुण आते हैं या भिन्न होते हैं?

उत्तर कारण के गुण ही कार्य में आते हैं, इससे भिन्न गुण कभी नहीं होते। जैसे बीज से वृक्ष।

प्रश्न ३२० क्या कार्य के नष्ट होने पर कुछ नहीं बनता?

उत्तर कभी भी किसी वस्तु का अभाव नहीं होता, कार्य से कारण में बदल जाता है।

प्रश्न ३२१ कारण से कार्य और कार्य से कारण क्या अपने आप हो जाता है?

उत्तर अपने आप होना असंभव है। चेतन, ज्ञानवान् के बिना ऐसा कभी नहीं होता।

प्रश्न ३२२ क्या पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रादि अपने आप ही बनते हैं?

प्रश्न ३२३ नहीं नहीं! जैसे मिट्टी से ईंट अपने आप नहीं बनती, उसे चेतन ज्ञानवान मनुष्य बनाता है इसी प्रकार पृथ्वी आदि रचने वाला भी सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक ईश्वर है।

विवाहित जीवन के पवित्र दायित्व और कर्तव्यों से डरो नहीं, उन्हें निष्ठापूर्वक निभाओ।

प्रश्न ३२४ जगत् के कारण कितने हैं?

उत्तर तीन, एक निमित्त, दूसरा उपादान व तीसरा साधारण कारण। साधारण कारण उसको कहते हैं जो बनाने में साधन और साधारण निमित हो।

प्रश्न ३२५ निमित्त-कारण किसे कहते हैं?

उत्तर निमित्त-कारण उसको कहते हैं जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने, जो आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को बना देवे।

प्रश्न ३२६ उपादान-कारण किसे कहते हैं?

उत्तर उपादान-कारण उसको कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने वही अवस्थान्तर रूप होके बने और बिगड़े भी। उपादान-कारण प्रकृति परमाणु जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हैं, वह जड़ होने से न आप बन सकती है और न बिगड़ सकती है। किन्तु दूसरे के बनाने से बनती और बिगाड़ने से बिगड़ती है। कहीं-कहीं जड़के निमित्त बन और बिगड़ जाती है। जैसे परमेश्वर रचित बीज पृथ्वी में गिरने और जल पाने से वृक्षाकार हो जाते हैं और अग्नि आदि जड़ के संयोग से बिगड़ भी जाते हैं। नियमपूर्वक बनाना बिगड़ना परमेश्वर और जीव के आधीन है।

प्रश्न ३२७ निमित्त-कारण कितने प्रकार का होता है?

उत्तर निमित्त-कारण 2 प्रकार का होता है। एक सब सृष्टि को बनाने, धारण करने और प्रलय करने तथा उसको व्यवस्था में रखने वाला मुख्य निमित्त कारण परमात्मा। दूसरा परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेकविध कार्यान्तर बनाने वाला साधारण-निमित्त कारण जीव।

प्रश्न ३२८ जब कोई वस्तु बनाई जाती है तब किन साधनों की आवश्यकता होती है?

उत्तर जैसे घड़े को बनाने वाला कुम्हार निमित्त, मिट्टी उपादान और दण्ड चक्र आदि सामान्य निमित्त-कारण होते हैं। इन तीन कारणों के बिना कोई भी वस्तु नहीं बन सकती और न बिगड़ सकती।

संस्कार

प्रश्न ३२६ संस्कार किसे कहते हैं?

उत्तर जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम बनते हैं उसको संस्कार कहते हैं। संस्कार १६ प्रकार के होते हैं - (१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) अन्नप्राशन (७) निष्क्रमणम् (८) चूड़ाकर्म (६) कर्णवेध (१०) उपनयन (११) वेदारम्भ (१२) समावर्तन (१३) विवाह (१४) वानप्रस्थ (१५) संन्यास (१६) अन्त्येष्टि।

प्रश्न ३३० समाज में संन्यासियों की क्या आवश्यकता है? क्या वे समाज पर भार रूप नहीं हैं?

उत्तर जैसे शरीर में सिर की आवश्यकता होती है वैसे ही समाज के सुसंचालन हेतु धार्मिक, विद्वान्, तपस्वी, त्यागी संन्यासियों की आवश्यकता है।

प्रश्न ३३१ गर्भस्थ शिशु के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु कौन से संस्कार किये जाते हैं?

उत्तर गर्भस्थ शिशु के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु पुंसवन और सीमन्तोन्नयन संस्कार किये जाते हैं।

प्रश्न ३३२ विभिन्न संस्कारों में किये जाने वाले विविध कर्मकाण्डों से क्या तात्पर्य/अर्थ होता है?

उत्तर विभिन्न संस्कारों में किये जाने वाले विविध कर्मकाण्डों में संकेत अथवा प्रतीक छिपे होते हैं। आगे जीवन में कैसे चलना होता है उसका बोध मिलता है। कुछ व्रत, प्रतिज्ञाओं का भी धारण होता है। इन कर्मकाण्डों से सदाचार, शिष्टाचार सिखाया जाता है।

पति-पत्नी दोनों अपने में महान हैं परन्तु दोनों एक दूसरे के लिए ...

प्रश्न ३३३ संसार में मृतक देह की अन्तिम विधि के लिए कौन-कौन सी पद्धतियां प्रचलित हैं?

उत्तर संसार में मृतक देह की अंतिम विधि के लिए मुर्दे को गाड़ना, नदी में बहाना, जंगल-पर्वत आदि स्थानों में खुला छोड़ देना तथा जलाना आदि पद्धतियां प्रचलित हैं।

प्रश्न ३३४ इनमें से सर्वश्रेष्ठ विधि कौन सी हैं और क्यों?

उत्तर इनमें सर्वश्रेष्ठ मुर्दे को जलाना है क्योंकि इससे जमीन, पानी, हवाआदि - पर्यावरण की बहुत ही कम हानि होती है। थोड़ी सी भूमि में लाखों, करोड़ों मृतदेहों के अन्तिम संस्कार किये जा सकते हैं।

प्रश्न ३३५ दूर विवाह करने में कौन गुण हैं?

उत्तर (१) एक जो बालक बाल्यावस्था में निकट रहते हैं परस्पर लड़ाई, क्रीड़ा और प्रेम करते हैं, एक दूसरे के गुण-दोषों को जानते होने से दूर विवाह उत्तम है।

(२) जैसे पानी में पानी मिलाने से विलक्षण गुण नहीं होता वैसे ही पिता के गोत्र व माता के कुल में विवाह होने में धातुओं के अदल-बदल नहीं होने से उन्नति नहीं होती।

(३) जैसे दूध में मिश्री और सौंठ आदि के मिलाने से उत्तमता होती है वैसे ही भिन्न गोत्र माता-पिता कुल से पृथक स्त्री-पुरुषों का विवाह होना उत्तम है।

(४) जैसे एक देश में कोई रोग हो वह दूसरे देश में वायु और खान-पान के बदलने से रोग रहित होता है वैसे ही दूर देश के विवाह होने में उत्तमता है।

(५) निकट संबंध करने में एक-दूसरे के निकट होने से सुख और दुःख का भान और विरोध होना भी संभव है। दूर देश में नहीं। जैसे आपस में थोड़ा सा भी विवाद होने पर तुरन्त अपने मायके चले जाना। दूर देश के विवाह में प्रेम की डोर लम्बी बह जाती है।

(६) कन्या का नाम दुहिता इसी कारण है। इसका विवाह दूर देश में होने से हितकारी होता है।

(७) कन्या के पिता के कुल में गरीबी होना भी संभव है क्योंकि जब-जब कन्या पिता के कुल में आयेगी तब-तब इसको कुछ न कुछ देना ही होगा।

(८) निकट होने से एक-दूसरे को अपने-अपने पिता के कुल के सहाय का घमण्ड हो जाता है इत्यादि कारणों से समीप देश में विवाह करना अच्छा नहीं।

प्रश्न ३३६ विवाह माता-पिता के आधीन् होना चाहिए या लड़का-लड़की के आधीन रहे?

उत्तर लड़का-लड़की के आधीन विवाह होना उत्तम है। जो माता-पिता विवाह करना कभी विचारें तो भी लड़का-लड़की की प्रसन्नता के बिना नहीं करना चाहिए। क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता है और संतान उत्तम होते हैं। अप्रसन्नता के विवाह में नित्य क्लेश रहता है। विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है, उनमें जो प्रसन्नता रहे तो उन्हीं को सुख और विरोध में उन्हीं को दु:ख होता है।

मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है, इसमें मेरी अवस्था एक माली की है। पौधों में खाद डालते समय राख और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है, परन्तु राख और धूल चाहे जितनी पड़े मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं, परन्तु वाटिका हरी-भरी रहे और निर्विघ्न फले-फूले।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

भक्ष्य - अभक्ष्य

प्रश्न ३३७ कैसे पदार्थ भक्ष्य (खाने योग्य) होते हैं?

उत्तर शुद्ध सात्विक, शाकाहारी (दूध, घी, अन्न आदि से निर्मित) भोज्य पदार्थ जो न्यायपूर्वक, बिना झूठ, छल, कपट हिंसा, रिश्वत आदि के प्राप्त होते हैं वे ही भक्ष्य (खाने योग्य) होते हैं।

प्रश्न ३३८ क्या साग सब्जी खाना भी पाप है क्योंकि जिस प्रकार पशु-पक्षी, बकरी, मुर्गी आदि में जीव होता हे वैसे ही साग-सब्जी में भी जीव होता है।

उत्तर जी नहीं, साग-सब्जी खाना पाप नहीं है क्योंकि वेद में साग-सब्जी उगाकर (कृषि कर) उन्हें खाने का विधान है जबकि पशु-पक्षी आदि जीवों को मारकर खाना वेद में पाप बतलाया है।

प्रश्न ३३९ क्या अंडा माँस मछली आदि के सेवन बिना बलवान, बुद्धिमान् नहीं बन सकते हैं?

उत्तर बन सकते हैं, अंडा, माँस, मछली खाये बिना भी हमारे इतिहास में वीर हनुमान, वीर भीमसेन, स्वामी दयानन्द, प्रो. राममूर्ति आदि अनेक बलवान महापुरुष हुए हैं। जैसे घोड़ा, हाथी आदि प्राणी शाकाहारी होते हुए भी अत्यन्त बलवान होते हैं।

प्रश्न ३४० माँस खाने वाले को ही पाप लगता है या अन्य सहयोगियों को भी?

उत्तर माँसाहारी सहित 8 प्रकार के लोगों को पाप लगता है, केवल माँसाहारी को नहीं, माँस पकाने वाला, माँस परोसने वाला, पशु हत्या करने की आज्ञा देने वाला, हत्या करने वाला, माँस बेचने वाला, खरीदने वाला, माँसाहार का समर्थन करने वाला इत्यादि भी पाप का भागी बनता है।

प्रश्न ३४१ क्या माँस या अण्डा खाने वाले को पाप लगेगा ?

उत्तर हां, माँस हो या अण्डा खाने वाले को पाप लगेगा क्योंकि शास्त्र में भी इसका निषेध किया है।

प्रश्न ३४२ क्या माँस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन है?

उत्तर मौँस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है, क्योंकि ....

(१) मनुष्य के दाँतों की बनावट माँसाहारियों की तरह नहीं है। कुत्ते आदि माँसाहारियों के दाँत नुकीले होते हैं। मनुष्य के दाँत सर्वथा भिन्न होते हैं।

(२) मांसाहारियों की भोजन नालिका छोटी होती है। मनुष्य भोजन नलिका उसके शरीर से बारह गुणी होती है।

(३) मनुष्य के हाथों और जानवरों के पंजे में अन्तर है, इसलिए मनुष्य को शिकार करने के लिए हथियार की जरूरत पड़ती है।

(४) दोनों के मुँह के रस में अन्तर है।

(५) मांसाहारी जीभ से पानी पीते हैं।

(६) वेद भी जीवों की हिंसा की आज्ञा नहीं देते।

कर्म और कर्मफल

प्रश्न ३४३ कर्मों का फल कौन देता है? क्या केवल ईश्वर ही देता है या राजा, न्यायाधीश, समाज के व्यक्ति भी देते हैं, या स्वयं भी ले सकता है?

उत्तर कर्मों का फल मुख्य रूप से ईश्वर ही देता है किन्तु परिवार, समाज और राष्ट्र में सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए माता-पिता, गरु-आचार्य, पुलिस-न्यायाधीश, राजा आदि भी दण्ड देते हैं। कुछ कर्मों का फल व्यक्ति स्वयं भी ले सकता है। ईश्वर ने ऐसी व्यवस्था, ऐसा निर्देश कर रखा है।

प्रश्न ३४४ कर्मों का कर्त्ता कौन है? जीवात्मा या मन या इन्द्रियां या शरीर या ईश्वर या अन्य कोई।

उत्तर कर्मों का कर्त्ता जीवात्मा ही है मन, इन्द्रियां, शरीर आदि तो जड़ हैं और कर्म करने के उपकरण (साधन) हैं।

प्रश्न ३४९ **बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति अधिक साधन-सुविधा, सुख सम्पन्न देखे जाते हैं जबकि ऐसे व्यक्ति तो सुख साधन सुविधा रहित दुःखी होने चाहिएं, ऐसा क्यों है?**

उत्तर बुरे कर्म करने वाले साधन सुविधाएं भले ही प्राप्त कर लें लेकिन वे सुखी नहीं हो सकते हैं। उनको सुखी समझना एक भ्रान्ति है। उन्हें उनके बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलता है इस जन्म में या अगले जन्म में।

प्रश्न ३५० **क्या अच्छे तथा बुरे कर्म समान रूप से किये जाएं, तो वे बिना ही फल दिए नष्ट हो जाते हैं?**

उत्तर अच्छे और बुरे कर्म समान रूप से किए जाने पर वे बिना ही फल दिए नष्ट नहीं होते हैं। वैदिक कर्म फल व्यवस्था में प्लस-माइनस, जमा-घटा का सिद्धान्त नहीं है। एक रुपये की चोरी का दण्ड लाख रुपये का दान करने पर भी नष्ट नहीं होता है। जैसे ९ घोड़ों में से ८ बैल नहीं घट सकते इसी प्रकार पुण्य में से पाप नहीं घट सकते।

प्रश्न ३५१ **परिवार का पालक/स्वामी हिंसा, झूठ, चोरी, रिश्वत आदि अनैतिक कर्मों से धन कमाता है, साधन जुटाता है और उनका भोग परिवार के सभी लोग करते हैं तो क्या पाप सभी को लगेगा?**

उत्तर हिंसा आदि अनैतिक साधनों से धन प्राप्त करने वाले कर्त्ता को ही फल मिलता है, जो परिवार के अन्य व्यक्ति हैं जो उसके अधीन हैं, पराधीन हैं उनको फल नहीं मिलता है।

प्रश्न ३५२ **कर्म करने के साधन कितने हैं व कौन-कौन से हैं?**

उत्तर कर्म करने के साधन मुख्य रूप से तीन हैं। (१)मन (२) वाणी (३) शरीर।

प्रश्न ३५३ **मनुष्य शरीर से कितने और कौन-कौन से शुभ (अच्छे) कर्म करता है?**

उत्तर मुख्य रूप से मनुष्य शरीर से तीन प्रकार के अच्छे कर्म करता है - (१) रक्षा करना (२) दान देना (३) सेवा करना।

जिस परिवार में नारी सुखी रहती है, उसमें सदैव सुख की सरिता बहती रहती है।

प्रश्न ३५४ वाणी से किये जाने वाले शुभ (अच्छे) कर्म कितने व कौन-कौन से हैं?

उत्तर वाणी से किये जाने वाले शुभ कर्म शास्त्र में चार प्रकार के बताये गये हैं (१) सत्य बोलना (२) मधुर (मीठा) बोलना (३) हितकर बोलना (४) स्वाध्याय करना।

प्रश्न ३५५ मन से जो अच्छे कर्म किये जाते हैं वे कितने व कौन-कौन से हैं?

उत्तर मन से तीन प्रकार के अच्छे कर्म किये जाते हैं - (१) दया (२) अस्पृहा (निरासक्ता) (३) आस्तिकता।

प्रश्न ३५६ मनुष्य शरीर से बुरे कर्म भी करता है। वे कितने और कौन-कौन से हैं?

उत्तर मनुष्य शरीर से मुख्य रूप से तीन प्रकार के बुरे कर्म करता है - यथा (१) हिंसा करना (२) चोरी करना (३) व्यभिचार करना।

प्रश्न ३५७ मनुष्य वाणी से जो अशुभ कर्म करता है उनकी संख्या शास्त्र में कितनी बताई गई और वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर मनुष्य वाणी से जो अशुभ कर्म करता है, उनकी संख्या शास्त्रानुसार चार है - (१) असत्य (झूठ) बोलना (२) कठोर बोलना (३) अहितकर बोलना (४) व्यर्थ बोलना (असंगत - प्रसंग से बाहर बोलना)।

प्रश्न ३५८ कर्मों का अन्तिम फल किस रूप में मिलता है?

उत्तर कर्मों का अन्तिम फल सुख-दु:ख के रूप में मिलता है।

प्रश्न ३५९ मनुष्य जन्म पाने के लिए कम से कम कितने और कैसे कर्म करने अनिवार्य हैं?

उत्तर कम से कम ५० प्रतिशत पुण्य कर्म होने पर साधारण मनुष्य का जन्म मिलता हैं पचास प्रतिशत से थोड़ी भी कम पुण्य कर्म की मात्रा हुई तो मनुष्य जन्म नहीं मिलेगा अर्थात् मनुष्य जन्म के लिए कम से कम पाप-पुण्य बराबर होने चाहिएं।

भगवान के बाद दूसरा स्थान माता का है।

प्रश्न ३५४ वाणी से किये जाने वाले शुभ (अच्छे) कर्म कितने व कौन-कौन से हैं?

उत्तर वाणी से किये जाने वाले शुभ कर्म शास्त्र में चार प्रकार के बताये गये हैं (१) सत्य बोलना (२) मधुर (मीठा) बोलना (३) हितकर बोलना (४) स्वाध्याय करना।

प्रश्न ३५५ मन से जो अच्छे कर्म किये जाते हैं वे कितने व कौन-कौन से हैं?

उत्तर मन से तीन प्रकार के अच्छे कर्म किये जाते हैं - (१) दया (२) अस्पृहा (निरासक्ता) (३) आस्तिकता।

प्रश्न ३५६ मनुष्य शरीर से बुरे कर्म भी करता है। वे कितने और कौन-कौन से हैं?

उत्तर मनुष्य शरीर से मुख्य रूप से तीन प्रकार के बुरे कर्म करता है - यथा (१) हिंसा करना (२) चोरी करना (३) व्यभिचार करना।

प्रश्न ३५७ मनुष्य वाणी से जो अशुभ कर्म करता है उनकी संख्या शास्त्र में कितनी बताई गई और वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर मनुष्य वाणी से जो अशुभ कर्म करता है, उनकी संख्या शास्त्रानुसार चार है - (१) असत्य (झूठ) बोलना (२) कठोर बोलना (३) अहितकर बोलना (४) व्यर्थ बोलना (असंगत - प्रसंग से बाहर बोलना)।

प्रश्न ३५८ कर्मों का अन्तिम फल किस रूप में मिलता है?

उत्तर कर्मों का अन्तिम फल सुख-दुःख के रूप में मिलता है।

प्रश्न ३५९ मनुष्य जन्म पाने के लिए कम से कम कितने और कैसे कर्म करने अनिवार्य हैं?

उत्तर कम से कम ५० प्रतिशत पुण्य कर्म होने पर साधारण मनुष्य का जन्म मिलता हैं पचास प्रतिशत से थोड़ी भी कम पुण्य कर्म की मात्रा हुई तो मनुष्य जन्म नहीं मिलेगा अर्थात् मनुष्य जन्म के लिए कम से कम पाप-पुण्य बराबर होने चाहिएं।

भगवान के बाद दूसरा स्थान माता का है।

प्रश्न ३६० ज्ञानपूर्वक सौ प्रतिशत निष्काम कर्म कौन करता है।

उत्तर पूर्ण योगी, पूर्ण आस्तिक, पूर्ण ईश्वर समर्पित, पूर्ण वीतराग और उग्र तपश्चरण करने वाला संन्यासी व्यक्ति ही ज्ञानपूर्वक सौ प्रतिशत निष्काम कर्म करता है।

प्रश्न ३६१ शत प्रतिशत निष्काम कर्म करने वाले को क्या फल मिलता है?

उत्तर जीवित अवस्था में विशुद्ध रूप में ईश्वर का सुख (मोक्ष) मिलता है तथा शरीर त्याग करने के पश्चात् इकत्तीस नील, दस खरब, चालीस अरब (३१,१०,४०,०००००००००) वर्ष पर्यन्त ईश्वर के आनन्द को लगातार ईश्वर की सहायता से भोगता है।

प्रश्न ३६२ मनुष्य जन्म पाकर जीवात्मा पशु, पक्षी, कीट, पतंग, समुद्री जीव आदि शरीर में क्यों जाता है?

उत्तर मनुष्य जन्म पाकर ५० प्रतिशत से अधिक पाप करने पर उन कर्मों का दु:ख रूप फल भोगने के लिए पशु, पक्षी, कीट पतंग, समुद्री जीव आदि शरीर में जाता है।

प्रश्न ३६३ व्यक्ति जब पचास प्रतिशत से अधिक पाप करता है तो पशु आदि नीच शरीरों में जाता है। पुन: उसे मनुष्य शरीर कब मिलता है?

उत्तर जब अधिक पाप का फल पशु आदि के शरीरों में भोग लिया जाता है तब पाप और पुण्य बराबर हो जाने पर पुन: उसे मनुष्य का शरीर मिलता है।

प्रश्न ३६४ फल की दृष्टि से कर्म कितने प्रकार के होते हैं और वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर फल की दृष्टि से कर्म तीन प्रकार के होते हैं - (१) संचित (२) प्रारब्ध (३) क्रियमाण।

प्रश्न ३६५ कर्त्ता की दृष्टि से कर्म कितने प्रकार के हैं और कौन-कौन से हैं?

उत्तर कर्त्ता की दृष्टि से तीन प्रकार के कर्म हैं - (१) कृत कर्म (२) कारित कर्म (३) अनुमोदित कर्म।

स्त्री को अबला कहना अन्याय है। वह शक्ति का अवतार है।

प्रश्न ३६६ कृत कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर ऐसे कर्म जिनका कर्त्ता स्वयं ही होता है वे 'कृत' कर्म कहलाते हैं।

प्रश्न ३६७ कारित कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जो कर्म स्वयं न करके दूसरों को आज्ञा देकर कराये जाते हैं उसे कारित कर्म कहते हैं?

प्रश्न ३६८ अनुमोदित कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जिन कर्मों को न साक्षात् स्वयं करता है और न ही कराने के लिए किसी को प्रेरित / आदेश करता है किन्तु किसी के किये गये कर्म का अनुमोदन व समर्थन करता है, वे 'अनुमोदित' कर्म कहलाते हैं।

प्रश्न ३६६ आजकल प्रतिदिन हजारों की संख्या में शिशुओं को उत्पन्न होने से पहले गर्भ में ही मार दिया जाता है, तो क्या यह गर्भ में आने वाले जीव के कर्मों का फल है या माता-पिता का?

उत्तर गर्भ का धारण माता-पिता की इच्छा से होता है और गर्भपात भी उन्हीं की स्वतन्त्र इच्छा से होता है, अतः गर्भपात के कारण होने वाले भयंकर पाप के अपराधी गर्भपात कराने वाले, करने वाले तथा सहमति देने वाले सभी हैं। गर्भधारण करने वाले शिशु का इनमें कोई भी कर्मफल नहीं है। न ईश्वर की ओर से कोई प्रेरणा या विधान है कि गर्भपात कराया जायें अपितु गर्भपात का निषेध है।

प्रश्न ३७० क्या मनुष्य का अगला जन्म होता है? क्या मनुष्य का मरने के बाद पुनः जन्म होता है।?

उत्तर हां ! मनुष्य मरने के बाद पुनः जन्म ग्रहण करता है।

प्रश्न ३७१ सबसे श्रेष्ठ व उत्तम कर्म कौन सा है और उसका फल क्या है?

उत्तर स्वयं के लिए बिना किसी लौकिक वस्तु की कामना के दूसरों का उपकार करना सबसे श्रेष्ठ व उत्तम कर्म है और उसका फल है जीते जी विशुद्ध ईश्वरीय सुख को भोगना तथा मृत्यु के बाद ३६ हजार बार सृष्टि के बनने और बिगड़ने तक पुनः जन्म न लेना, केवल आनन्द ही

आनन्द भोगते रहना, दुःख का लेशमात्र भी स्पर्श न होना।

प्रश्न ३७२ हमारे जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान लौकिक दृष्टिकोण के चिन्तन में या आध्यात्मिक दृष्टि कोण के चिन्तन में होता है

उत्तर हमारे चिन्तन की शैली लौकिक होगी तो समस्याएं हमको ग्रस्त करेंगी हम उनसे दुःखी रहेंगे। उनका समाधान निकाल नहीं पायेंगे, उनको सहन नहीं कर पायेंगे, उनको टाल नहीं पायेंगी। यदि हमारा चिन्तन करने का ढंग आध्यात्मिक है, धार्मिक है, दार्शनिक है तो हम प्रत्येक समस्या का समाधान कर लेंगे अथवा सहन कर लेंगे या टाल देंगे। आध्यात्मिक क्षेत्र में अन्याय करने वाले व्यक्तियों को भी सहन किया जाता है।

प्रश्न ३७३ किसी समस्या के आने पर समाधान के लिए क्या करना चाहिए।

उत्तर समस्या आने पर ईश्वर से सहयोग लो। ईश्वर के सहयोग से कार्य तीव्रता से होता है क्योंकि ईश्वर मन में प्रेरणा, उत्साह, सामर्थ्य प्रदान करता है। धैर्यपूर्वक शांत होकर, गंभीर होकर, एकान्त सेवन करना चाहिए। अकेले में आसन लगाकर चित्त की वृत्तियों को रोककर परमपिता परमात्मा से सामर्थ्य, वल, साहस और पराक्रम की याचना करनी चाहिए।

भ्रम निवारण

प्रश्न ३७४ संतान के जन्म होने पर जन्मकुंडली, जन्मपत्री आदि बनाते हैं क्या इससे संतान के भविष्य का ज्ञान होता है?

उत्तर जी नहीं, जन्मकुंडली, जन्मपत्री बनाना आदि बातें काल्पनिक हैं। इससे भविष्य का ज्ञान होता है यह मान्यता अवैदिक है।

प्रश्न ३७५ देवी-देवताओं के मंदिरों में पैदल जाने से देवी-देवता प्रसन्न होते हैं तथा घुटनों के बल पर या रेंगकर जाने से अति प्रसन्न होकर मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। क्या यह बात सत्य है?

उत्तर जी नहीं ! यह बात सर्वथा मिथ्या व अंधविश्वास है।

प्रश्न ३७६ साधु, पीर या फकीर के मजार पर जाकर मनौती मांगने से इच्छाएं पूर्ण होती हैं। क्या यह बात सत्य है?

उत्तर जी नहीं ! साधु, पीर या फकीर के मजार पर जाकर मन्नत मांगने से मन्नत पूरी होती है, यह मान्यता अवैदिक तथा असत्य है।

प्रश्न ३७७ ब्राह्मणों के द्वारा पूजा-पाठ करवाने से भटकती आत्माओं को शांति मिलती है, क्या यह बात सही है?

उत्तर नहीं, यह बात सर्वथा गलत है क्योंकि सर्वप्रथम यह जानना चाहिये कि **कोई भी आत्मा कभी भी मृत्यु के बाद भटकती नहीं है।** वह तो मृत्यु के पश्चात् ईश्वर की व्यवस्था में दूसरा शरीर प्राप्त कर लेती है।

प्रश्न ३७८ गुरु बनाना चाहिये कि नहीं, क्या गुरु बनाना अनुचित है?

उत्तर आध्यात्मिक उन्नति व प्रगति के लिए गुरु अवश्य बनाना चाहिये। किन्तु पूर्णतया परीक्षा करके आदर्श, जितेन्द्रिय, सत्यवादी, परोपकारी, सच्चे ईश्वर को जानने व जनाने वाले योगी, महात्मा को ही गुरु बनाना चाहिए। हाँ, बिना परीक्षा किये झूठे, छली, कपटी, पाखण्डी व्यक्ति को गुरु बनाना अनुचित है।

प्रश्न ३७९ 'अनेकता में एकता' क्या यह मान्यता ठीक है?

उत्तर जी नहीं, अनेकता में एकता का नारा सर्वथा गलत है। एकता के लिए धर्म, भाषा, संविधान, पूजा पद्धति आदि में एकरूपता होना अनिवार्य है।

प्रश्न ३८० भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष रक्तविहीन क्रांति है अर्थात् लहु बहाये बिना हमें केवल शांत अहिंसक उपायों से स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, क्या यह मान्यता ठीक है?

उत्तर जी नहीं, यह मान्यता ठीक नहीं है क्योंकि देश को विदेशी आक्रान्ताओं

से स्वतंत्र कराने के लिए राणा प्रताप, राणा सांगा, शिवाजी, मंगल पाण्डे, महारानी लक्ष्मीवाई, वीर भगत सिंह, तात्याटोपे, अश्फाक उल्ला खाँ आदि लाखों क्रान्तिकारी देशभक्तों ने अपनी वीरता से पठान, मुगलों एवं अंग्रेजों के दांत खट्टे किये हैं तथा अपना बलिदान दिया है। अत: केवल अहिंसक उपायों से ही देश स्वतंत्र हुआ है ऐसा मानना उचित नहीं है।

प्रश्न ३८१ डी.ए.वी. (दयानन्द ऐंगलो वैदिक) कॉलेज की स्थापना कब हुई और किसने की?

उत्तर डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना सन् १८८६ में महात्मा हंसराज जी ने की।

प्रश्न ३८२ गुरुकुल यूनिवर्सिटी कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना कब हुई और किसने की?

उत्तर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सन् १९०१ में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने की।

प्रश्न ३८३ संयुक्त राज्य अमेरिका की संसद का कार्यक्रम प्रथम बार गायत्री मंत्र और शान्ति पाठ से समाप्त कब हुआ?

उत्तर अमेरिका की संसद का कार्यक्रम २००७ में प्रथम बार गायत्री मन्त्र से आरम्भ और शान्ति पाठ से समाप्त हुआ।

प्रश्न ३८४ संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ) में ऋग्वेद पुस्तकालय में कब रखा गया?

उत्तर वर्ष २००७ में पूना से ऋग्वेद मंगाकर ससम्मान मनुष्य सभ्यता का प्रथम ज्ञान ग्रन्थ मानते हुए यू.एन.ओ. के कार्यालय पुस्तकालय में रक्खा गया।

ऐतिहासिक प्रश्न

प्रश्न ३८५ आर्य संवत् बारह मासों के क्या नाम हैं?

उत्तर (१) चैत्र (२) बैशाख (३) ज्येष्ठ (४) आषाढ़ (५) श्रावण (६) भाद्रपद (७) आश्विन (८) कार्तिक (९) मार्गशीर्ष (१०) पौष (११) माघ (१२) फाल्गुन।

प्रश्न ३८६ रामायण का काल कितना पुराना है?

उत्तर रामायण का काल लगभग ग्यारह लाख पुराना है।

प्रश्न ३८७ महाभारत को कितना समय हो गया है?

उत्तर लगभग ५२०० वर्ष।

प्रश्न ३८८ पारसी मत कितना पुराना है?

उत्तर लगभग ४५०० वर्ष।

प्रश्न ३८९ यहूदी मत कितना पुराना है?

उत्तर चार हजार वर्ष।

प्रश्न ३९० जैन, बौद्ध मत कितना पुराना है?

उत्तर लगभग २५०० वर्ष।

प्रश्न ३९१ शंकराचार्य का काल कितना पुराना है?

उत्तर लगभग २३०० वर्ष।

प्रश्न ३९२ पुराण मत कितना पुराना है?

उत्तर लगभग २२०० वर्ष।

प्रश्न ३९३ ईसाई मत कितना पुराना है?

उत्तर लगभग २००० वर्ष।

प्रश्न ३९४ इस्लाम मत कितना पुराना है?

उत्तर लगभग चौदह सौ वर्ष।

प्रश्न ३९५ सिक्ख मत कितना पुराना है?

उत्तर लगभग ५०० वर्ष।

प्रश्न ३६६ ब्रह्म कुमारी, राधास्वामी, गायत्री परिवार, स्वामी नारायण, आनन्द मार्ग इत्यादि मत पंथ कितने पुराने हैं?

उत्तर देश में सैंकड़ों की संख्या में प्रचलित वर्तमान सम्प्रदाय १००–१५० वर्ष पूर्व के आस-पास के काल के हैं।

प्रश्न ३६७ वैदिक काल अर्थात् आज से लगभग ५००० वर्ष तक लोग ईश्वर को कैसा मानते थे?

उत्तर वैदिक काल में विश्व के लोग एक निराकार ईश्वर को मानते थे।

प्रश्न ३६८ वैदिक काल में विश्व शासन की कौन सी भाषा थी?

उत्तर संस्कृत ही केवल एक भाषा थी। महाभारत से पूर्व के सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही हैं।

प्रश्न ३६६ सृष्टि नव वर्ष किस दिन बदलता है?

उत्तर सृष्टि नव वर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा (प्रथमा) के दिन बदलता है।

प्रश्न ४०० सृष्टि के आरम्भ में किसने उत्पन्न किया कैसे उत्पन्न किया?

उत्तर ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में पृथ्वी के कणों से रज वीर्य आदि धातु बनाई उसे मिलाकर पञ्च भौतिक अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन द्रव्यों से शरीर बनाकर धरती के अन्दर से हजारों की संख्या में नवयुवक और नवयुवतियों को एक साथ उत्पन्न किया जो शरीर से बलिष्ट थे, किन्तु उनको ज्ञान बहुत कम था।

प्रश्न ४०१ आदर्श विद्यार्थी के गुण बतलाइये ?

उत्तर (१) रात को जल्दी सोना और प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठाना (२) नियमित आसन-व्यायाम, भ्रमण करना। (३) गायत्री आदि मंत्रों के माध्यम से ईश्वर का ध्यान करना। (४) माता-पिता-गुरु आदि का सम्मान व आज्ञा पालन करना। (५) कुसंगति से दूर रहते हुए स्वाध्याय करना। (६) सत्संग सेवा, श्रम (पुरुषार्थ) एवं सदाचार को जीवन का अंग बनाना।

प्रेम, पति-पत्नी को मृत्यु पर्यन्त ऐसे बांधे रखता है जैसे चुम्बक लोहे को।

प्रश्न ४०२ कुछ प्राचीन प्रसिद्ध गुरुकुलों के नाम बतलाइये ?

उत्तर नालन्दा विश्वविद्यालय, तक्षशिला विश्वविद्यालय, विक्रमाशिला और बल्लभीपुर आदि प्राचीन विश्वविद्यालय प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न ४०३ तोप का प्राचीन काल में संस्कृत में क्या नाम था ?

उत्तर शतघ्नी।

प्रश्न ४०४ बन्दूक को संस्कृत में क्या कहते हैं ?

उत्तर भुशुंडी।

प्रश्न ४०५ आग्नेयास्त्र और वरुणास्त्र किसे कहते हैं ?

उत्तर शत्रु की सेना को आग्नेयास्त्र (बम्ब) द्वारा नष्ट किया जाता था। अब दूसरा पक्ष उसका निवारण करना चाहें तो वरुणास्त्र से उस आग्नेयास्त्र का निवारण किया जाता है। वह ऐसे द्रव्यों के योग से होता है जिसका धुआँ वायु के स्पर्श होते ही बादल बनकर बरसने लगे और अग्नि को बुझा देवे।

प्रश्न ४०६ नागपाश किसे कहते हैं ?

उत्तर जो शत्रु पर छोड़ने से शत्रु के अंगों को जकड़ के बांध देता है।

प्रश्न ४०७ मोहनास्त्र किसे कहते हैं ?

उत्तर जिससे नशे की वस्तु डालने से जिसके धुएँ के लगने से शत्रु की सेना मूर्छित हो जाये।

प्रश्न ४०८ क्या प्राचीन काल में कलायुक्तयान और स्वचालित पंखे थे ?

उत्तर 'भोज प्रबध' में लिखा है कि राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार का एक यान कला युक्त बनाया था, जो कि एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोश और एक घंटे में सत्ताइस कोश जाता था। वह भूमि में और अन्तरिक्ष दोनों में भी चलता था और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था जो बिना मनुष्य के चलाये यंत्र के बल से नित्य चला करता था और पुष्कल वायु देता था। यदि ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन लोग इतना अभिमान न करते।

सारे परिवार का संगठन प्रेम के सीमेन्ट से ही चिरस्थायी होता है।

प्रश्न ४०९ रेलगाड़ी और शरीर दोनों जड़ पदार्थ हैं। शरीर की वृद्धि होती है जड़ की वृद्धि क्यों नहीं होती?

उत्तर शरीर की वृद्धि इसलिए होती है कि उसमें चेतन आत्मा है। रेलगाड़ी में आत्मा नहीं है इसलिए वृद्धि नहीं होती। गाड़ी में इंजन होता है वह भी जड़ है।

सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-3

प्रश्न ४१० ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणी को कौन से अष्ट मैथुन से अलग रहना चाहिए?

उत्तर जब तक ब्रह्मचारी रहे स्त्री या पुरुष का दर्शन, स्पर्श, एकान्त सेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग इस आठ प्रकार के मैथुन से अलग रहे।

प्रश्न ४११ 'भूः', 'भुवः', 'स्वः' तीनों महाव्याहृतियों के क्या अर्थ हैं?

उत्तर जो जगत् का आधार, प्राण से भी प्रिय है और स्वयंभू है उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है। जो सब दुःखों से रहित, जिसके संग से जीव दुःखों से छूट जाते हैं। इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। जो नाना विधि जगत में व्यापक हो के सबका धारण करता है। इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है ये तीनों वचन तैत्तिरीय आरण्यक के हैं।

प्रश्न ४१२ स्वाहा शब्द के क्या अर्थ हैं?

उत्तर जैसा ज्ञान आत्मा में हो वैसा ही जीभ से बोलें, विपरीत नहीं। जैसे- परमेश्वर ने सब प्राणियों के सुख के अर्थ जगत् के सब पदार्थ रचे हैं वैसे ही मनुष्यों को भी परोपकार करना चाहिए।

प्रश्न ४१३ क्या हवन न करने से पाप होता है?

उत्तर हाँ ! क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़ कर रोग उत्पन्न होने से प्राणियों को दुःख उत्पन्न

होता है उतना ही पाप उस मनुष्य का होता है।

प्रश्न ४१४ हवन में प्रत्येक मनुष्य को कितनी आहुति प्रतिदिन देनी चाहिए और एक आहुति में कितना घी होना चाहिए?

उत्तर प्रत्येक मनुष्य को सोलह आहुति प्रातः और सोलह सायं या एक समय बत्तीस आहुतियाँ और एक आहुति में ६ माशे घी होना चाहिए।

प्रश्न ४१५ क्या घर में सुगन्धित पुष्प, कस्तूरी, केसर आदि रखने से वायु सुगन्धित होकर सुख प्राप्त हो सकेगा?

उत्तर उस सुगन्धि का यह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकालकर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके, क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है। यह सामर्थ्य तो अग्नि और घी में ही है।

प्रश्न ४१६ मंत्र पढ़कर हवन करने से क्या लाभ है?

उत्तर मंत्रों में प्रार्थना है जिससे हवन करने के लाभ विदित हो जायें और वेदों का पठन भी होता है।

प्रश्न ४१७ द्रव्य किसे कहते हैं और कितने हैं?

उत्तर जिसमें क्रिया और गुण अथवा केवल गुण भी रहें उसे द्रव्य कहते हैं, ये नौ हैं। जिसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, मन और आत्मा ये छः द्रव्य क्रिया और गुण वाले हैं तथा आकाश, काल, दिशा ये तीन क्रिया रहित गुण वाले हैं।

प्रश्न ४१८ द्रव्य के गुण कितने हैं, कौन-कौन से हैं?

उत्तर चोबिस हैं। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द हैं।

प्रश्न ४१९ गुण किसे कहते हैं?

उत्तर गुण उसको कहते हैं जो द्रव्य के आश्रय रहे, अन्य गुण को धारण न करे। उसका नाम गुण है।

प्रश्न ४२० शब्द किसे कहते हैं?

उत्तर जिसकी कानों से प्राप्ति, जो बुद्धि से ग्रहण करने योग्य और प्रयोग से प्रकाशित तथा आकाश जिसका देश है वह शब्द कहलाता है।

प्रश्न ४२१ क्या निराकार वस्तु का ध्यान हो सकता है?

उत्तर हाँ! निराकार का भी ध्यान होता है। पदार्थ का जो गुण है, उसे लेकर ही ध्यान हो सकता है। जैसा ईश्वर का गुण कर्म-स्वभाव नहीं है वैसा ध्यान करने से उसका कभी ध्यान नहीं हो सकता है। गलत रूप से ध्यान करने के कारण ही आज दुःख की वृद्धि हो रही है। ध्यान में अन्य सब विचार रोक कर केवल ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव पर ही विचार करना चाहिए।

प्रश्न ४२२ वेदी (यज्ञ कुण्ड) का आकार क्या होना चाहिए?

उत्तर ऊपर चौकोर अर्थात् १२ इन्च इतना ही गहरा अर्थात् १२ इंच, नीचे से ३ इंच अर्थात् चौकोर होना चाहिए।

प्रश्न ४२३ क्या ब्रह्मचर्य का नियम स्त्री व पुरुष के लिए बराबर है?

उत्तर नहीं जो पच्चीस वर्ष पुरुष ब्रह्मचर्य रहे तो कन्या सोलह वर्ष ब्रह्मचर्य रहे, यह सुश्रुत का वचन है।

प्रश्न ४२४ सृष्टि रचना किस प्रकार हुई?

उत्तर लगभग २ अरब वर्ष पहिले पृथ्वी, सूर्य व चन्द्र आदि कुछ भी नहीं था। जीवात्माएं मूर्च्छित अवस्था में थीं। जैसे निद्रा में कोई अनुभूति नहीं होती, उसी तरह प्रलय काल में भी नहीं होती। सत्व-रज-तम कणों को इकट्ठा करके ईश्वर ने अपने ज्ञान-सामर्थ्य से महत्तत्व, फिर अहंकार, फिर पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, मन, पाँच तन्मात्राएं (सूक्ष्म-भूत) कुल उन्नीस तत्त्व, फिर पाँच स्थूल-भूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल पृथ्वी) - उससे चन्द्र, सूर्य, तारे, पृथ्वी आदि स्थूल जगत बनाया। वनस्पति, मछलियां कीट, पतंग, पशु आदि के उपरान्त मनुष्यों (स्त्री और पुरुषों) के शरीरों की रचना हुई। मनुष्य सब युवा शरीर वाले उत्पन्न हुए। अमैथुनी सृष्टि बनी।

गृहस्थी को अकेले नहीं अपितु बांटकर खाना चाहिए।

प्रश्न ४२५ प्रलय की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर प्रलय की प्रक्रिया 'उत्पत्ति की प्रक्रिया' से विपरीत क्रम से होती है। प्रलय प्रारंभ होने पर ईश्वर सर्वप्रथम मनुष्य जाति का विनाश करता है। तत्पश्चात् पशु, पक्षी, कीट, पतंग व वनस्पतियों का। सजीव सृष्टि के विनाश के बाद ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र आदि का विनाश करता है व उन्हें ५ स्थूल भूतों में परिवर्तित कर देता है। फिर इन पाँच भूतों को ५ सूक्ष्म भूतों में, ५ सूक्ष्म भूतों व ११ इन्द्रियों (५ कर्मेन्द्रियाँ, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ व १ मन को) अहंकार में, अहंकार को महत्तत्व में व महत्तत्व को मूल प्रकृति (सत्त्व रज तम की साम्यावस्था) में परिवर्तित कर देता है। इस प्रलयावस्था में अमुक्त जीवात्माएँ मूर्छित रूप में रहती हुई किसी प्रकार का भी सुख-दुःख अनुभव नहीं करती हैं। जबकि मुक्त आत्माएँ ईश्वर के आनंद में पूर्ववत् मग्न रहती हैं।

इस प्रकार संसार की रचना व विनाश एक के बाद एक क्रमशः होते रहते हैं। यह रचना व विनाश का क्रम अनादिकाल से इसी प्रकार होता आया है व आगे भी अनन्त काल तक इसी प्रकार चलता रहेगा। इसलिए संसार चक्र को 'प्रवाह से अनादि' एवं 'प्रवाह से अनन्त' कहते हैं।

प्रश्न ४२६ आर्ष अर्थात ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को ही क्यों पढ़ना चाहिए?

उत्तर ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए कि ऋषि बड़े विद्वान् सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे और अनर्षि अर्थात जो अल्प शास्त्र पढ़े और जिनका आत्मा पक्षपात युक्त है। उनके ग्रन्थ भी वैसे ही हैं।

प्रश्न ४२७ क्या वेद-ज्ञान संसार के समस्त मानवों के लिए है?

उत्तर वेदों के पढ़ने का अधिकार सभी स्त्री और पुरुषों के लिए है। यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय के दूसरे मन्त्रों में परमेश्वर कहता है, जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण अर्थात संसार-सुख व मुक्ति के सुख को देने हारी ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो।

ईश्वर ने (ब्रह्मराजन्याभ्याम्) ब्राह्मण, क्षत्रिय (अर्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और अति शूद्रादि के लिये वेदों का प्रकाश किया। अतः वेद सभी मनुष्यों को पढ़ने चाहिएं। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखते हैं। क्या परमेश्वर शूद्रादि का भला करना नहीं चाहता। **यदि परमेश्वर शूद्रादि को वेद पढ़ाना-सुनाना नहीं चाहता तो इनको वाक् और श्रोत्र इन्द्रियां क्यों देता।**

प्रश्न ४२८ प्राणायाम की सरल विधि क्या है और प्राणायाम कितने प्रकार के हैं?

उत्तर सामान्यतया केवल बाह्य-विषय-प्राणायाम का ही अभ्यास अधिक करना चाहिये।

(क) बाह्य-विषय (बाहर रोकना) नासिका से सम्पूर्ण वायु को बाहर निकाल कर यथाशक्ति रोक देवें। मूलेन्द्रिय को ऊपर खींचकर रखें, जब तक प्राण बाहर रहता है। इस प्रकार प्राण बाहर अधिक ठहरता है। जब घबराहट हो वायु को धीरे-धीरे भीतर लेवें। मन में ओ३म् का जाप करते रहना चाहिये। जितना सामर्थ्य और इच्छा हो उतने प्राणायाम करें। धीरे-धीरे ही प्राणायामों की संख्या बढ़ानी चाहिये। प्राणायाम योग को चौथा अंग है। इससे पूर्व आसान सिद्ध करें।

दूसरा आभ्यन्तर अर्थात जितना भीतर रोका जाये उतना रोकना, **तीसरा स्तम्भवृत्ति** अर्थात एक ही बार जहाँ का तहाँ प्राण को यथा शक्ति राके देना, चौथा बाह्याभ्यन्तराविषयक्षेपी अर्थात् प्राण जब भीतर से बाहर निकलने लगें तब उससे विरुद्ध उसको न निकलने देने के लिये बाहर से भीतर लें और बाहर से भीतर आने लगें तब भीतर से बाहर की ओर प्राण को धक्का देकर रोकता जाये। एक दूसरे के विरुद्ध क्रिया करने से दोनों की गति रुक कर प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रिय भी अपने आधीन हो जाते हैं।

शरीर के लिये भोजन की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आत्मा को प्रार्थना की।

प्रश्न ४२९ सन्ध्या का स्थान कैसा होना चाहिये और कितना समय होना चाहिये?

उत्तर सन्ध्या एकान्त देश में प्रातः और सायं न्यून से न्यून एक घन्टा अवश्य करना चाहिये। जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं वैसे ही संध्योपासन किया करें।

प्रश्न ४३० ईश्वर सबको आनन्दित क्यों नहीं करता?

उत्तर ईश्वर उसे आनन्द देता है जो उसकी आज्ञानुसार चलता हुआ अपने मन को पवित्र बना लेता है तथा उसकी उपासना करता है। सबके पास टी.वी. होते हुए भी जो स्विच ऑन करता है उसे ही प्रसारण दिखता है।

प्रश्न ४३१ नास्तिक व्यक्ति क्यों सुखी दिखते हैं?

उत्तर कर्मफल दाता ईश्वर न्यायकारी है, कोई भी उचित परिश्रम करेगा तो ईश्वरीय व्यवस्था से परिणामतः भौतिक-सुख पायेगा। यदि साथ में आस्तिकता होगी, तो ईश्वर प्रदत्त विशेष मानसिक आनन्द-शक्ति आदि भी मिलेगी। अव्यवहारिक आस्तिक जो कामचोर है, आलसी है उसे भौतिक सुख भी नहीं मिलेगा।

प्रश्न ४३२ कौन मनुष्य सदा दुःखी रहते हैं?

उत्तर (१) ईर्ष्यालु (२) घृणा करने वाले (३) असन्तोषी (४) क्रोधी (५) सदा शंका करने वाला (६) दूसरे के आश्रित जीने वाला (७) नकारात्मक प्रवृत्ति वाले इत्यादि।

प्रश्न ४३३ कौन से गुण मनुष्य को चमकाते हैं?

उत्तर (१) बुद्धि (२) कुलिनता (३) इन्द्रिय निग्रह (४) शास्त्र ज्ञान (५) वीरता (६) मित भाषिता (७) यथा शक्ति दान (८) कृतज्ञता।

प्रश्न ४३४ क्या कार्य में भावना महत्वपूर्ण होती है। इससे फल में अन्तर आता है।

उत्तर जी हाँ ! दो व्यक्ति आपको एक जैसे क्रिया करते हुए दिखलाई देंगे लेकिन दोनों का फल एक जैसा नहीं होगा। फल अलग-अलग होगा।

अध्यात्मवाद को परखने और आत्मविश्वास को प्राप्त करने का स्थान गृहस्थ है।

बाह्य क्रिया एक जैसे होगी पर फल में अन्तर होगा क्योंकि उनकी भावना में अन्तर है। पूर्व कर्मों का भी अन्तर पड़ता है।

प्रश्न ४३५ हम पर किसी भी कारण से अन्याय हुआ। हमको जो हानि उठानी पड़ी तो जो हमारी हानि हुई उसका क्या होगा?

उत्तर हम पर जो अन्याय हुआ चाहे माता- पिता, पड़ोसी, चोर आदि ने जितना दु:ख हमको दिया उतना उसका अपराध है। उस अपराध का दण्ड उसे मिलेगा। दण्ड देकर समाज और सरकार न्याय कर सकती है तो ठीक है, नहीं कर सकती तो अन्त में ईश्वर करेगा।

प्रश्न ४३६ मनुष्य ने जितने अविष्कार किये हैं। क्या ईश्वर यह पहले से जानता था या वह आश्चर्य करता है?

उत्तर मनुष्य क्या कर सकता है ईश्वर पहले से जानता है। ईश्वर को मनुष्य के किसी भी कार्य से आश्चर्य नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि मनुष्य ने ट्रैक्टर का अविष्कार कर खेती करना आरम्भ किया तो यह ईश्वर पहले से जानता था, परन्तु ईश्वर यह भी जानता था कि हल से खेती करने में अधिक लाभ है। कोई भी मनुष्यकृत कर्म ईश्वर के लिए नया नहीं है।

ज्योतिष

प्रश्न ४३७ ज्योतिष किसे कहते हैं?

उत्तर ज्योति का अर्थ है प्रकाश। ज्योतिषशास्त्र का अर्थ होता हैं प्रकाश पिण्डों की गतिविधियों को जानने वाला शास्त्र। जैसे सूर्य ज्योति पिण्ड है। यह प्रकाश फेंकता है। इसी तरह से एक सूर्य, दो सूर्य, तीन सूर्य, हजारों सूर्य ग्रह और उपग्रह आदि चीजों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र है ज्योतिषशास्त्र। जो ज्योतिषशास्त्र को जानता है, सूर्य नक्षत्र आदि की गतिविधियों को जानता है। भूगोल व खगोलशास्त्र को जानता है। वह ज्योतिष को ठीक-ठीक गणित से जान सकता है।

प्रश्न ४३८ यदि फलित ज्योतिष वाले भविष्य-फल, राशिफल, जन्म कुण्डली देखकर भविष्य बताते हैं, क्या यह ठीक है?

उत्तर नहीं ! कुण्डली मिलाकर जो विवाह करते हैं। उनमें भी झगड़ा और तलाक होता है। यदि भविष्य फल ठीक है तो झगड़ा-तलाक नहीं होना चाहिए। राम और रावण की राशि एक थी पर देखो दोनों का क्या हाल हुआ।

प्रश्न 43६ क्या इन नामधारी ज्योतषियों पर विश्वास करना चाहिये?

उत्तर पुरुषार्थ से सारी चीजें सिद्ध हो जाती हैं। पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है। पुरुषार्थ करो भविष्य अच्छा है। तीन बातें सीखें – पुरुषार्थ, बुद्धिमत्ता और ईमानदारी।

प्रश्न ४४० क्या जाति, आयु, भोग निश्चित हैं या इन्हें घटाया-बढ़ाया जा सकता है।

उत्तर जाति तो निश्चित है, बीच में जाति नहीं बदलेगी, आयु और भोग बदल सकते हैं। जन्म के समय आयु और भोग ईश्वर ने हमको दिये, ये पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर दिये गये हैं। इस जन्म में किये गये कर्मों से हम अपनी आयु को बढ़ा सकते हैं। अगर आप भोग बढ़ाने वाले कर्म करोगे तो भोग बढ़ जायेंगे। आयु बढ़ाने वाले कर्म करोगे तो आयु बढ़ जायेगी। आयु कैसे घटती-बढ़ती है एक उदाहरण से समझे आपने एक घड़ी खरीदी उसकी गारन्टी 3 वर्ष थी और यदि आप इसे हथौड़े से पीटने लगें या पानी में डुबाने लगें तो फिर गारन्टी कहाँ रही। अब भोग की बात जानिये। पूर्व जन्म से माता-पिता के घर में जन्म मिला। उनके पास अच्छी सम्पत्ति अच्छे कर्मों का भोग मिल गया। अच्छी सम्पत्ति मिल गई। हमने पढ़ाई नहीं की। धन को संभाल के नहीं रक्खा, जुएँ-सट्टे में, शराब में, उल्टे-सीधे कामों में खो दिया तो हमारे भोग घट गए।

प्रश्न ४४१ कई व्यक्ति श्रेष्ठ सेवाभावी कार्यों के लिए जाने जाते हैं परन्तु उन्होंने कभी वेद के अनुसार उपासना नहीं की। ईश्वर उन्हें दण्ड देगा या पुरस्कार।

उत्तर उन्होंने जितने अच्छे कार्य किये हैं उतना उनको ईश्वर इनाम देगा और जो वेद के अनुकूल उपासना नहीं की, उनको उतना दण्ड मिलेगा। वास्तव में कर्म न करने का दण्ड नहीं होता। दण्ड होता है निषिद्ध कर्म करने का।

क्रान्तिकारियों एवं इतिहास से सम्बन्धित प्रश्न

प्रश्न ४४२ काकोरी कांड के नेता कौन थे?

उत्तर राम प्रसाद बिस्मिल।

प्रश्न ४४३ क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल को फाँसी कहाँ दी गई?

उत्तर गोरखपुर जेल में।

प्रश्न ४४४ काकोरी कांड क्या है?

उत्तर लखनऊ के निकट काकोरी स्टेशन के पास रात्रि में ट्रेन रोककर क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों का खजाना लूट लिया था।

प्रश्न ४४५ अशफाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह व राजेन्द्र नाथ लोहड़ी को फाँसी कहाँ दी गई और उस दिन कौन तिथि थी?

उत्तर अशफाक उल्ला खाँ को फैजाबाद में १६ दिसम्बर १९२७, राजेन्द्र लोहड़ी को गोंडा में १७ दिसम्बर १९२७ को और ठाकुर रोशन सिंह को १६ दिसम्बर १९२७ को इलाहाबाद में फाँसी दी गई।

प्रश्न ४४६ काकोरी कांड में २ सगे भाईयों को कारावास की सजा सुनाई गई उनके क्या नाम हैं?

उत्तर शचीन्द्रनाथ सान्याल और भूपेन्द्रनाथ सान्याल।

प्रश्न ४४७ अंग्रेज पुलिस की लाठियों का शिकार होकर प्राण त्यागने वाले स्वतन्त्रता सेनानी का क्या नाम है?

उत्तर पंजाब केसरी लाला लाजपतराय।

प्रश्न ४४८ पाँडिचेरी में साधना करने वाले साधक (स्वतंत्रता सेनानी) का क्या नाम है?

उत्तर महर्षि अरविन्द।

प्रश्न ४४९ महर्षि वाल्मीकि का जयन्ती दिवस क्या है?

उत्तर आश्विन पूर्णिमा।

प्रश्न ४५० श्री रामचन्द्र जी ने अश्वमेध यज्ञ कहाँ किया था?

उत्तर नैमिषारण्य (उत्तर प्रदेश)।

प्रश्न ४५१ धर्म हेतु बलिदान देते समय गुरु गोविन्द सिंह के दोनों पुत्रों की क्या आयु थी?

उत्तर जोरावर सिंह ९ वर्ष और फतेह सिंह ६ वर्ष।

प्रश्न ४५२ गुरु गोविन्द सिंह का जन्म कहाँ हुआ था।

उत्तर पटना में।

प्रश्न ४५३ मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य किस राशि में प्रवेश करता है?

उत्तर मकर राशि में।

प्रश्न ४५४ बसंत पंचमी के दिन लाहौर में स्वधर्म रक्षार्थ किस बालक का बलिदान हुआ?

उत्तर वीर हकीकत राय।

प्रश्न ४५५ स्वराज्य, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार का चार सूत्री कार्यक्रम किस की देन है?

उत्तर लोकमान्य तिलक।

प्रश्न ४५६ किस दानवीर ने अपनी जीवन भर की कमाई महाराणा प्रताप को दान दी थी?

उत्तर भामा शाह ने।

नारी का दुःख, अभाव, कष्ट, प्रताड़ना वेदों में पाप कहा गया है।

प्रश्न ४५७ **अहमदाबाद का पुराना क्या नाम है और किस नदी के किनारे बसा है?**

उत्तर कर्णवती – यह साबरमती नदी के किनारे बसा है।

प्रश्न ४५८ **दिल्ली का पुराना नाम क्या है?**

उत्तर इन्द्रप्रस्थ।

प्रश्न ४५९ **सोमनाथ के मन्दिर का पुर्ननिर्माण स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद किस केन्द्रीय मंत्री के नेतृत्व में बनी समिति ने किया।**

उत्तर कन्हैया लाल–माणिक लाल मुन्शी।

प्रश्न ४६० **महाभारत में पांडवों के बनवास के समय माता कुंती कहाँ रही?**

उत्तर हस्तिनापुर – विदुर जी के पास।

प्रश्न ४६१ **भारत में परमाणु उर्जा के लिए यूरेनियम कहाँ से प्राप्त होता है?**

उत्तर जदुगुडा (झारखण्ड)

प्रश्न ४६२ **किस वीर माता ने अपने शिशु को बलिदान कर बालक राजकुमार उदय सिंह को (जो आगे चलकर महाराणा प्रताप के पिता बने) को बचाया।**

उत्तर पन्ना धाय।

प्रश्न ४६३ **विश्व के किस देश के झण्डे पर मन्दिर की आकृति बनी हुई है?**

उत्तर कम्बोडिया।

प्रश्न ४६४ **'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'। ये पंक्तियां किसके द्वारा लिखित है?**

उत्तर राम प्रसाद बिस्मिल।

प्रश्न ४६५ **भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार कौन सा है?**

उत्तर भारत रत्न।

प्रश्न ४६६ **बनवास काल में श्रीराम भरत जी से कहाँ मिले थे?**

उत्तर चित्रकूट में।

नारी का अनादर करने से गृहस्थ के सुख-शान्ति, तप, दान, पराक्रम सब निष्फल हो जाते हैं।

प्रश्न ४६७ भारत में लोहे की खानें कहाँ हैं?

उत्तर बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश एवं कर्नाटक।

प्रश्न ४६८ सिन्धु घाटी में खुदाई में कौन से प्राचीन नगर मिले?

उत्तर मोहन जोदड़ो और हड़प्पा।

प्रश्न ४६९ जम्मू काश्मीर के चार जिले कौन से हैं, जिन पर पाकिस्तान का कब्जा है?

उत्तर मुजफ्फराबाद, मीरपुर, बाल्टिस्तान, गिलगिट।

प्रश्न ४७० जम्मू-कश्मीर के किस क्षेत्र पर चीन का कब्जा है?

उत्तर अक्साईचीन (लद्दाख का अक्षय चिन्ह)।

प्रश्न ४७१ जम्मू-कश्मीर की कितनी भूमि पर चीन का कब्जा है?

उत्तर लगभग १.२१ लाख वर्ग किलोमीटर।

प्रश्न ४७२ एक अक्षौहिणि सेना कितनी होती है?

उत्तर १०६३५० पैदल सैनिक, २१८७० रथी, २१८७० हाथी सवार और ६५६१० घुड़सवार।

प्रश्न ४७३ लौहपुरुष सरदार पटेल का जन्मदिन कौन सी तारीख को होता है?

उत्तर ३१ अक्टूबर।

प्रश्न ४७४ श्रीराम ने अकेले ही खर-दूषण सहित कितने राक्षसों का पंचवटी में संहार किया?

उत्तर चौदह हजार।

प्रश्न ४७५ भारत में सबसे अधिक जूट किस प्रदेश में है?

उत्तर बंगाल।

प्रश्न ४७६ खुदीराम क्रांतिकारी को कब फाँसी दी गई।

उत्तर ग्यारह अगस्त सन् १९०८।

प्रश्न ४७७ रावी नदी भारत के किस प्रान्त से निकलती है,

उत्तर हिमाचल प्रदेश।

जैसे वायु प्राणियों का जीवन है, वैसे ही नर-नारी एक दूसरे का जीवन हैं।

प्रश्न ४७८ क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में कौन सा स्थान है?

उत्तर सातवाँ।

प्रश्न ४७९ संस्कृत का ग्रन्थ अष्टाध्यायी किस की रचना है?

उत्तर पाणिनि।

प्रश्न ४८० सर्वोच्च न्यायालय ने अपने किस फैसले में हिन्दुत्व को भारतीयकरण का पर्यायवाची बताया?

उत्तर रमेश यशवन्त प्रभु बनाम प्रभाकर काशीनाथ कुंट के मामले में ११ दि. १९९५ को दिये गये निर्णय में। (निर्णय को विस्तार से पढ़ने के लिए ऑल इण्डिया रिपोर्टर १९९६ सुप्रीम कोर्ट पृष्ठ ११९३ से आगे।)

प्रश्न ४८१ सूर्य से पृथ्वी पर प्रकाश के पहुँचने की गणना सर्वप्रथम किसने की?

उत्तर भास्कराचार्य ने।

प्रश्न ४८२ विश्व का सबसे पुराना औषधविज्ञान कौन सा है?

उत्तर आयुर्वेद (वेदों के आधार पर)।

प्रश्न ४८३ महान् क्रांतिकारी जिसकी बी.ए. की डिग्री जब्त कर ली और बैरिस्ट्री की डिग्री पास करने के बाद भी नहीं दी गई, वह कौन थे?

उत्तर वीर सावरकर।

प्रश्न ४८४ मुजफ्फरनगर बमकांड के नायक जो १९०८ में किशोरावस्था में फाँसी पर चढ़े। उनका क्या नाम था?

उत्तर खुदीराम बोस।

❖❖❖❖❖❖❖❖

महापुरुषों की दृष्टि में महर्षि दयानन्द सरस्वती

❖ मुझे एक आग दिखाई पड़ती है जो सर्वत्र फैली हुई है अर्थात् असीम प्रेम की आग जो द्वेष को जलाने वाली है जो प्रत्येक वस्तु को तपाकर शुद्ध कर रही हैं हिन्दु-मुसलमान इस आग को बुझाने के लिये दौड़े। यह आग इतने वेग से बढ़ी कि सारा संसार ही इसके प्रकाश से प्रकाशित हो गया।

- एण्ड्रयूज जैकसन

❖ स्वामी दयानन्द अच्छे विद्वान् आदमी थे, प्रत्येक मत के अनुयायियों के लिये सम्मान के पात्र थे।

- सर सय्यद अहमद खाँ

❖ ऋषि दयानन्द की कृति "सत्यार्थ प्रकाश" की विद्यमानता में कोई भी विधर्मी अपने मत की शेखी नहीं मार सकता। हिन्दु जाति की ठण्डी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला वह ग्रन्थ अमर रहे, यही मेरी कामना है।

-वीर सावरकर

❖ महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव यदि उस समय न होता तो यह भारत देश आज इस्लामिस्तान होता या ईसाइयस्तान होता।

- चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, प्रथम गवर्नर जनरल, भारत सरकार

❖ **दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्र साथी ने कहा था :-** जब मैं भारत की आजादी का इतिहास पढ़ता हूँ तो एकदम स्पष्ट हो जाता है कि उस इतिहास में से यदि आर्य समाज को निकाल दिया जाये तो ऐसा लगता है जैसे आजादी के आन्दोलन की स्याही निकाल दी हो।

❖❖❖❖❖❖❖

पाहन केरी पूतरी, करि पूजे संसार।
यहि भरोसे मत रहो, बूड़ो काली धार।।

पत्थर की मूर्ति बनाकर संसार के लोग पूजते हैं। परन्तु इसके भरोसे मत रहो, अन्यथा कल्पना के अन्धकार - कुएँ में, अपने को डूबे, डूबाए समझो।

पाहन ही देहरा, पाहन ही का देव।
पूजन हारा आँधरा, क्यों करि माने सेव।।

पत्थर का मन्दिर और पत्थर का देवता और पूजन वाला अविवेकी। फिर जड़ देवता सेवा को क्यों स्वीकार करें।

- सन्त कबीर दास

सोवियत संघ में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास संगोष्ठी में भारतीय इतिहासकारों, पुरातत्त्व वेत्ताओं तथा भाषाविदों ने यह सिद्ध किया कि **आर्यों के बाहर से आने का कहीं से भी कोई प्रमाण नहीं मिलता।** इस सेमिनार में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली आर्यावर्त्त के निदेशक डॉ. एन. आर. बैनर्जी भी सम्मिलित थे। इस सेमीनार में सोवियत संघ पश्चित जर्मनी, पाकिस्तान, ईरान तथा भारत आदि देशों के अस्सी प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

- लेखक सुदामा शास्त्री
एम.ए., बी.एड., एस.बी.बी.ए. इण्टर कॉलेज, सहारनपुर

"कीथ" ने अपनी पुस्तक कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया में लिखा है। "सब विद्या और भलाइयों का भण्डार आर्यावर्त्त देश है। सब ज्ञान विज्ञान इस आर्यावर्त्त देश से ही सारी दुनिया में फैले हैं।"

- सुदामा शास्त्री, एम.ए., बी.एड.

वैदिक युग में प्रतिमा का कोई अस्तित्व नहीं था। उस समय लोगों की यह धारणा थी कि ईश्वर सब जगह विद्यमान है किन्तु बुध्द के प्रचार के कारण हम जगत सृष्टा एवं अपने सखा ईश्वर को खो बैठे। उसके प्रतिक्रिया स्वरूप मूर्ति पूजन की उत्पत्ति हुई। लोगों ने (शिष्यों ने) बुध्द की मूर्तियाँ घड़कर पूजा करना आरम्भ किया।

- स्वामी विवेकानन्द (देववाणी पृष्ठ २७५)

वेद के सम्बन्ध में विद्वानों के विचार

ओंकार वेद निरमए अर्थात वेदों का निर्माण ईश्वर ने किया।

- नानक देव

वेद धर्म सत्य धर्म सब सच्ची मर्याद।
वह जान जाने वेद को जिनके मते अगाध।।
वेद वाक्य उत्तम धर्म निर्मल जिसका ज्ञान।
यह सच्चा छोड़कर मैं क्यों पढूँ कुरान।।
कुरान बहिश्त न चाहिये मुझको हूर हजूर।
वेद धर्म त्यागूँ नहीं जो गल चले कटार।।

-गुरु रविदास

साम वेद ऋग् अथर्वण।
ब्रह्मो मुख माइयां है त्रैगुण।।

-गुरु गोविन्द सिंह
(मारू सोल्हे महला 1-शब्द-17)

जैसे सूर्य की किरणें निकलकर धरती को प्रकाश मानकर देती है, उसी प्रकार वेद ईश्वर से प्रकट होकर मनुष्य को सत्य मार्ग की ओर प्रवृत्त करते हैं।

- मुहम्मद फारुक् खाँ
(वेद और कुरान में)

वैदिक धर्म का आर्विभाव तथा वेदों की विद्यमानता इतिहास पूर्ण (आदि सृष्टि) की घटनाऐं हैं।

-मौ. मंसूर अहमद आग़ा
(वैदिक धर्म और इस्लाम की भूमिका में)

संकलन कर्त्ता : कुँवर पाल सिंह आर्य

लेखक का संक्षिप्त परिचय

मेरे मित्र आदित्य प्रकाश गुप्त के पूज्य पितामह श्री गणेशी लाल जी गुप्त ने 3 सितम्बर सन् 1897 को आर्य समाज खेड़ाअफ़गान की स्थापना कराई। भवन निर्माण के लिए लाला गणेशीलाल जी ने अपनी पुश्तैनी जमीन को 21-4-1909 को आर्य समाज को उपहार में दे दी।

तीन पुश्तों से आदित्य प्रकाश गुप्त का परिवार आर्य समाज के प्रति समर्पित है। इनका जन्म 9-4-1944 को हुआ। सन् 1947 में पूज्य माताजी का स्वर्गवास हो गया। बचपन से ही अपने पिता श्री धर्मदेव गुप्त और पितामह लाला गणेशीलाल जी से मिले संस्कारों के कारण स्कूल शिक्षा के समय से ही वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय की प्रवृत्ति रही जो आज तक वनी हुई है। आदित्य प्रकाश का विवाह 5 जौलाई 1970 को शशी प्रभा गुप्ता सुपुत्री श्री परमानन्द जी आर्य (गाजियाबाद) के साथ सम्पन्न हुआ। आस-पास के ग्रामों में वेद प्रचार की रुचि सदा आदित्य प्रकाश की रही। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, सहारनपुर के मन्त्री बनने के बाद जनपद में सबके सहयोग से दर्जनों आर्य समाज स्थापित कराई। आर्य समाज के प्रत्येक कार्य को करने में आदित्य प्रकाश जी प्राथमिकता देते हैं। निष्क्रिय समाजों को जगाने का प्रयास भी किया गया और सैंकड़ों गांवों में सभी के सहयोग से दीवारों पर शुभ वचन स्टेंसिल से लिखवाये गये और बिछड़े भाईयों को सबके सहयोग से वापिस लाने का प्रयास किया गया। वैदिक साहित्य का प्रकाशन करने में आदित्य प्रकाश की रुचि है। पाँच वर्षों से लगातार वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन कर विद्यार्थियों को वैदिक धर्म का ज्ञान देने का प्रयास लगातार किया जा रहा है। वैदिक धर्म के प्रचार को नया रूप देने के लिए वैदिक संस्कृति उत्थान शिक्षक शिविर विभिन्न स्थानों पर कॉलेजों में लगाये जा रहे हैं।

आदित्य प्रकाश मन, वचन, कर्म में सदैव एकता रखने का प्रयास करते हैं। इनकी ईश्वर और वेद के प्रति अगाध श्रद्धा है। इनका परिवार जनपद में आदर्श आर्य परिवार है। इनका बड़ा सुपुत्र वेदभूषण गुप्त इनके साथ डावर, प्लस, कोलगेट आदि एजेंसियों के व्यापार में कार्यरत है। घर पर दैनिक हवन होता है। छोटा सुपुत्र चन्द्रभूषण आर्य श्रीराम पिस्टन कम्पनी, गाजियाबाद में इंजीनियर पद पर कार्यरत है। सुपुत्री आभा रश्मि चाँदपुर में है। इनके पिताजी श्री धर्मदेव गुप्त जी का स्वर्गवास 1990 में हो गया था।

दयानन्द जीवन दर्पण, वैदिक धर्मप्रश्नोत्तरी, वैदिक धर्म में स्त्री का महत्त्व आदि पुस्तकें आदित्य प्रकाश द्वारा लिखी गई हैं। वर्ष 2010 में रामपुर में दिव्य ज्ञान-दिव्य ध्यान संस्था द्वारा स्मृति चिन्ह भेंटकर व शाल उढाकर सम्मानित किया गया एवं रविन्द्रनाथ टैगोर विद्यापीठ इण्टर कॉलेज, नकुड़ द्वारा आर्य समाज के माध्यम से सामाजिक जागरुकता के अनुपम कार्यों के लिए स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

– कुँवर पाल सिंह आर्य

।। ओ३म् ।।

आर्य समाज, खेड़ा अफ़गान, जनपद सहारनपुर

वर्ष 2011 में 250/- रु. से अधिक दान देने वाले दान दाताओं की सूची

रु.10250/-	सर्वश्री शशि प्रभा गुप्ता धर्मपत्नि आदित्य प्रकाश गुप्त।
रु. 5000/-	संजय कुमार-विनय कुमार जी अम्बेहटा, आदित्य प्रकाश गुप्त, संजय कुमार आर्य टौली।
रु. 3000/-	मोहित कुमार, डॉ. सुबोध कुमार जी।
रु. 2600/-	अमित कुमार आर्य।
रु. 2400/-	वेद भूषण गुप्त, नेम चन्द गर्ग।
रु. 2100/-	पदम प्रकाश टैन्ट वाले, महेन्द्र पाल प्रधान।
रु. 1100/-	राजेन्द्र आर्य बीराखेड़ी, मांगेराम सचिव, साधन सहकारी समिति, इन्द्रपाल गुप्ता, ललित गुप्त, राजेश आर्य मच्छरहेड़ी, आर्यसमाज खालापार सहारनपुर।
रु. 1000/-	इं. चन्द्रपाल गुप्त-डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, रविन्द्र कुमार पुत्र श्री सत्यदेव गुप्ता नई दिल्ली, मुनीन्द्र कुमार आर्य गाजियाबाद।
रु. 500/-	विजय पाल-अजय कुमार एडवोकेट जलालपुरा, हरीदत्त शास्त्री, देवदत्त शर्मा, नकुड़, सत्यपाल गुप्ता यमुनानगर, विनोद कुमार जी (नमक वाले) सहारनपुर, बुद्ध सिंह आर्य गंगोह।
	चौ. रणवीर सिंह, कृषि प्रसार भवन खेड़ा अफ़गान, पूनम धर्मपत्नि श्रवण कुमार (टैण्ट वाले), दिपेश कुमार गुप्ता, अग्रवाल मैडिकल स्टोर, कुलवन्त सिंह, अंकित कुमार पुत्र ज्वेन्द्र कश्यप, राजेश कुमार आर्य, प्रेम प्रकाश गर्ग, सन्तोष देवी धर्मपत्नि जयभगवान सहारनपुर।
रु. 350/-	अजय शर्मा, श्रीपाल सैनी, निरन्जन सिंह पिलखनी।
रु. 250/-	सोनू-मोनू सैनी, नकली राम सैनी, रकम सिंह (जिला पंचायत सदस्य), नकली राम, धर्मपाल पुत्र लाल सिंह सैनी, ईश्वर कुमार पाल, संजय कुमार तायल, श्रवण कुमार पुत्र श्री फूल सिंह, मनीष कुमार पुत्र नरेश कुमार, डॉ. नरेश कुमार, देशराज (सफाई कर्मचारी), रमेश चन्द तायल, हुकम सिंह मिस्त्री, कु. गीता पुत्री छोटा कश्यप, स्त्री आर्य समाज पटेल नगर सहारनपुर, पूनम गुप्ता, आर्य समाज गंगोह, डॉ. नरेश कुमार (नकुड़ वाले), डॉ. अशोक कुमार फन्दपुरी, अमरीश कुमार, प्रकाश चन्द कश्यप।

प्रतिभा प्रिंटिंग प्रेस, खालापार, सहारनपुर मो. : 9897902303